@Qpatrika
@qaumipatrika hindi
instagram.com/qaumipatrika

कौमी पत्रिका
राष्ट्रीय दैनिक अखबार

दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-चण्डीगढ़-उत्तर प्रदेश से प्रसारित
बुधवार, 11 सितंबर 2024

VISIT:
www.qaumipatrika.in
Email: qpatrika@gmail.com

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 सम्पादक - गुरचरन सिंह बब्बर वर्ष 17 अंक 306 qaumipatrikahindi 011-41509689, 23315814, 9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (हवाई शुल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

लाल चौक जाने पर अंदर से लग रहा था डरः सुशील शिंदे

नई दिल्ली, 10 सितंबर। कांग्रेस नेता और पूर्व गृह मंत्री सुशील कुमार शिंदे का अपने संस्मरण के लोकर्पण के मौके पर दिया गया बयान कांग्रेस के फजीहत बन चुका है। दरअसल उन्होंने कहा है कि गृह मंत्री बनने से पहले मैं शिक्षाविद् विजय धर मिलने गया था। मैं उनसे सलाह मांगता था। उन्होंने मुझे सलाह दी कि

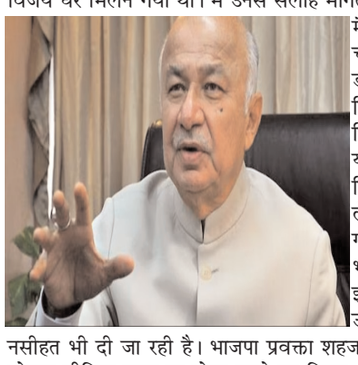

मैं इधर-उधर न घूमू, बल्कि लाल चौक जाऊं, लोगों से मिलूं और डल झील घूमू। उन्होंने आगे कहा कि उस सलाह से मुझे प्रसिद्धि मिली और लोगों को लगा कि यहां एक गृह मंत्री है जो बिना किसी डर के वहां जाता है, लेकिन मैं किसे बताऊं कि मैं डर गया था? उनके इस बयान पर भाजपा ने पलटवार भी किया है। इसके साथ कांग्रेस पार्टी को उनके बयानों पर ध्यान देने की नसीहत भी दी जा रही है। भाजपा प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने उनके बयान को सोशल मीडिया एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा- यूपीए काल के गृह मंत्री सुशील शिंदे ने माना कि उन्हें जम्मू-कश्मीर जाने में डर लगता था। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं कश्मीर जाऊं और डल झील पर फोटो खिंचवाऊं, ताकि मैं और यूपीए की भारत के गृह मंत्री के तौर पर सार्वजनिक छवि बनी रहे। लेकिन मैं डर गया था। आज राहुल गांधी आराम से कश्मीर में भारत जोड़ो यात्रा और बर्फ से लड़ते हुए देखे गए! लेकिन एनसी और कांग्रेस जम्मू-कश्मीर को आतंक के दिनों में वापस ले जाना चाहते हैं!

आंदोलनकारी जूनियर डॉक्टर्स ने नहीं माना सुप्रीम कोर्ट का आदेश

सिम्मी कौर बब्बर

कोलकाता, 10 सितंबर। चिकित्सक दुष्कर्म और हत्या मामले में आंदोलनकारी जूनियर डॉक्टर्स ने शाम 5 बजे तक ड्यूटी पर लौटने के सुप्रीम कोर्ट के आदेश को नहीं माना है। उनका कहना है कि मांगें पूरी होने तक डॉक्टर्स काम पर नहीं लौटेंगे। इससे पहले सोमवार को शीर्ष अदालत ने प्रदर्शनकारी रेजिडेंट डॉक्टर्स को मंगलवार शाम 5 बजे तक काम पर लौटने का निर्देश दिया था। कोर्ट ने कहा था कि काम पर लौटने पर उनके खिलाफ कोई प्रतिकूल कार्रवाई नहीं की जाएगी। दरअसल, पश्चिम बंगाल सरकार ने कोर्ट में यह आश्वासन दिया था कि काम पर लौटने पर प्रदर्शनकारी डॉक्टरों के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई या तबादले नहीं किए जाएंगे। आंदोलनकारी डॉक्टर्स में से एक ने कहा कि हमारी मांगें पूरी नहीं होने पर हम काम बंद करना जारी रखेंगे। हमने राज्य सरकार से कोलकाता पुलिस आयुक्त, स्वास्थ्य सचिव, स्वास्थ्य सेवाओं के निदेशक और चिकित्सा शिक्षा के निदेशक को शाम

5 बजे तक हटाने के लिए कहा था। हम चर्चा के लिए तैयार हैं। जूनियर डॉक्टरों ने 9 अगस्त को आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के सेमिनार कक्ष में महिला स्नातकोत्तर प्रशिक्षु का शव मिलने के कुछ घंटों बाद ही अपना काम बंद शुरू कर दिया था। इस बीच आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल के पूर्व प्राचार्य संदीप घोष को मंगलवार को वित्तीय अनियमितताओं के मामले में एक विशेष सीबीआई अदालत ने 23 सितंबर तक न्यायिक हिरासत में भेज दिया। कोर्ट ने उनके सुरक्षाकर्मी अफसर अली और दो कथित सहयोगियों, ठेकेदार वेंडर बिप्लब सिन्हा और सुमन हाजरा को भी 23 सितंबर तक न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। सीबीआई ने अदालत से कहा कि अगर जरूरत पड़ी तो वह फिर से उनकी हिरासत की मांग करेगी। आरजी कर एमसीएच में डॉक्टर के साथ दुष्कर्म और हत्या के विरोध के बीच संदीप घोष को 2 सितंबर को वित्तीय अनियमितताओं के आरोप में सीबीआई ने गिरफ्तार किया था। 3 सितंबर को अदालत ने उन्हें आठ दिनों की सीबीआई हिरासत में भेज दिया था।

इंजीनियर राशिद को कोर्ट में मिली बड़ी राहत

नई दिल्ली, 10 सितंबर। इंजीनियर राशिद को दिल्ली की पटियाला हाउस कोर्ट से मंगलवार को बड़ी राहत मिली है। उन्हें दो अक्तूबर तक अंतरिम जमानत मिल गई है। कोर्ट ने उन्हें जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव में प्रचार करने के लिए यह राहत दी है। बता दें कि अब्दुल रशीद उर्फ इंजीनियर रशीद वर्तमान में आतंकी फंडिंग के मामले में यूएपीए के तहत दिल्ली की तिहाड़ जेल में बंद हैं। वह अवामी इत्तेहाद पार्टी के अध्यक्ष हैं। वह दो बार विधायक रह चुके हैं। लोकसभा चुनाव में राशिद ने बारामुला लोकसभा सीट से पूर्व मुख्यमंत्री और नेशनल कॉन्फ्रेंस (एनसी) के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला को मात दी थी। राशिद ने अपना राजनीतिक करियर वर्ष 2008 में शुरू किया था। एक निर्माण इंजीनियर के रूप में अपनी नौकरी से इस्तीफा देने के बाद उन्होंने सियासत शुरू की। पीडीपी अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने एक दिन पहले ही सांसद शेख अब्दुल रशीद (इंजी रशीद) की अवामी इत्तेहाद पार्टी (एआईपी) पर भाजपा की प्रतिनिधि होने का आरोप लगाया। उनकी यह टिप्पणी शोपियां से पीडीपी उम्मीदवार यावर शफी बांडे के बालपोरा इलाके में एआईपी के कार्यकर्ताओं के कथित हमले में घायल होने के एक दिन बाद आई। पीडीपी प्रमुख ने सवाल किया कि जब एआईपी के प्रमुख रशीद सलाखों के पीछे हैं, तो वे संसाधनों और उम्मीदवारों का प्रबंध कैसे कर रहे हैं।

नीतीश कुमार के भाजपा नहीं छोड़ने पर लालू की दो टूक

कौमी संवाददाता

पटना, 10 सितंबर। राष्ट्रीय जनता दल के अध्यक्ष लालू प्रस्दाद यादव आज मुंबई के लिए रवाना हुए, लेकिन इससे पहले उन्होंने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के लिए दो टूक कहा। उन्होंने नीतीश कुमार के भाजपा नहीं छोड़ने पर कहा- कोई बात नहीं। वहीं दूसरी ओर लालू प्रसाद यादव ने कहा कि आज से वह आभार यात्रा के प्रथम चरण में कार्यकर्ताओं से जन संवाद करने निकले हैं। वह पूरा बिहार भ्रमण करेंगे। दरअसल केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जेपी नड्डा शुक्रवार को दो दिवसीय दौरे पर बिहार आये थे। इस मौके पर दोनों नेताओं ने कई विकास की योजनाओं का उद्घाटन भी किया। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने जेपी नड्डा के साथ मंच साझा करते हुए कहा कि दो बार गलती हो गई है, अब ऐसा नहीं करेंगे। अब इधर-उधर नहीं जाएंगे। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के इस बयान के बाद कांग्रेस ने भी प्रतिक्रिया दी थी। इतना ही नहीं मुख्यमंत्री नीतीश कुमार कई बार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ भी मंच से यह बात कहा है कि अब वह इधर-उधर नहीं जाएंगे। यह बात उन्होंने तब कही जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी चुनाव के समय चुनावी सभा को संबोधित करने बिहार आये थे। मुख्यमंत्री नीतीश के इस बयान पर कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अखिलेश सिंह ने पलटवार करते हुए कहा था कि इधर नहीं जाएंगे उधर नहीं जाएंगे यही बोल बोल के तो आते-जाते रहते हैं। उन्होंने कहा कि उन्हें बिहार के लोगों का भला करना चाहिए, लॉ एंड ऑर्डर ठीक करना चाहिए, बिहार के युवाओं की बेरोजगारी खत्म करनी चाहिए, बिहार के शिक्षा व्यवस्था को सुधारना चाहिए, लोगों की आमदनी को बढ़ाना चाहिए,. लेकिन वह यह सब काम नहीं करेंगे। इन सभी मुद्दों पर बात होनी चाहिए, लेकिन वह सिर्फ इधर-उधर की बात ही करते रहते हैं।

कांग्रेस ने सेबी अध्यक्ष पर नए आरोप जड़े

नई दिल्ली, 10 सितंबर। कांग्रेस ने भारतीय प्रतिभूति व विनिमय बोर्ड (सेबी) की प्रमुख माधबी पुरी बुच पर नए आरोप लगाए हैं। एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में बोलते हुए कांग्रेस प्रवक्ता पवन पवन खेड़ा ने आरोप लगाया है कि सेबी अध्यक्ष बुच ने महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड, डॉ. रेड्डीज, पिडिलाइट, आईसीआईसीआई, सेम्बकॉर्प और विसू लीजिंग एंड फाइनेंस समेत कई कंपनियों से पैसा कमाया है। पार्टी ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में दावा किया कि बुच की सलाहकार कंपनी, अगोरा प्राइवेट लिमिटेड ने उनके पदभार संभालने के बाद परिचालन बंद कर दिया था। इसके बावजूद कंपनी ने काम करना जारी रखा और राजस्व अर्जित किया। इसके अलावा, कांग्रेस ने बताया किया कि अगोरा प्राइवेट लिमिटेड ने 2016 से 2024 के बीच 2.95 करोड़ रुपये कमाए। इसके अलावा, महिंद्रा एंड महिंद्रा, डॉ. रेड्डीज, पिडिलाइट, आईसीआईसीआई, सेम्बकॉर्प और वीआई अगोरा प्राइवेट लिमिटेड के कुछ सक्रिय ग्राहक हैं। कांग्रेस पार्टी ने कहा, अजीब बात यह है कि अगोरा एडवाइजरी प्राइवेट लिमिटेड को मिले कुल 2.95 करोड़ रुपये में से 2.59 करोड़ रुपये अकेले एक संस्था- महिंद्रा एंड महिंद्रा समूह से आए हैं। यह अगोरा एडवाइजरी को मिले कुल पैसे का 88 प्रतिशत है। खेड़ा ने आरोप लगाया कि माधबी पुरी और उनके पति के पास अगोरा नामक एक कंपनी में 99 प्रतिशत हैं, जिसके बारे में कांग्रेस का मानना है कि यह उन कंपनियों से जुड़ी है जो वर्तमान में सेबी की जांच के दायरे में हैं। अगस्त में हिंडनबर्ग की एक रिपोर्ट में कहा गया था कि बुच ने अदाणी की विदेशी शेल कंपनी में निवेश किया था, जिसके बाद से विपक्षी पार्टी कांग्रेस सेबी प्रमुख पर लगातार हमलावर रही है।

मैं कभी भी गिरफ्तार हो सकता हूंः अनिल देशमुख

सौरभ शर्मा

मुंबई, 10 सितंबर। महाराष्ट्र के पूर्व गृह मंत्री और एनसीपी-एसपी नेता अनिल देशमुख ने मंगलवार को दावा किया, देवेंद्र फडणवीस की वजह से सीबीआई ने जलगांव के चार साल पुराने मामले को उठाकर मेरे खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। मुझ पर आरोप लगाया गया है कि मैंने राज्य के गृह मंत्री के रूप में अपने प्रभाव का इस्तेमाल करके पुलिस पर दबाव बनाकर जलगांव में भाजपा नेता गिरीश महाजन के मामले में कार्रवाई करने की कोशिश की, यह मेरे खिलाफ लगाया गया आरोप है। मुझे पता है कि देवेंद्र फडणवीस की वजह से मेरे घर पर कभी भी छापा पड़ सकता है, मुझे कभी भी गिरफ्तार किया जा सकता है, मैं इसके लिए तैयार हूं। वहीं सोशल मीडिया एक्स पर एक पोस्ट में अनिल देशमुख ने यह भी दावा किया कि चार साल पुराने एक मामले में भाजपा नेता के कहने पर केंद्रीय जांच ब्यूरो ने उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। उन्होंने कहा, मेरी जानकारी के अनुसार, देवेंद्र फडणवीस मेरे खिलाफ छापेमारी करवाने और मुझे गिरफ्तार करवाने की कोशिश कर रहे हैं। मैं देवेंद्र फडणवीस से कहना चाहता हूं, मैं अपनी गिरफ्तारी का इंतजार कर रहा हूं। उन्होंने दिल्ली और ईडी-सीबीआई की मदद से महाराष्ट्र की राजनीति को बेहद निचले स्तर पर पहुंचा दिया है। अधिकारियों ने पिछले हफ्ते बताया कि सीबीआई

ने अनिल देशमुख, तत्कालीन विशेष लोक अभियोजक प्रवीण पंडित चव्हाण और दो पुलिस अधिकारियों के खिलाफ 2020 में राज्य के शीर्ष भाजपा नेताओं को झूठे मामले में फंसाने की कथित साजिश के लिए स्नढ्ढक्र दर्ज की है। उन्होंने बताया कि सीबीआई ने दो साल की प्रारंभिक जांच के बाद मामला दर्ज किया, जिसकी शुरुआत 2020 में विपक्ष में रहे देंवेंद्र फडणवीस की तरफ से तत्कालीन महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष को सौंपी गई एक पेन ड्राइव से हुई थी। इस पेन ड्राइव में कथित वीडियो थे, जिसमें दिखाया गया था कि प्रवीण पंडित चव्हाण ने जलगांव जिला मराठा विद्या प्रसारक सहकारी समाज के ट्रस्टी और वकील विजय पाटिल और तत्कालीन गृह मंत्री अनिल देशमुख के साथ भाजपा नेता महाजन को फंसाने की कथित तौर पर साजिश रची थी। उपमुख्यमंत्री फडणवीस ने पेन ड्राइव में 100 घंटे से अधिक की वीडियो रिकॉर्डिंग पेश की, जिससे पता चलता है कि यह मामला भाजपा नेताओं को निशाना बनाने की साजिश का हिस्सा था। मामले को पहले सीआईडी और बाद में जांच के लिए सीबीआई को सौंप दिया गया था। वहीं अनिल देशमुख ने इस मामले में अपने ऊपर लगे आरोपों को निराधार बताया है। बता दें कि पूर्व राज्य गृह मंत्री पहले से ही कथित भ्रष्टाचार के लिए सीबीआई मामले और प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की तरफ से दर्ज एक अन्य मामले का सामना कर रहे हैं।

राहुल गांधी पर केस दर्ज कराएगी भाजपाः केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी

नई दिल्ली, 10 सितंबर। भाजपा ने राहुल गांधी के सिखों पर दिए गए बयान पर गहरी नाराजगी जताई है। पार्टी ने कहा है कि राहुल गांधी अपनी विदेश यात्रा के दौरान भारत को बदनाम करने का प्रयास कर रहे हैं। पार्टी ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने सिखों के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य किये हैं और सिख समुदाय देश में पूरे मान-सम्मान के साथ रह रहा है और देश को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। करतारपुर कॉरिडोर खोलने के साथ ही केंद्र सरकार ने सिखों के सम्मान को बढ़ाने के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। पार्टी के अनुसार, ऐसे ही राहुल गांधी को विदेश में कोई गलतबयानी करने से बाज आना चाहिए। पार्टी नेता सरदार आरपी सिंह ने कहा है कि वे राहुल गांधी के बयान के खिलाफ कोर्ट जाएंगे। केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने मंगलवार को एक प्रेस कांफ्रेंस में कहा कि 1984 में एक सोची-समझी साजिश के अंतर्गत सिखों का नरसंहार किया गया था। उन्होंने कहा कि इसमें कांग्रेस के कई बड़े नेता शामिल थे और इन हमलों में 3000 से अधिक सिखों की हत्या की गई थी। इस पर अपनी गलती मानने की बजाय कांग्रेस नेता राहुल गांधी दूसरों पर सवाल खड़े कर रहे हैं। पुरी ने कहा कि नेता विपक्ष होने के कारण वे एक संवैधानिक पद पर हैं। इसके बाद भी राहुल गांधी विदेशों में भारत को बदनाम करने का प्रयास कर रहे हैं। उन्हें ऐसे कार्यों से बचना चाहिए। भाजपा के सिख नेता सरदार आरपी सिंह ने कहा कि गुरुद्वारों में लंगर पर लगने वाले टैक्स को माफ करने सहित सिखों को सम्मान देने का हर कार्य केंद्र सरकार ने किया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जब भी गुरुद्वारे जाते हैं, पूरी श्रद्धा के साथ पगड़ी धारण करते हैं और सिर झुकाते हैं

विभाजन का बीज बो चुकी भाजपाः डिंपल यादव

तेजिन्दर कौर बब्बर

मैनपुरी, 10 सितंबर। उत्तर प्रदेश के मैनपुरी में मंगलवार को सांसद डिंपल यादव पहुंची। यहां उन्होंने करहल क्षेत्र के नगला टांक कंझरा गांव में एक कार्यक्रम में हिस्सा लिया। इस दौरान उनके निशाने पर भाजपा सरकार रही। उन्होंने कहा कि भाजपा विभाजन का जो बीज बो चुकी है। अब उसे अंकुरित करना चाहती है। इसके लिए घृणा और द्वेष फैला रही है। लेकिन, अब देश की जनता जागरूक है। वह ऐसा नहीं होने देगी। ये बात उन्होंने रेल दुर्घटनाओं की साजिश को लेकर कही। सांसद गांव में शहीद रामाधार यादव की मूर्ति का अनावरण करने पहुंचीं थीं। उन्होंने भाजपा द्वारा विदेशों में जाकर कांग्रेस नेता राहुल गांधी द्वारा देश का अपमान किए जाने के सवाल पर कहा कि वे सचल बोल रहे हैं। युवा जानते हैं कि क्या देश में बेरोजगारी नहीं है। उन्होंने कहा कि भाजपा बुलडोजर और एनकाउंटर के माध्यम से नकारात्मक राजनीति की तरफ ले जाना चाहती है। उन्होंने समाजवादी पार्टी सरकार मे हुए विकास कार्यों पर बोलते हुए कहा कि राष्ट्रीय अध्यक्ष

अखिलेश यादव ने समाजवादी पार्टी की सरकार में आगरा लखनऊ एक्सप्रेस बनवाया। इस पर फौज के विमान भी उतरे हैं। पूरे देश में ऐसा निर्माण कार्य ओर कहीं नहीं हुआ है। उन्होंने कहा कि पहले गुजरात मॉडल की बात की जाती थी, गुजरात मॉडल कोई मॉडल नहीं था वाकई में अगर कोई मॉडल था तो वो उत्तर प्रदेश मॉडल था। चुनाव के सवाल पर सांसद ने कहा कि भाजपा सरकार एक राष्ट्र एक चुनाव की बात कहती है तो सभी प्रदेशों के विधानसभा चुनाव एक साथ क्यों नहीं कराए जा रहे हैं। करहल उप चुनाव के लिए सीएम योगी आदित्यनाथ और डिप्टी सीएम के दौरे को लेकर डिंपल ने कहा कि लोकसभा चुनाव में भी सब आए थे, लेकिन परिणाम सभी ने देखा। करहल उप चुनाव में भी उन्होंने सपा की जीत का दम भरा। इस दौरान सैफई ब्लॉक प्रमुख मृदुला यादव यादव, अनिल यादव पूर्व विधायक, विधायक बृजेश कठेरिया विधायक, चेयरमैन अब्दुल नईम, नेम सिंह यादव, रामनारायण बाथम, ब्रजकुमार, रामबरन यादव आदि मौजूद रहे।

राजभवन कूच कर रहे छात्रों और सुरक्षा बलों की भिड़ंत

इंफाल, 10 सितंबर। राजभवन की ओर मार्च करने की कोशिश कर रहे छात्रों, महिला प्रदर्शनकारियों और सुरक्षा बलों के बीच मंगलवा को झड़प हो गई। हालात पर काबू पाने के लिए आंसू गैस के गोले दागने पड़े। प्रदर्शनकारी मणिपुर सरकार के डीजीपी और सुरक्षा सलाहकार को हटाने की मांग कर रहे हैं। इससे पहले सोमवार से ख्वाइरामबंद महिला बाजार में डेरा डाले सैकड़ों छात्रों ने बीटी रोड के साथ राजभवन की ओर मार्च करने की कोशिश की, लेकिन कांग्रेस भवन के पास सुरक्षा बलों ने उन्हें रोक दिया। मणिपुर विश्वविद्यालय के छात्रों ने भी विरोध रैली निकाली और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह का पुतला फूंका। इस बीच मौजूदा हालात के मद्देनजर इंफाल पूर्व और पश्चिम जिलों में कर्फ्यू लगा दिया है। थौबल में बीएनएसएस की धारा 163 (2) के तहत निषेधाज्ञा लागू कर दी गई है। पूरे राज्य में अगले पांच दिन के लिए इंटरनेट बंद कर दिया गया है। अधिसूचना के मुताबिक, मणिपुर राज्य के क्षेत्रीय अधिकार क्षेत्र में 10 सितंबर को दोपहर तीन बजे से 15 सितंबर को दोपहर 3 बजे तक पांच दिनों के लिए लीज लाइन, वीसैट, ब्रॉडबैंड और वीपीएन सेवाओं सहित इंटरनेट और मोबाइल डेटा सेवाओं को अस्थायी रूप से निलंबित/रोकने का आदेश दिया गया है। राज्य सरकार के गृह विभाग की ओर से जारी आदेश में कहा गया है, मणिपुर राज्य में मौजूदा कानून-व्यवस्था के हालात को देखते हुए यह आशंका है कि कुछ असामाजिक तत्व लोगों की भावनाओं को भड़काने वाली तस्वीरें, अभद्र भाषा और घृणास्पद वीडियो संदेश प्रसारित करने के लिए सोशल मीडिया का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल कर सकते हैं। इसका मणिपुर में कानून-व्यवस्था की स्थिति पर गंभीर असर पड़ सकता है।

कांग्रेस से अलग हो मुफ्ती मोहम्मद सईद ने बनाई पीडीपी

नरेश मल्होत्रा

श्रीनगर, 10 सितंबर। जम्मू कश्मीर करीब 10 साल बाद जम्हूरियत का जश्न मनाने के लिए तैयार है। 90 सीटों वाली विधानसभा के लिए तीन चरण में मतदान कराए जाएंगे। यहां फिलहाल चुनावी प्रक्रिया चल रही है। चुनाव से पहले तमाम बड़े दलों ने सियासी बिसात बिछानी शुरू कर दी है। इस चुनाव में पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती की जम्मू कश्मीर पीपल्स डेमोक्रेटिक पार्टी भी उतरी है। जहां कांग्रेस ने फारुख अब्दुल्ला की नेशनल कॉन्फ्रेंस के साथ गठबंधन किया है वहीं पीडीपी अकेले ही चुनाव लड़ रही है। पिछले विधानसभा चुनाव के बाद पीडीपी ने तीन साल तक भाजपा के साथ गठबंधन की सरकार चलाई थी। आइये जानते हैं पीडीपी की पूरी कहानी... पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी जम्मू कश्मीर में एक क्षेत्रीय राजनीतिक पार्टी है। इसकी स्थापना जुलाई 1999 में पूर्व केंद्रीय गृह मंत्री मुफ्ती मोहम्मद सईद ने की थी। 1998 के लोकसभा चुनाव में सईद ने अनंतनाग लोकसभा सीट जीती, लेकिन जल्द ही उन्होंने अपने पद और कांग्रेस से इस्तीफा देकर राज्य में एक क्षेत्रीय दल पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी की शुरुआत की। मुफ्ती मोहम्मद सईद पार्टी के पहले अध्यक्ष चुने गए। मुफ्ती मोहम्मद सईद पहले कांग्रेस पार्टी के सदस्य रह चुके हैं। 1986 में प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने उन्हें केंद्रीय पर्यटन मंत्री नियुक्त किया था। 1987 में मेरठ दंगों के बाद कांग्रेस के रुख के विरोध में उन्होंने केंद्रीय मंत्री और बाद में कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया था। उन्होंने वीपी सिंह के साथ मिलकर जन मोर्चा की स्थापना की, जो बाद में जनता दल बन गया। 1989 में जनता दल के नेतृत्व वाली पार्टियों का गठबंधन नेशनल फ्रंट सत्ता में आया। 2 दिसंबर 1989 को वीपी सिंह ने देश के प्रधानमंत्री के तौर पर शपथ ली। मुफ्ती मोहम्मद सईद को वीपी सिंह की कैबिनेट में जगह मिली। सईद देश के पहले मुस्लिम गृह मंत्री बने। नई सरकार के गठन को एक हफ्ता भी नहीं बीता था कि सईद के सामने एक बहुत बड़ा संकट खड़ा हो गया। यह संकट देश से भी जुड़ा था और खुद उनके परिवार से भी जुड़ा था। दरअसल, 8 दिसंबर 1989 को देश के गृह मंत्री मुफ्ती मोहम्मद सईद की बेटी रुबैया सईद (महबूबा मुफ्ती की बहन) का जेकेएलएफ के आतंकवादियों ने अपहरण कर लिया। रुबैया को पांच दिन बाद रिहा किया गया, जब केंद्र सरकार ने बदले में पांच आतंकवादियों को रिहा कर दिया। जुलाई 2022 में रुबैया ने जेकेएलएफ प्रमुख यासीन मलिक और तीन अन्य को अपने अपहरणकर्ता के रूप में पहचाना था। 2002 में जम्मू कश्मीर में विधानसभा चुनाव हुए और यह पीडीपी के लिए पहला विधानसभा चुनाव था। पहले चुनाव में पीडीपी ने 9.28त्न मत प्रतिशत के साथ 16 सीटें जीतीं। अन्य दलों के प्रदर्शन की बात करें तो नेशनल कॉन्फ्रेंस सबसे बड़ी पार्टी बनी लेकिन बहुमत नहीं पा सकी। नतीजों के बाद पीडीपी ने कांग्रेस के साथ मिलकर गठबंधन सरकार बनाई जिसने 20 सीटें जीती थीं। इस गठबंधन सरकार में पीडीपी के मुफ्ती मोहम्मद सईद पहले तीन साल

मुख्यमंत्री रहे। सईद ने अक्तूबर 2002 से नवंबर 2005 के बीच पीडीपी-कांग्रेस गठबंधन सरकार का नेतृत्व किया था। हालांकि, अगले तीन साल कांग्रेस के गुलाम नबी आजाद मुख्यमंत्री रहे जो अब अपनी नई पार्टी बना चुके हैं। बता दें कि धारा 370 हटने से पहले जम्मू कश्मीर की विधानसभा का कार्यकाल छह साल का होता था। 2002 के बाद 2008 में जम्मू कश्मीर में विधानसभा के लिए चुनाव होने थे। हालांकि, अमरनाथ भूमि हस्तांतरण के फैसले के विरोध में पीडीपी ने कांग्रेस के नेतृत्व वाली राज्य सरकार से अपना समर्थन वापस ले लिया। 2008 में जब विधानसभा के चुनाव हुए तो एक बार फिर नेशनल कॉन्फ्रेंस राज्य में सबसे बड़ी पार्टी बनी। पीडीपी की बात करें तो इसने 16 सीटों के अपने पिछले प्रदर्शन को बेहतर करते हुए 21 सीटें जीतीं। इसके साथ ही पार्टी को 15.39त्न वोट हासिल हुए। नेशनल कॉन्फ्रेंस (नेकां) एक बार फिर राज्य में सबसे बड़ी पार्टी बनी और इसने कांग्रेस के साथ गठबंधन सरकार बनाई। नेकां नेता उमर अब्दुल्ला राज्य के मुख्यमंत्री बने। अब आता है 2014 का विधानसभा चुनाव। ये चुनाव 2014 के लोकसभा चुनाव के बाद हुए जिसमें देश में पहली बार भाजपा ने पूर्ण बहुमत की सरकार बनाई और नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बने। 2014 में जम्मू-कश्मीर में 87 सीटों वाली विधानसभा के लिए 25 नवंबर से 20 दिसंबर 2014 तक पांच चरणों में मतदान हुआ था। परिणाम 23 दिसंबर, 2014 को घोषित किये गये थे। 87 सदस्यीय विधानसभा में पीडीपी को सबसे ज्यादा 28 सीटें मिली थीं। इसके साथ ही पार्टी ने 23.85त्न वोट हासिल किए। वहीं, दूसरे स्थान पर भाजपा थी जो 25 सीटों पर जीतने में सफल रही। फारुख अब्दुल्ला की नेशनल कॉन्फ्रेंस को 15 जबकि कांग्रेस को 12 सीटों पर जीत मिली। तीन सीटों पर निर्दलीय तो चार सीटों पर अन्य छोटे दलों को जीत मिली। कोई भी दल बहुमत के आंकड़े तक नहीं पहुंच सका। नतीजों के करीब ढाई महीने बाद पीडीपी के मुफ्ती मोहम्मद सईद ने राज्य के मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली। पीडीपी को 25 सदस्यों वाली भाजपा का समर्थन मिला। इस तरह इस गठबंधन ने बहुमत के आंकड़े को जुटा लिया। 7 जनवरी 2016 को सईद का निधन हो गया जिसके बाद राज्य में एक बार फिर राजनीतिक अनिश्चित्ता का दौर आया। राज्य में राज्यपाल का शासन लगाना पड़ा। करीब तीन महीने की अनिश्चितता के बाद भाजपा और पीडीपी में फिर से समझौता हुआ और महबूबा मुफ्ती ने राज्य के मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली। 4 अप्रैल 2016 को महबूबा राज्य की पहली महिला मुख्यमंत्री बनीं। पीडीपी-भाजपा की यह गठबंधन सरकार दो साल से ज्यादा वक्त तक चली। जून 2018 में भाजपा ने महबूबा सरकार से समर्थन वापस ले लिया। इसके साथ ही महबूबा मुफ्ती की सरकार गिर गई। 5 अगस्त, 2019 को राज्य का विशेष राज्य का दर्जा खत्म कर इसे केंद्र शासित प्रदेश बना दिया गया। धारा 370 हटने के बाद अब पहली बार राज्य में विधानसभा चुनाव हैं। इस चुनाव में महबूबा मुफ्ती के नेतृत्व वाली पीडीपी भी चुनाव मैदान में उतरी है। पार्टी ने अब तक 40 उम्मीदवार भी घोषित कर दिए हैं। पार्टी की प्रमुख महबूबा मुफ्ती चुनाव नहीं लड़ रही हैं बल्कि उनकी बेटी इल्तिजा मुफ्ती अपनी चुनावी राजनीति की शुरुआत कर रही हैं। 37 वर्षीय इल्तिजा बिजबेहरा से चुनाव लड़ेंगी, यह सीट कभी मुफ्ती परिवार का गढ़ कही जाती रही है। महबूबा मुफ्ती ने भी 1996 में इसी सीट से चुनावी शुरुआत की थी।

बंगलादेश में पूर्व में नियुक्त 25 जिला प्रमुख बदले गये

एजेंसी

ढाका। बंगलादेश सरकार ने ढाका और चटगांव सहित 25 जिलों में पिछली सरकार की ओर से नियुक्त उपायुक्तों के स्थान पर नये उपायुक्त नियुक्त किये हैं। ढाका ट्रिब्यून ने अपनी रिपोर्ट में यह जानकारी दी। लोक प्रशासन मंत्रालय ने इस मामले में आज गजट अधिसूचना जारी की। अधिसूचना के मुताबिक गोपालगंज, फरीदपुर, सिलहट, हबीगंज, मैमनसिंह, शेरपुर, कुश्तिया, झेनाइदाह, मगुरा, रंगपुर, गैबांधा, नौगांव, नटोरे, पबना, जॉयपुरहाट, कॉक्स बाजार, बोगरा, नोआखली, चांदपुर, गाजीपुर, कोमिला, मौलवीबाजार और खुलना सहित विभिन्न जिलों में नये उपायुक्त नियुक्त किये गये हैं। रिपोर्ट के मुतबिक गत 05 अगस्त को शेख हसीना सरकार के पतन और 08 अगस्त को अंतरिम सरकार के गठन के बाद अवामी लीग के कार्यकाल के दौरान नियुक्त अधिकारियों को वापस बुलाया जाना शुरू हो गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि लोक प्रशासन मंत्रालय ने अलग-अलग अधिसूचनाएं जारी की हैं, जिसमें कहा गया है कि 20 अगस्त को 25 जिला अदालतें वापस ले ली जायेंगी।

मस्क 2027 तक बन सकते हैं विश्व के पहले ट्रिलियनेयर

वाशिंगटन। अमेरिकी उद्यमी एलन मस्क वर्ष 2027 तक एक ट्रिलियन (10 खरब) से अधिक की संपत्ति अर्जित कर विश्व के पहले ट्रिलियनेयर बन सकते हैं। ब्रिटेन के अखबार 'द गार्डियन' ने इंफॉर्मा कनेक्ट एकेडमी के एक पेपर का हवाले से यह जानकारी दी है। इंफॉर्मा कनेक्ट एकेडमी अमीर लोगों की वित्तीय स्थिति पर नजर रखने वाली कंपनी है। गौरतलब है कि मस्क की संपत्ति सालाना औसतन 110 प्रतिशत बढ़ रही है, जिसके आधार पर यह पूर्वानुमान व्यक्त किया गया है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि 'फोर्ब्स' के अनुसार वर्तमान में 81.2 अरब डॉलर की संपत्ति वाले भारतीय अरबपति गौतम अडानी 2028 में दूसरे ट्रिलियनेयर बन सकते हैं, बशर्ते उनकी संपत्ति में वर्तमान 123 प्रतिशत प्रति वर्ष की वृद्धि दर बनी रहे। इसी वर्ष अमेरिकी वीडियो कार्ड डेवलपर एनवीडिया के प्रमुख जेन्सन हुआंग भी तेरह अंकों की नेटवर्थ तक पहुंच सकते हैं।

कुवैत के तेल मंत्री इमाद अतीकी बर्खास्त

दोहा। कुवैत के अमीर (बादशाह) मिशाल अल-अहमद अल-जबर अल-सबाह ने उप प्रधानमंत्री एवं तेल मंत्री इमाद अतीकी को बर्खास्त कर दिया है। सरकारी समाचार एजेंसी ने अमीर के आदेश का हवाला देते हुए यह रिपोर्ट दी। रिपोर्ट में कहा गया है कि एक अन्य आदेश के माध्यम से अमीर ने वित्त मंत्री एवं आर्थिक मामलों की मंत्री नूरा फासम को उनके मौजूदा कर्तव्यों के अलावा कार्यवाहक तेल मंत्री के रूप में नियुक्त किया।

रूसी वायु रक्षा ने मॉस्को क्षेत्र में 14 ड्रोन को मार गिराया: गवर्नर

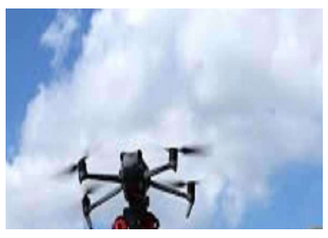

मॉस्को। मॉस्को क्षेत्र के गवर्नर एंड्री वोरोब्योव ने मंगलवार को कहा कि सोमवार की रात रूसी वायु रक्षा ने पोडॉल्स्क, रामेंस्कॉय, ल्यूबेर्त्सी, डोमोडेडोवो और कोलोम्ना के शहरी जिलों में 14 ड्रोनों को मार गिराया। उन्होंने टेलीग्राम पर कहा कि कुल मिलाकर वायु रक्षा ने पोडॉल्स्क, रामेंसकोय, हुबर्त्सी, डोमोडेडोवो और कोलोमना के शहरी जिलों में 14 ड्रोन मार गिराए।

चीन नहीं आ रहा अपनी हरकतों से बाज, एक बार फिर ताइवान की सीमा के पास भेजे 17 सैन्य विमान

नई दिल्ली। चीन और ताइवान के बीच लगातार तनाव बढ़ता जा रहा है। बीजिंग अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा है। एक बार फिर चीनी सेना ने ताइवान की सीमा में घुसपैठ की कोशिश की। हालांकि, ताइवान की सेना ने भी इसका जवाब दिया। ताइवान के रक्षा मंत्रालय ने बताया कि चीन के विमान, नौसैनिक पोत और जहाज ताइवान की सीमा के करीब देखे गए। ताइवान के राष्ट्रीय रक्षा मंत्रालय (एमएनडी) ने बताया कि सोमवार सुबह छह बजे से मंगलवार सुबह छह बजे ताइवान के आसपास चीनी सात नौसैनिक पोत, एक आधिकारिक जहाज और 17 सैन्य विमान उड़ान भरते देखे गए। सेना ने बताया कि 17 विमानों में से 12 ने ताइवान स्ट्रेट की मध्य रेखा को पार किया और ताइवान के पूर्वी वायु रक्षा पहचान क्षेत्र (एडीआईजेड) में प्रवेश किया। बता दें चीन और ताइवान के बीच यह जल संधि एक अनौपचारिक सीमा है।

सीरियाई सैन्य ठिकानों पर इजरायली हवाई हमले में मरने वालों की संख्या बढ़कर 15 हो गयी

एजेंसी

दमिश्क। सीरिया के मध्य शहर मस्याफ में कई सैन्य ठिकानों पर किये गये इजरायली हवाई हमलों में मरने वालों की संख्या बढ़कर 15 हो गई और 34 अन्य घायल हो गये। इससे पहले दिन में सीरियाई रक्षा मंत्रालय ने कहा कि इजरायली लड़ाकू विमानों ने उत्तर-पश्चिमी लेबनान से मध्य सीरिया में कल रात करीब 11ः23 बजे कई

प्रमुख सैन्य स्थलों को निशाना बनाया, जिसमें मरने वालों की संख्या बढ़कर 15 हो गयी और 34 लोग घायल हो गये। मंत्रालय के अनुसार, वायु रक्षा बलों ने इजरायल की कई मिसाइलों को मार गिराया। इससे पहले, मंत्रालय ने पुष्टि के अनुसार हवाई हमले में तीन लोगों की मौत हो गई।

सीरियाई रक्षा मंत्रालय ने कहा कि इजरायली लड़ाकू विमानों ने उत्तर-

वियतनाम में यागी तूफ़ान से 59 लोगों की मौत

एजेंसी

हनोई। वियतनाम के उत्तरी क्षेत्र में सोमवार की दोपहर तक तूफान यागी के कारण हुए भूस्खलन और बाढ़ की चपेट में आकर 59 लोगों की मौत हो गयी और लापता हो गए। कृषि और ग्रामीण विकास मंत्रालय ने यह जानकारी दी। इस प्राकृतिक आपदाओं में 247 लोग घायल भी हुए जिनमें क्वांग निन्ह प्रांत में 157 और हाई फोंग शहर में 40 लोग शामिल हैं; 25 मानव रहित जहाज डूब गए, जिनमें अधिकतर मछली पकड़ने वाली नावें थीं; 113,000 हेक्टेयर से अधिक चावल और 22 हजार हेक्टेयर से अधिक अन्य फसलें क्षतिग्रस्त हो गईं; 1,500 जलकृषि पिंजरे क्षतिग्रस्त या बह गए; 190,000 मुर्गियाँ मार डालीं। मंत्रालय ने कहा कि इस आपदा में लगभग 121,700 पेड़ उखड़ गए या क्षतिग्रस्त हो गए।

वियतनाम समाचार एजेंसी ने बताया कि वियतनाम के उत्तरी फू थो प्रांत में एक स्टील पुल सुबह ढह गया, जिससे 10 ऑटोमोबाइल और दो मोटरसाइकिलें लाल नदी में गिर गईं तथा 13 लोग लापता हो गए। यह भी बताया गया कि भूस्खलन से काओ बांग प्रांत में 21 लोग

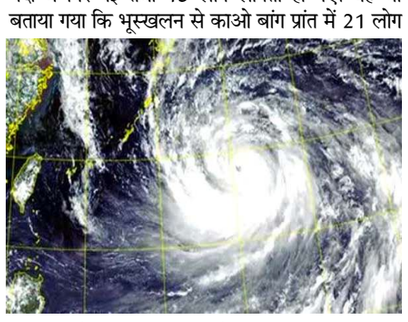

मारे गए और लापता हो गए, और लाओ काई प्रांत में 15 लोगों को उसी भाग्य का सामना करना पड़ा। मंत्रालय के अनुसार, तूफ़ान यागी पिछले 30 वर्षों में वियतनाम के उत्तरी क्षेत्र में आया सबसे शक्तिशाली तूफान रहा।

आरएसएस के विपरीत, विचारों की बहुलता को मानती है कांग्रेस: राहुल गांधी

एजेंसी

डलास। कांग्रेस नेता और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) पर निशाना साधा और कहा कि जहां उनका मानना है कि भारत एक विचार है, वहीं दूसरी ओर कांग्रेस का मानना है कि भारत विचारों की बहुलता वाला देश है।

डलास में भारतीय प्रवासियों को संबोधित करते हुए श्री गांधी ने कहा, हमारा मानना है कि हर किसी को सपने देखने की अनुमति दी जानी चाहिए और उनकी जाति, भाषा, धर्म, परंपरा या इतिहास की परवाह किए बिना उन्हें भाग लेने की अनुमति एवं स्थान दिया जाना चाहिए।

उन्होंने इस बात का जिक्र किया कि 2024 का आम चुनाव भाजपा के लिए एक बड़ा झटका था साथ ही कहा , ÷हमने देखा कि चुनाव परिणाम के कुछ ही मिनटों के भीतर, भारत में कोई भी भाजपा या भारत के प्रधान मंत्री से नहीं डरता था। इसलिए ये बहुत बड़ी उपलब्धियां हैं, राहुल गांधी या कांग्रेस पार्टी की नहीं। उन्होंने आगे कहा, ये भारत के लोगों

की बहुत बड़ी उपलब्धियाँ हैं जिन्होंने लोकतंत्र को महसूस किया, भारत के लोगों की जिन्होंने महसूस किया कि हम अपने संविधान पर हमले को स्वीकार नहीं करेंगे। हम अपने धर्म, अपने राज्य पर हमले को स्वीकार नहीं करने जा रहे हैं।श्री गांधी ने कहा कि चुनाव में लड़ाई उसी समय साफ हो गयी थी, जब भारत के लाखों लोगों ने स्पष्ट रूप से समझ लिया कि प्रधानमंत्री मोदी संविधान पर हमला कर रहे हैं। रायबरेली के सांसद ने कहा, मैंने जो एक-एक शब्द आपसे कहा है, वह संविधान में है। आधुनिक भारत की नींव संविधान है। चुनाव में लोगों ने जो स्पष्ट रूप से समझा और मैंने देखा कि जब मैं संविधान उठाता था, तब लोगों ने समझा कि मै क्या कह रहा था। वे कह रहे थे कि भाजपा हमारी परंपरा पर हमला कर रही है, हमारी भाषा पर हमला कर रही है, हमारे राज्यों पर हमला कर रही है, हमारे इतिहास पर हमला कर रही है।' श्री गांधी ने कहा संसद में मेरे पहले भाषण में, जब मैंने 'अभय मुद्रा' का वर्णन किया तो आपने देखा होगा कि यह निर्भयता का प्रतीक है और यह हर एक भारतीय धर्म में मौजूद है। जब मैं यह कह रहा था, तो भाजपा इसे स्वीकार नहीं कर सकी। वे नहीं समझते हैं, और हम उन्हें समझाने जा रहे हैं।' भारतीय प्रवासियों की सराहना करते हुए श्री गांधी ने कहा, ÷आप वे लोग हैं जो भारत से आए हैं, और जिन मूल्यों का मैं वर्णन कर रहा हूं - संविधान के मूल्य, सम्मान के मूल्य, विनम्रता के मूल्य - आप अपने दिलों में रखते हैं, वे आपके अंदर रक्त में हैं। जब आप इस देश में आए, तो आप अहंकार के साथ नहीं, बल्कि विनम्रता के साथ आए।

शी ने उत्तर कोरिया को उसकी स्थापना की वर्षगांठ पर बधाई दी

एजेंसी

बीजिंग। चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने डीपीआरके की 76वीं स्थापना वर्षगांठ पर वर्कर्स पार्टी ऑफ कोरिया (डब्ल्यूपीके) के महासचिव और डेमोक्रेटिक पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ कोरिया (डीपीआरके) के राज्य मामलों के अध्यक्ष किम जोंग उन को बधाई संदेश भेजा। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के महासचिव शी ने संदेश में कहा कि पिछले 76 वर्षों में डब्ल्यूपीके के नेतृत्व में डीपीआरके के लोग एकजुट हुए हैं और विभिन्न राष्ट्रीय कारणों के जोरदार विकास को बढ़ावा दिया है। उन्होंने कहा कि हाल के वर्षों में कॉमरेड महासचिव किम ने डीपीआरके की पार्टी और लोगों को डब्ल्यूपीके की 8वीं कांग्रेस और इसके सभी पूर्ण सत्रों के मार्गदर्शक सिद्धांतों को पूरी तरह से लागू करने में नेतृत्व किया है और राष्ट्रीय निर्माण और विकास में कई उपलब्धियां हासिल की हैं।

शी ने कहा कि कॉमरेड महासचिव के नेतृत्व में डब्ल्यूपीके के नेतृत्व में डीपीआरके के लोग निश्चित रूप से डीपीआरके-शैली के समाजवाद के कारण को आगे बढ़ाने में नई और बड़ी जीत हासिल करेंगे।

गाजा में चार लाख 60 हजार बच्चों को लगे पोलियो टीके

एजेंसी

दुबई। गाजा पट्टी में संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के सहयोग वाले टीकाकरण अभियान के तहत पहले आठ दिन में करीब चार लाख 60 हजार बच्चों को पोलियो के टीके लगाये गये हैं।अमीराती सरकारी समाचार एजेंसी डब्ल्यूएएम ने रविवार को यूएई के अधिकारियों के हवाले से यह जानकारी दी। एजेंसी ने बताया कि गाजा पट्टी में करीब छह लाख 40 हजार बच्चों को पोलियो का टीका लगाने की योजना है, जिनमें से लगभग चार लाख 60 हजार बच्चों को पोलियो टीका लगाया जा चुका है। एजेंसी के अनुसार, 150 केन्द्रों पर तैनात दो हजार से अधिक चिकित्साकर्मी टीकाकरण अभियान के तहत गाजा के बच्चों को पोलियो टीका लगा रहे हैं। यह अभियान यूएई, विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ), संयुक्त राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय बाल

आपातकालीन कोष (यूनीसेफ) और नियर ईस्ट में फिलिस्तीनी शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र राहत एवं कार्य एजेंसी (यूएनआरडब्ल्यूए) के मानवीय संगठनों के साथ मिलकर चलाया जा रहा है। यूएई ने पहले टीकाकरण के लिए 50 लाख डॉलर आवंटित किए थे।गौरतलब है कि गाजा पट्टी में बच्चों को पोलियो से बचाने का अभियान एक सितंबर को शुरू हुआ। गाजा स्वास्थ्य मंत्रालय ने जुलाई में इस क्षेत्र को पोलियो महामारी क्षेत्र घोषित कर दिया था। अधिकारियों ने बताया कि यहां बीमारी फैलने का मुख्य कारण कई महीनों से जारी संघर्ष है। फ़िलिस्तीनी आंदोलन हमास ने कहा कि वह टीकाकरण के लिए मानवीय युद्ध विराम का समर्थन करता है।

मोरक्को में मूसलाधार वर्षा और बाढ़ से 11 लोगों की मौत, नौ लापता

एजेंसी

रबात। मोरक्को में मूसलाधार वर्षा होने से अचानक आई बाढ़ के कारण 11 लोग मारे गए हैं और नौ अन्य लापता हैं।

गृह मंत्रालय के प्रवक्ता रशीद एल खल्फी ने रविवार को रबात में संवाददाताओं को बताया कि देश के दक्षिणी क्षेत्र में जारी भारी बारिश से आई बाढ़ में टाटा प्रांत में सात और एरराचिडिया तथा तिजनीत प्रांतों में चार लोगों को मिलाकर कुल 11 लोगों की मौत हो चुकी है। इनमें एक विदेशी नागरिक भी शामिल है। उन्होंने बताया कि इस भारी बारिश में टाटा, एरराचिडिया और तारोउदंत प्रांतों के नौ लोग लापता हो गये हैं।

मूसलाधार बारिश और बाढ़ में 40 मकान ढह गये हैं और करीब 93 सड़कें क्षतिग्रस्त हो गयी हैं। क्षतिग्रस्त सड़कों में से 53 पर यातायात बहाल कर दिया गया है। देश के दक्षिणी क्षेत्र

में बेहद खराब मौसम के चलते, बिजली, पेयजल आपूर्ति नेटवर्क और टेलीफोन नेटवर्क भी बाधित हैं।

प्रवक्ता ने कहा कि खराब मौसम के मद्देनजर गृह मंत्रालय ने स्थानीय और बाहरी लोगों से मौसम अधिकारियों की ओर से जारी सभी दिशा-निर्देशों का पालन करने का आग्रह किया है।

जयशंकर ने सऊदी अरब में भारत–जीसीसी विदेश मंत्रियों की बैठक में भाग लिया

एजेंसी

सऊदी। विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने रणनीतिक वार्ता के लिए पहली भारत और खाड़ी सहयोग परिषद (जीसीसी) की संयुक्त मंत्रिस्तरीय बैठक में भाग लेने के लिए 8-9 सितंबर को सऊदी अरब का दौरा किया और अपने समकक्षों से मुलाकात की है।

एस. जयशंकर दो दिवसीय यात्रा पर सऊदी अरब की राजधानी पहुंचे और वहां पहली जीसीसी के विदेश मंत्रियों की बैठक में भाग लिया। डा़ जयशंकर ने अपनी यात्रा के दौरान वर्तमान सत्र के अध्यक्ष कतर के प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री महामहिम शेख मोहम्मद बिन अब्दुलरहमान बिन जसीम अल थानी के साथ रणनीतिक वार्ता के लिए भारत-जीसीसी संयुक्त मंत्रिस्तरीय बैठक की सह-अध्यक्षता की। यह जीसीसी मंत्रिस्तरीय परिषद की पहली बैठक थी। बैठक में सभी जीसीसी देशों के विदेश मंत्रियों और जीसीसी के

महासचिव महामहिम जासेम मोहम्मद अल्बुदैवी ने भाग लिया। बैठक में डा़ जयशंकर और अन्य देशों के विदेश मंत्रियों ने इस पहली मंत्रिस्तरीय बैठक की उपलब्धियों को आगे बढ़ाने के लिए अपनी संयुक्त प्रतिबद्धता की पुष्टि की। भारत के विदेश मंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला कि एक सामूहिक इकाई के रूप में खाड़ी सहयोग परिषद भारत के लिए महत्वपूर्ण महत्व रखती है और भारत के ÷विस्तारित÷ पड़ोस का गठन करती है और अपने देशों में बड़े भारतीय प्रवासियों की देखभाल करने के लिए जीसीसी देशों को धन्यवाद दिया। नेताओं ने भारत की विस्तृत समीक्षा की और जीसीसी संबंधों और पिछले कुछ वर्षों में संबंधों में प्रगति की सराहना की। विदेश मंत्री और विदेश मंत्रियों ने विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के महत्व पर जोर दिया।

? डॉ जयशंकर ने खाड़ी सहयोग परिषद और भारत के बीच रणनीतिक और बढ़ती साझेदारी के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि व्यापार, निवेश, बुनियादी ढांचे के विकास और लोगों से लोगों के संबंधों में सहयोगात्मक पहल के माध्यम से यह साझेदारी न केवल क्षेत्र और भारत के भीतर आर्थिक विकास को बढ़ावा देती है बल्कि एक अधिक स्थिर और समृद्ध वैश्विक अर्थव्यवस्था में भी योगदान देती है।

बैठक में स्वास्थ्य, व्यापार, सुरक्षा, कृषि और खाद्य सुरक्षा, परिवहन, ऊर्जा, संस्कृति सहित विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न संयुक्त गतिविधियाँ शुरू करने के लिए एक संयुक्त कार्य योजना 2024-2028 को भी अपनाया गया। यह भी निर्णय लिया गया कि बाद में आपसी सहमति के आधार पर संयुक्त कार्य योजना में सहयोग के और भी क्षेत्रों को शामिल किया जा सकता है। बैठक में आम हित के अंतरराष्ट्रीय और क्षेत्रीय मुद्दों पर भी चर्चा हुई।

?डॉ जयशंकर ने कतर के प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री शेख मोहम्मद बिन अब्दुलरहमान बिन जसीम अल थानी, सऊदी अरब के विदेश मंत्री प्रिंस फैसल बिन फरहान अल सऊद, सल्तनत के विदेश मंत्री के साथ अलग-अलग द्विपक्षीय बैठकें भी कीं। ओमान के सैय्यद बद्र बिन हमद बिन हमूद अलबुसैदी, कुवैत राज्य के विदेश मामलों के मंत्री अब्दुल्ला अली अल याह्या और बहरीन के विदेश मंत्री डॉ. अब्दुल्लातिफ बिन राशिद अल ज़यानी भारत-जीसीसी मंत्रिस्तरीय बैठक के मौके पर मौजूद थे।

पाकिस्तानी बलों के साथ संघर्ष में अफगान तालिबान के आठ जवान मारे गए

इस्लामाबाद/पेशावर। अशांत खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के पास सीमावर्ती क्षेत्र में पाकिस्तान के सुरक्षा बलों के साथ भीषण झड़प में अफगान तालिबान के कम से कम आठ कर्मी मारे गए हैं जिनमें दो प्रमुख कमांडर शामिल हैं। प्रांत के खुर्रम सीमावर्ती जिले में सप्ताहांत में सामने आई इस घटना में अफगान तालिबान के 16 जवान घायल भी हो गए हैं।'द डॉन' अखबार ने सूत्रों के हवाले से कहा कि अफगान पक्ष ने शनिवार की सुबह पाक-अफगान सीमा पर पलोसिन इलाके में भारी हथियारों से एक पाकिस्तानी चौकी पर हमला किया था। सूत्रों ने कहा, ''हमें दूसरे पक्ष में भारी नुकसान की खबर मिली हैं। पाकिस्तानी बलों की जवाबी गोलीबारी में अब तक अफगान तालिबान के आठ लोग मारे गए हैं और 16 अन्य घायल हो गए हैं।'' उन्होंने कहा कि दो प्रमुख कमांडर भी मारे गए हैं।

कौमी पत्रिका
संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुरचरन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिंटिंग प्रेस, सेक्टर ए-4/ए-144 इंडस्ट्रीयल एरिया ट्रोनिका सिटी लोनी (गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।
Corporate Office:
5, Bahadurshah Zafar Marg
ITO, New Delhi-110002
फोन : 011-41509689, 23315814
मोबाइल नंबर : 9312262300
E - mail address :
qpatrika@gmail.com
Website: www.qaumipatrika.in
R.N.I. No.
UP-HIN/2007/21472
Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid
Advocate Dr. A.P.Singh
Advocate Manish Sharma
Advocate Pooja Bhaskar Sharma

NANI RESORTS & FLORICULTURE PVT. LTD.
Corp. Off.: ROF Group, Building No. 80, First Floor, Sector-44, Gurgaon-122003, Ph. 0124-4399399

Notice is hereby given to the Public at large that the following booking of residential apartments in the Affordable Housing Project **"ROF AALAYAS -II"** being developed by **M/s NANI RESORTS & FLORICULTURE PVT. LTD.** situated at **Sector 102, Gurugram** , Haryana vide license no. 82 of 2018 dated 06.12.2018 has been cancelled due to non –payment of installments or allotment amount by successful allottee (s) of their apartments till its due date or any other reason, the information/reminders of which has been given them according to terms of the Haryana Affordable Housing Policy 2013, dated 19/8/2013 (as amended).

Application No.	Carpet Area (Sq. Ft.)	Apartment No.
1504, 826, 799, 633, 1831, 1180, 752, 847, 848, 526, 701, 675	645, 3 BHK (TYPE-15)	M-205, I-505, M-804, J-404, M-1408, L-1202, M-608, L-1104, K-108, I-605, J-708, K-208
1098, 1147, 1076, 1134, 1075, 659, 1114	645, 2 BHK+S (TYPE-17)	K-1502, J-102, I-1203, M-202, L-1103, K-403, J-503
1646, 1785, 782	646, 3 BHK (TYPE-16)	M-207, L-306, M-506
941, 1440	645, 3 BHK (TYPE-11)	KS-05, KS-04

Therefore, all the person/allottee (s) are hereby informed to submit claims/objections in writing, if any, for the cancellation of the said apartments to the undersigned company/developer along with the relevant documents to support their claims/ objections within 7 days from the date of publication hereof.

In the absence of any claim within the stipulated period above, it shall be presumed and/or deemed that the allottee (s) or concern has no such claims/objections by virtue of this notice and, if any, the same have been waived or abandoned without any reference to such claims/objections made thereafter and necessary action will be taken as per rules for the process of re-allotment.

For **NANI RESORTS & FLORICULTURE PVT. LTD.**
Place: Gurugram (Haryana) Director

'हर पांच मिनट में भारत की परीक्षा नहीं ले सकते', पीएम मोदी की रूस यात्रा पर अमेरिका की पूर्व विदेश मंत्री

वाशिंगटन। भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पिछले दो महीनों में यूक्रेन और रूस का दौरा कर चुके हैं। रूस की यात्रा के बाद अमेरिका के साथ लगातार संबंध बिगड़ने की बात उठ रही थी। हालांकि, अब अमेरिका के पूर्व विदेश मंत्री ने पीएम मोदी की रूस यात्रा को लेकर चिंताओं को खारिज कर दिया है। उनका कहना है कि वॉशिंगटन हर पांच मिनट में नई दिल्ली से वफादारी की परीक्षा नहीं ले सकता। पूर्व विदेश मंत्री कोंडोलीजा राइस ने भारत अमेरिका रक्षा त्वरित पारिस्थितिक तंत्र (इंडस-एक्स) में भारत-अमेरिका संबंधों को स्थायी और द्विदलीय बताया। साथ ही इस बात पर जोर दिया कि जो भी व्हाइट हाउस में आता है, वह इस रिश्ते के महत्व को जानता है। उन्होंने आगे कहा कि जैसा कि भारत कहता है कि देशों को रणनीतिक स्वायत्तता चाहिए और मुझे इससे कोई समस्या नहीं है। लेकिन यह हमारे (अमेरिका और भारत के) गहरे हित हैं, जो अंततः एक मजबूत साझेदारी की ओर ले जाएंगे। स्टैनफोर्ड के हूवर इंस्टीट्यूट की निदेशक राइस ने रूसी सैन्य उपकरणों को कबाड़ बताया। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी की मॉस्को यात्रा से रक्षा के मामले में कुछ खास प्रगति नहीं होगी। पूर्व विदेश मंत्री ने संकेत दिया कि अमेरिका मानता है कि भारत के साथ सैन्य सहयोग बढ़ाने में वह धीमा रहा है और उसने कुछ महत्वपूर्ण समय और अवसर गंवाए हैं उन्होंने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री मोदी चीनी राष्ट्रपति शी चिनफिंग और उनके रूसी समकक्ष व्लादिमीर पुतिन के बीच सीमा रहित संबंधों से अवगत हैं और यह भारत के लिए एक बड़ी चुनौती बन सकता है।

ढाई करोड़ के मोबाइलों के साथ चार आरोपित गिरफ्तार

एजेंसी

नई दिल्ली । एयरपोर्ट जा रहे सैमसंग कंपनी के करोड़ों रुपये के मोबाइल चोरी करने वाले चार आरोपितों को दक्षिण-पूर्वी दिल्ली जिला पुलिस की एएटीएस टीम ने गिरफ्तार किया है। आरोपितों की पहचान सत्यवीर, अभिषेक गिरी, जयकेश और राजू यादव के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपितों के पास से 2.5 करोड़ रुपये के 456 मोबाइल फोन बरामद किए गए हैं। अभिषेक इस गिरोह का मुख्य आरोपित है। जबकि सत्यवीर ट्रक चालक है जो मोबाइल कंपनी के सामान की सप्लाई करता था।

पुलिस के मुताबिक विजय मिश्रा नाम के पीड़ित ने शिकायत दर्ज कराई थी। उन्होंने बताया कि 31 मई को एसएफसी लाजिस्टिक कंपनी का ट्रक ग्रेटर नोएडा के दादरी से सैमसंग के मोबाइल लेकर इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट के लिए रवाना किया गया था। आरोपित चालक ट्रक को एयरपोर्ट पर लेकर नहीं पहुंचा। ट्रक के जीपीएस से उसकी लोकेशन राव तुला राम मार्ग सुब्रतो पार्क में मिली। जब कंपनी अधिकारी मौके पर पहुंचे तो ट्रक में भरे मोबाइल चोरी कर लिए गए थे। पुलिस ने शिकायत के आधार पर केस दर्ज कर जांच शुरू की। पुलिस टीम ने घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज को खंगाल कर एक-एक चारों को दबोचा।

उड़ीसा से गांजा लाकर दिल्ली में करते थे सप्लाई, दो गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस क्राइम ब्रांच की नॉर्दर्न रेंज की टीम ने ओडिशा से दिल्ली/एनसीआर क्षेत्र में गांजे की अवैध तस्करी करने वाले एक अंतरराज्यीय गिरोह का भंडाफोड़ करते हुए दो आरोपितों को गिरफ्तार किया गया है। आरोपितों की पहचान साहब सिंह (29) और प्रदीप कुमार (29) के रूप में हुई है। दोनों तस्कर हरियाणा के सोनीपत जिले के घासौली गांव के रहने वाले हैं। इनके पास से 120 किलोग्राम (गांजा) बरामद किया गया, जिसको ट्रक में बनी गुप्त कैविटी में छिपाकर रखा गया था। अंतरराष्ट्रीय बाजार में इस गांजे की कीमत 40 लाख रुपये आंकी गई है। क्राइम ब्रांच के डीसीपी सतीश कुमार के मुताबिक, क्राइम ब्रांच की एनआर-द्व टीम के एसआई योगेश कुमार को दिल्ली/एनसीआर के इलाकों में गांजे की आपूर्ति के बारे में गुप्त सूचना मिली थी। इस जानकारी को लोकल सोर्स और टेक्नीकल जांच पड़ताल के जरिए से और विकसित किया गया, जिसमें एक ट्रक में गांजे को छिपाकर ओडिशा से दिल्ली लाया जा रहा है। इसके बाद संदिग्ध फोन नंबरों को सर्विलांस पर रखा गया था। इसके बाद एसीपी विवेक त्यागी की निगरानी में इंस्पेक्टर संजय कौशिक के नेतृत्व में टीम का गठन किया गया. फिर स्मृति पार्क, सेक्टर ए-1, नरेला के पास ट्रैप लगाया गया।

कन्हैया मित्तल ने कांग्रेस में जाने की इच्छा पर मांगी माफी: चरणजीव मल्होत्रा

नई दिल्ली । प्रमुख समाजसेवी व गौमाता रक्षा एवं करोना योद्धा चरणजीव मल्होत्रा ने कहा कि कन्हैया मित्तल ने पहले कांग्रेस में शामिल होने का ऐलान किया था, लेकिन अब कन्हैया मित्तल ने अपना शव्द यू टर्न ले लिया है हिंदू संगठनों एवं सनातनियों का विश्वास कायम रखा।

और हम सब राम के थे, राम के हैं और राम के ही रहेंगे और मैं भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं कार्यकर्त्ताओं तथा सनातनियों एवं राम भक्तों से माफी मांग लिया है। उन्होंने आगे कहा कि पिछले यूपी विधान सभा चुनावों में भाजपा के लिए कन्हैया मित्तल का गाना जो राम को लाये है हम उनकों लाएंगे, इस गाना को लेकर बीजेपी के लिए राजनीतिक संजीवनी साबित हुआ था इस गाना को लेकर मतदाताओं के दिलों दिमाग में ऐसा चढ़ा कि सारे रिकॉर्ड तोड़ दिया था चरणजीव मल्होत्रा ने बताया कि भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं कार्यकर्त्ता एवं राम भक्त तथा सनातन को बहुत बड़ा ठेस पहुंचा है फेसबुक लाइफ लाईन बहुत प्रेरित हुए । मशहूद गायक कन्हैया मित्तल ने जो गलती की है पिछले दो दिनों में महसूस किया। वह अब माफी मांग लिया है कन्हैया मित्तल ने लाइव होकर अपना बयान वापस ले लिया है और माफी भी मांगी।बता दें कि लुधियाना में कन्हैया मित्तल का जमकर विरोध हुआ था। जहां पर हिंदू संगठनों और भारतीय जनता पार्टी के नेताओं ने कन्हैया मित्तल से कोई भी समारोह ना करवाने का ऐलान किया था। यह विरोध केवल एक ही जगह तक सीमित नहीं रहा बल्कि उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, हरियाणा, राजस्थान और पंजाब में भी देखने को मिला था।मैं देख रहा हूं कि आप सभी पेरशान हैं और मैं कांग्रेस में शामिल होने के अपने शब्द वापस लेता हूं क्योंकि मैं नहीं चाहता कि कोई भी सनातनी विश्वास खो दे। चरणजीव मल्होत्रा ने कन्हैया मित्तल बीजेपी में वापसी पर धन्यवाद कहा।

आबू धाबी के युवराज नाह्यान ने राष्ट्रपति मुर्मु से मुलाकात की

एजेंसी

नई दिल्ली। आबू धाबी के युवराज शेख खालिद बिन मोहम्मद बिन ज़ायेद अल नाह्यान ने यहां राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात की।

श्रीमती मुर्मु ने कहा कि उन्हें संयुक्त अरब अमीरात के नेतृत्व की तीसरी पीढ़ी का राष्ट्रपति भवन में स्वागत करते हुए खुशी हो रही है। यह उच्च स्तरीय जुड़ाव की उस लंबी परंपरा को जारी रखती है जो संयुक्त अरब अमीरात के साथ भारत की व्यापक रणनीतिक साझेदारी के अनुरूप है। राष्ट्रपति ने कहा कि दोनों देशों के दूरदर्शी नेतृत्व के कारण पिछले एक दशक में हमारे ऐतिहासिक लेकिन दूरदर्शी द्विपक्षीय संबंधों में बदलाव आया है। उन्होंने इस बात पर संतोष व्यक्त किया कि युवराज की यात्रा के दौरान, हमने सहयोग के नए क्षेत्रों में कई समझौतों के माध्यम से इस साझेदारी का और विस्तार किया है। श्रीमती मुर्मु ने कहा कि संयुक्त अरब अमीरात में 35 लाख से अधिक भारतीय नागरिक रहते हैं, जिससे लोगों का आपसी संबंध इस रिश्ते का आधार बनता है।

उन्होंने उनके कल्याण को सुनिश्चित करने, विशेष रूप से कोविड महामारी के कठिन समय के दौरान की गई विशेष देखभाल के लिए संयुक्त अरब नेतृत्व की सराहना की।

दोनों नेता इस बात पर सहमत हुए कि भारत और संयुक्त अरब अमीरात में समन्वित और बहुसांस्कृतिक विरासत वाले समाज हैं, और महात्मा गांधी तथा महामहिम शेख जायद द्वारा दिखाए गए शांति, सहिष्णुता और सद्भाव का मार्ग हमारे राष्ट्रीय चरित्र में गहराई से समाहित है। राष्ट्रपति अमीराती समाज के सभी पहलुओं में महिलाओं की भागीदारी और योगदान को देखकर भी प्रसन्न थे। उन्होंने कहा कि दोनों देशों ने प्रदर्शित किया है कि 'महिलाओं के नेतृत्व वाला विकास' समग्र सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए अधिक प्रभावी परिणाम दे सकता है।

उच्चतम न्यायालय ने इजरायल को हथियारों की आपूर्ति रोकने की याचिका की खारिज

एजेंसी

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने उस जनहित याचिका को खारिज कर दिया, जिसमें केंद्र को गाजा में युद्ध लड़ रहे इजराइल को हथियारों और सैन्य उपकरणों का निर्यात रोकने का निर्देश देने का अनुरोध किया गया था। न्यायालय ने कहा कि वह देश की विदेश नीति में दखल नहीं दे सकता।

प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने कहा कि इजराइल को हथियारों और सैन्य उपकरणों का निर्यात कर रही भारतीय कंपनियों को आपूर्ति करने से नहीं रोका जा सकता, क्योंकि ऐसी सूरत में उन्हें संविदात्मक दायित्वों के उल्लंघन के आरोप में मुकदमे का सामना करना पड़ सकता है।

पीठ ने कहा, हम देश की विदेश नीति संबंधी मामलों में दखल नहीं दे सकते। प्रधान न्यायाधीश ने कहा, क्या हम यह निर्देश दे सकते हैं कि आप संयुक्त राष्ट्र की नरसंहार संधि के तहत इजराइल को निर्यात पर प्रतिबंध लगा दें.. इसमें हिचक क्यों? ऐसा इसलिए है, क्योंकि इसका असर विदेश नीति पर पड़ता है और हम नहीं जानते कि इसका क्या प्रभाव होगा।

अशोक कुमार शर्मा और अन्य ने वरिष्ठ वकील प्रशांत भूषण के माध्यम से एक जनहित याचिका दायर की थी, जिसमें केंद्र को इजराइल को हथियार और अन्य सैन्य उपकरणों का निर्यात करने वाली भारतीय कंपनियों के मौजूदा लाइसेंस रद्द करने और नये लाइसेंस न जारी करने का निर्देश देने का अनुरोध किया गया था। गाजा पट्टी में इजराइल और हमास के बीच युद्ध में हजारों फलस्तीनी मारे गए हैं। पिछले साल सात अक्टूबर को हथियारबंद हमास लड़ाकों ने इजराइल में घुसकर लगभग 1,200 लोगों की जान ले ली थी, जिसके बाद गाजा पट्टी में इजराइल ने जवाबी कार्रवाई की थी और दोनों पक्षों में युद्ध छिड़ गया था।

दिल्ली में पटाखे पर प्रतिबंध करने पर व्यापारियों में रोषः परमजीत सिंह पम्मा

एजेंसी

नयी दिल्ली। दिल्ली सरकार द्वारा राजधानी में अगले वर्ष 01 जनवरी तक पटाखे की बिक्री और चलने पर रोक को लेकर फेडरेशन ऑफ सदर बाजार ट्रेड्स एसोसिएशन के चेयरमैन परमजीत सिंह पम्मा ने गहरी नाराजगी जताई है। श्री पम्मा ने कहा नेताओं की रैलियां में वह हर जगह पटाखे चला सकते हैं, मगर जब दीपावली या अन्य त्योहार आते हैं तो पटाखों पर प्रतिबंध लगा दिया जाता है। इसको लेकर व्यापारियों में काफी रोष है। जबकि अन्य राज्यों से दिल्ली में पटाखे लाकर खुलेआम चलाए जाते हैं। उन्होंने कहा बड़े दुख की बात है दिल्ली सरकार या दिल्ली नगर निगम ने प्रदूषण को रोकने के लिए कोई भी कार्रवाई को तो किया नहीं है मगर यह पटाखे पर प्रतिबंध करके अपनी जिम्मेवारी से पल्ला झाड़ने की कोशिश करते हैं। जबकि सड़कों पर इतना गंदगी पड़ी होती है और सड़कों पर कूड़ा खुलेआम पड़ा होता है। कोई सफाई का प्रबंध नहीं होता। राजधानी में किसी प्रकार का प्रदूषण रोकने के लिए कोई भी कार्य नहीं किया और बढ़ते प्रदूषण का हवाला देते हुए थोड़े दिन बाद यह ओड एंड इवन नियम को भी ले आएंगे।

गौरतलब है कि दिल्ली सरकार ने सर्दियों के मौसम में वायु प्रदूषण बढ़ने की आशंकाओं के मद्देनजर सभी प्रकार के पटाखों के उत्पादन, भंडारण, बिक्री और उनके इस्तेमाल पर पूरी तरह प्रतिबंध लगाने का निर्णय लिया है। पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने पटाखों के पूर्ण प्रतिबन्ध के बारे में आज बताया कि दिल्ली में सर्दियों के मौसम में वायु प्रदूषण बढ़ने का खतरा रहता है। इस मौसम में पटाखों को जलाने से भी प्रदूषण बढ़ता है। ऐसी स्थिति को देखते हुए पिछले साल की तरह इस बार भी हर प्रकार के पटाखों के उत्पादन , भंडारण, बिक्री एवं उपयोग पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जा रहा है। यह प्रतिबंध एक जनवरी 2025 तक दिल्ली में लागू रहेगा।

कांग्रेस का काम जानना है तो शास्त्री जी को पढ़े–मल्लिकार्जुन खड़गे

एजेंसी

नयी दिल्ली । कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने बिना नाम लिए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेताओं पर हमला बोला और कहा कि कुछ लोग कहते हैं कि पिछले 70 साल में देश में कुछ नहीं हुआ उन्हें पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के उस बयान को पढ़ना चाहिए जो उन्हें देश की आजादी के बाद 10-15 वर्षों के दौरान हुए विकास के कार्यों को लेकर दिया था।

श्री खड़गे ने आज यहां पूर्व गृहमंत्री एवं कांग्रेस के दिग्गज नेता सुशील कुमार शिंदे की पुस्तक फाइव डिकेड इन पॉलिटिक्स के विमोचन के मौके पर कहा कि श्री शास्त्री ने 1965 में तत्कालीन इलाहाबाद (अब प्रयागराज) के एक गांव में जनसभा को संबोधित करते हुए कहा था। उन्होंने कहा, श्री शास्त्री ने कहा

था कि पिछले 10-12 वर्षों में देश में जितने विकास के काम हुए हैं उतने अंग्रेजों के 200 साल के शासनकाल के दौरान नहीं हुए थे। देश में हवाई जहाज का निर्माण हो रहा है। गाड़ियां बन रही हैं। बांध बनाए जा रहे हैं। अस्पताल बन रहे हैं। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा देश में आजादी के बाद की 10-15 वर्षों की अवधि के दौरान भाखड़ा नांगल जैसे बांध बनाए गए, जिससे देश अन्न उत्पादन के मामले में आत्मनिर्भर बना। अस्पताल बनाए गए। शैक्षिण संस्थाएं बनायी गयीं लेकिन कुछ नेताओं को ये सब दिखाई नहीं देता है।

उन्होंने श्री शिंदे को व्यवहार कुशल बताते हुए कहा कि श्री शिंदे खाकी से लेकर खादी का सफ़र अपने सरल स्वाभाव, कड़ी मेहनत और हँसमुख व्यवहार से तय किया। श्री शिंदे की पुस्तक फाइव डिकेड इन पॉलिटिक्स उनकी आत्मकथा है और इसके सह लेखक प्रसिद्ध पत्रकार राशीद किदवई और ये पुलिस अंग्रेस और हिंदी भाषा में उपलब्ध है।

उन्होंने बताया कि इस पुस्तक में एक अहम अध्याय उप राष्ट्रपति का चुनाव है। उन्होंने बताया, कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने श्री शिंदे को उप राष्ट्रपति का उम्मीदवार बनाया था और यह राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के उम्मीदवार भैरो सिंह शेखावत के खिलाफ चुनाव लड़े थे। श्री शिंदे के नाम का प्रस्ताव श्री शरद पवार ने किया जो खुद श्री शेखावत के करीबी मित्रो में थे।

उन्होंने बताया कि उपराष्ट्रपति चुनाव में श्री शेखावत जी 454 वोट मिले तो शिंदेजी को 305 वोट मिले। अब तक हुए उपराष्ट्रपति चुनाव में विपक्षी उम्मीदवार के रूप में श्री शिंदे को ही सबसे ज्यादा वोट मिले हैं।

जम्मू कश्मीर विधानसभा चुनावों के लिए कांग्रेस ने तीसरी सूची जारी की

एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस ने केन्द्र शासित प्रदेश जम्मू कश्मीर में होने वाले विधानसभा चुनावों के लिए 19 उम्मीदवारों की तीसरी सूची जारी की।पार्टी के महासचिव के सी वेणुगोपालन की ओर से आज जारी सूची में 19 उम्मीदवारों के नाम शामिल है। जम्मू कश्मीर में कुल 90 विधानसभा सीटों के लिए 18 सितंबर , 25 सितंबर एवं एक अक्टूबर को तीन चरणों में चुनाव होंगे। चुनाव परिणाम आठ अक्टूबर को जारी किए जायेंगे एवं चुनाव प्रक्रिया 10 अक्टूबर तक सम्पन्न हो जाएगी।

उम्मीदवारों की सूची इस प्रकार है।

निर्वाचन क्षेत्र------उम्मीदवार के नाम

लंगेट-----इरशद अब्दुल गनी

सोपोर---हाजी अब्दुल रशीद डार

वागूरा--कीरी-----एडवोकेट इरफान हफीज लोन

उधमपुर पश्चिम--सुमित मार्गोत्रा

रामनगर (सु)--मूल राज

बानी--सुश्री काजल राजपूत

बिलावर--डा मनोहर लाल शर्मा

बसोहली--चौधरी लाल सिंह

जसखोटा--ठाकुर बलवीर सिंह

हीरानगर--राकेश चौधरी जाट

रामबाग (सु)--यशपाल कुडंल

सांबा---कृष्णन देव सिंह

बिश्राह (सु)--नीरज कुंदन

आर एस पुरा--जम्मू दक्षिण---रमन भल्ला

बहू-टीएस टोनी

जम्मू पूर्व--योगेश साहनी

नगरोटा--बलवीर सिंह

जम्मू पश्चिम--ठाकुर मनमोहन सिंह

मरह (सु)--मूला राम

Name Change
I, Poonam Rani W/o Gulshan Kumar Grover R/o H.No-2746 P, 3rd Floor, H-Block, Aravali Vihar, Sector-49, Faridabad, Haryana-121001, Have Change My Name To Poonam Grover For All Future Purpose

Name Change
I, MOHD JAMSHED ALAM S/O YUNUS ALAM residing at A-2/13-C DDA FLATS INDER LOK DELHI - 110035 have changed my name to JAMSHED ALAM for all future purpose.

Name Change
I, MOHAMMAD ILYAS S/O LAIEQ AHMAD residing at B-1/5-B DDA FLATS INDER LOK DELHI - 110035 have changed my name to MOHD ILYAS for all future purpose.

Name Change
I, hitherto known as ZENEVI R. SINGH daughter of SANJEEV SINGH residing at L-BLOCK, STREET NO-7, MAHIPALPUR, NEW DELHI-110037 have changed my name and shall hereafter be known as ZENEVI ROMAWII.

Name Change
I, Dipak Sah S/o Hari Sah R/o 151/152, Block-H, Dharm Colony, Palam Vihar, Cartarpuri, Gurgaon, Haryana-122017, Have Changed My Name To Deepak Sah For All Future Purpose.

Name Change
I, Sakshi Kataria W/o Saurabh Wahi R/o H.No-371, Second Floor, Near Park, Sector-45, Faridabad-121001, Haryana, Have Changed My Name To Sakshie Kataria For All Future Purpose

Name Change
I, AARYEN SHARMA S/O DEEPAK SHARMA R/O FLAT NO. G-01, TOWER-D2, PARSHAVNATH EXOTICA, GOLF COURSE ROAD, SECTOR-53, GURGAON, HARYANA-122011, have changed my name to AARYEN V SHARMA for all future purpose.

Name Change
I, JATIN SINGH S/O SARVJEET SINGH RESIDING AT D-4/23, S/F, BLOCK-D, KRISHNA NAGAR, DELHI-110051 Declare that JATIN is my given name and my sumame is SINGH

Name Change
I, Janaprakalya /Jana Prakalya V D/o Velusshami R/o Flat.NO-405, KL House NR-27, DLF Phase-3, Nathupur, Gurgaon, Haryana -122002, Have Changed My Name To V Jana Prakalya For All Future Purpose

Name Change
I, Gulshan Kumar S/o Ashok Kumar Grover R/o H.No-2746 P, 3rd Floor, H-Block, Aravali Vihar, Sector-49, Faridabad, Haryana-121001, Have Change My Name To Gulshan Kumar Grover For All Future Purpose

Name Change
I, SULTANA W/O MOHD SAJID residing at 313/103-C AND 313/103-D THIRD FLOOR PLOT NO 17 GALI NO 17 TULSI NAGAR INDER LOK DELHI - 110035 have changed my name to SULTANA REHMAN for all future purpose

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, RAJVIR S/O CHANDAN SINGH R/O H.NO-804, GALI NO-13, MANDOLI EXTN. PO MANDOLI SABOLI. NORTH EAST DELHI-110093 declare that name of my father has been wrongly written as RAM CHANDER in my Pan Card No. DVBPR7910D. The actual name of my father is CHANDAN SINGH which may be amended accordingly.

Name Change
I, JC-829635H Rank-SUB MAJ Name-ES SEENIVASAKAN R/o VPO-OKKARAIPATTI, TEH-AUNDIPATTI, DIST-MADURAI, TAMIL NADU-626517 have changed my mother's name from S SUBBALAKSHMI to SUBBULAKSHMI S for all future purposes, in my service record my mother's date of birth wrongly mentioned as 24/08/1956 instead of her correct date of birth as 22/04/1952 vide affidavit dated 19/08/2024 before Notary Public Jorhat.

Name Change
I, hitherto known as YOGESH KUMAR alias YOGESH KUMAR BADHWAR S/o JAGE RAM BADHWAR R/o A-140, 1st Floor, Subhadra Colony, Sarai Rohilla Delhi-110035 have changed my name and shall hereafter be known as YOGESH KUMAR BADHWAR.

Name Change
I, JC-829635H Rank-SUB MAJ Name-ES SEENIVASAKAN R/o VPO-OKKARAIPATTI, TEH-AUNDIPATTI, DIST-MADURAI, TAMIL NADU-626517 have changed my father's name from E SUBBIAH to SUBBIAH E for all future purposes, in my service record my father's date of birth wrongly mentioned as 24/08/1951 instead of his correct date of birth as 02/04/1944 vide affidavit dated 19/08/2024 before Notary Public Jorhat.

Name Change
I, MAUMUN NISHA mother of NO-16014265X Rank-L/HAV Name-MOHD TANVEER AHMAD R/o C-24/SF, BLOCK-V, SECTOR-C, BHAGWATI VIHAR, UTTAM NAGAR, PO-D.K MOHAN GARDEN, WEST DELHI, DELHI-110059 have changed my name from MAUMUN NISHA to MAIMUN NISHA for all future purposes, in my son□s service record my date of birth wrongly mentioned as 01/07/1967 instead of my correct date of birth as 01/01/1960 vide affidavit dated 10/09/2024 before Notary Public Delhi.

Name Change
I, NO-16113778P Rank-HAV Name-SUGIL O R/o HOUSE-SREE SUGATH, PO-MUNDERI, DIST-KANNUR, KERALA-670591 have changed my father's name from P SREEDHARAN to SREEDHARAN P for all future purposes vide affidavit dated 10/09/2024 before Notary Public, Delhi.

Name Change
I, SANIA HASAN D/O ABDUL RASHID residing at 313/105B 3RD FLOOR TULSI NAGAR INDER LOK DELHI - 110035 have changed my name to SANIA NAAZ for all future purpose.

Name Change
I, JC-829635H Rank-SUB MAJ Name-ES SEENIVASAKAN R/o VPO-OKKARAIPATTI, TEH-AUNDIPATTI, DIST-MADURAI, TAMIL NADU-626517 have changed my daughter's name from KAVYAMITRA to KAVYAMITRA S for all future purposes vide affidavit dated 19/08/2024 before Notary Public, Jorhat.

Name Change
I, JC-829635H Rank-SUB MAJ Name-ES SEENIVASAKAN R/o VPO-OKKARAIPATTI, TEH-AUNDIPATTI, DIST-MADURAI, TAMIL NADU-626517 have changed my wife□s name from S NAGANANTHINI to NAGANANTHINI K for all future purposes vide affidavit dated 19/08/2024 before Notary Public, Jorhat.

सार्वजनिक सूचना
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरी मुवक्किला राम प्यारी पत्नी स्व. श्री रूप राम निवासी A–2/455, जे. जे. कॉलोनी, मदनपुर खादर, बदरपुर, नई दिल्ली 110044 ने अपने बड़े पुत्र राजा बाबू व उसकी पत्नी इन्द्रावती व तीसरे पुत्र मदन व उसकी पत्नी गीता से उनके गलत आचरण, दुर्व्यवहार के कारण अपने तमाम रिश्ते नाते विच्छेद कर लिए हैं तथा उन्हें अपनी तमाम चल–अचल संपत्ति से बेदखल कर दिया है। मेरी मुवक्किला व उनके परिवार का उपरोक्त व्यक्तियों से कोई लेना देना अथवा सम्बन्ध नहीं है यदि उपरोक्त लोग कोई अपराधिक कार्य करते हैं तो उसके ज़िम्मेदार उपरोक्त लोग स्वंय होंगे तथा अगर कोई व्यक्ति उपरोक्त व्यक्तियों से कोई लेन देन या करार करता है तो उसके लिए वह स्वंय ज़िम्मेदार होगा।
स्वर्ण सिंह अधिवक्ता
चैम्बर न. 610, लॉयर्स चेम्बर्स ब्लाक साकेत कोर्ट, नई दिल्ली 110017

Name Change
I, LOKESH KUMAR S/o RAGHUNATH SINGH residing at H. No. - 107, Gali No. 3, Village Biharipur, Near CRPF Camp, North East Delhi, Delhi - 110094 have change the name of my minor son DIVYANSH alias DIVYANSH SINGH aged 13 Years and he shall hereafter be known as DIVYANSH SINGH.

PUBLIC NOTICE
It is brought to the notice of public for general information that the owner of the property bearing Shop No. 7A/68, WEA, Karol Bagh, New Delhi 110005 have entered into an agreement to sell dated 20.03.2024 with my client (Sh. Rajesh Sapra). The said property is the subject matter of the above said Agreement to Sell. Any person now dealing with the afore said property in any manner will solely do so upon his or her own risk and consequences.
Afesh Kumar Advocate
Chamber No. 169 Patiala House Courts, New Delhi 110001

Name Change
I, MD AHAMAD HUSSAIN father of NO-16014265X Rank-L/HAV Name-MOHD TANVEER AHMAD R/o C-24/SF, BLOCK-V, SECTOR-C, BHAGWATI VIHAR, UTTAM NAGAR, PO-D.K MOHAN GARDEN, WEST DELHI, DELHI-110059 have changed my name from MD AHAMAD HUSSAIN to AHAMAD HUSAIN for all future purposes, in my son□s service record my date of birth wrongly mentioned as 01/07/1961 instead of my correct date of birth as 01/01/1954 vide affidavit dated 10/09/2024 before Notary Public Delhi.

Name Change
I, NEETU KAMATH W/o SANJAY KAMATH, R/o RGA-69 DDA Flat Raghubir Nagar, Tagore Garden,S.O West Delhi Delhi - 110027 have changed the name of my minor daughter BHUMI, aged 13 years and she shall hereafter be known as CHAHAT

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, MUSTAKIN SEKH S/o SANTU SEKH, R/o RZA-164 B, Nihal Vihar Nangloi, West Delhi, Delhi -110041 declare that name of mine and my minor son has been wrongly written as MD SK MUSTAKIN and SHEKH MISBAUDDIN in my minor son MISBAUDDIN SEKH aged 16 years in his school record. The actual name of mine and my minor son are MUSTAKIN SK and MISBAUDDIN SEKH respectively, which may be amended accordingly.

PUBLIC NOTICE
To Whom so ever it may concern
Mrs. Payal Sirohi alias Payal Tanwar W/o Mr. Aviraj Sirohi is absolute owner of Property No. WZ-821-822, area measuring 45 Sq. Yds., Out of Khasra No. 298, situated in the abadi known as Nangal Raya, New Delhi and Lost Original Sale deed vide Document No. 2024/8/I/2051, in Book No. 1, Volume No. 2764, Page No. 27 to 44 on 15.04.2024 and FIR for has been Done vide FIR No. 2104948/2024, dated 10/09/2024 if anybody found above mentioned deed kindly contact on-9993838094 within 7 Days
(Advocate Suparna)
Lexicure Law Firm
305, 3RD Floor Aggarwal building pocket 3 Sector 12 Dwarka New Delhi 110075.

Name Change
I, SHIDDAMMA mother of No-16134614M, Rank-SPR, Name-RAMESH GURIKAR residing at VILL-BHATPANHALLI, PO-MANDALGERA, DISTT-KOPPAL, KARNATKA-583232 have changed my name from SHIDDAMMA to SIDDAVVA for all future purposes vide Affidavit Dated 10/09/2024 before Notary Public, Delhi.

Name Change
It is for general information that I, VIMAL PRASAD GUPTA S/o RAGHUVEER SINGH residing at House No.- 525, Munim Colony, Nai Mandi, Muzaffarnagar, Uttar Pradesh - 251001 declare that the name of mine has been wrongly written as VIMAL GUPTA in my minor Son KANHAIYA GUPTA aged 17 Years in his 10th and 12th Class Educational Documents. The actual name of mine is VIMAL PRASAD GUPTA which may be amended accordingly.

D.O.B. Change
I, No. 2607033X Rank-HAV Name Y SUDHAKARA REDDY Father of YASAM VINOOTHNA R/o VPO-AKAVEED, TEH-GIDDAIUR, DIST-PRAKASAM, ANDHRA PRADESH-523372, in my service records my minor daughter's (YASAM VINOOTHNA) date of birth wrongly mentioned as 22/08/2012 instead of her correct date of birth as 22/05/2012 vide Affidavit dated 10/09/2024 before Notary Public, Delhi.

सार्वजनिक सूचना
सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे मुव्विकल श्री प्रदीप कुमार पुत्र श्री अतर सिंह, निवासी 822, मोहल्ला कृष्ण गंज, पिलखुवा, पिलखुवा देहात, गाजियाबाद, हाल जिला हापुड़, उत्तर प्रदेश 245304, प्लाट, जिसका क्षेत्रफल 100 + 100 वर्ग गज, खसरा नंबर 516 व 516–मिन, स्थित ग्राम खेड़ा देहात, परगना डासना, तहसील धौलाना, जिला हापुड़, उत्तर प्रदेश, के मालिक व काबिज दो रजिस्टर्ड बिक्री पत्र दिनांक 11.01.2024 क्रमांक 588, बुक नं0 1, जिल्द सं0 6260, पेज सं0 01–16, व बिक्री पत्र दिनांक 27.12.2023, क्रमांक संख्या 16000, बुक नं0 1, जिल्द सं0 6223, पेज सं0 283–298, के द्वारा मालिक हैं। कथित सम्पत्ति का पुराना आरिजनल रजिस्टर्ड बिक्री पत्र दिनांक 29.03.2007 क्रमांक संख्या 4299, सुनीता शर्मा पत्नी सलिशा कुमार के पक्ष में व आरिजनल बिक्री पत्र दिनांक 17.01.2012, क्रमांक संख्या 977, जिल्द सं0 7778, पेज सं0 49–62, हेमा शर्मा पत्नी शेखर शर्मा के पक्ष में, कही खो गया। जिसके बावत खोने की रपट आन लाइन एल आर नंबर 2107149/2024, दिनांक 10.09.2024 को दर्ज है। वर्तमान में, प्रदीप कुमार उपर्युक्त कथित संपत्ति को गिरवी रखकर लोन ले रहे हैं जो सत्या माइक्रो हाउसिंग फाइनेंस प्रा0 लि0, ब्रांच हापुड़, उत्तर प्रदेश द्वारा फाइनेंस किया जा रहा है। यदि किसी व्यक्ति को कथित दस्तावेज मिले या सम्पत्ति के संबंध में कोई आपत्ति हो तो अद्योहस्ताक्षरी या सत्या माइक्रो हाउसिंग फाइनेंस प्रा0 लि0, ब्रांच हापुड़, उत्तर प्रदेश के समक्ष इस प्रकाशन के 15 दिनों के भीतर अपनी आपत्ति उचित दस्तावेज के साथ रखें/सम्पर्क करें, अन्यथा कथित संपत्ति के संबंध में दावा अवैध व व्यर्थ माना जायेगा।
रुपेश कुमार रौशन अधिवक्ता
डी–803, नन्दग्राम, गाजियाबाद, उ0 प्र0 201003

NANI RESORTS & FLORICULTURE PVT. LTD.
Corp. Off.: ROF Group, Building No. 80, First Floor, Sector-44, Gurgaon-122003, Ph. 0124-4399399

Notice is hereby given to the Public at large that the following booking of residential apartments in the Affordable Housing Project ***"ROF AALAYAS"*** being developed by **M/s NANI RESORTS & FLORICULTURE PVT. LTD.** situated at **Sector 102, Gurugram**, Haryana vide **license no. 11 of 2014 dated 10.06.2014** has been cancelled due to non –payment of installments or allotment amount by successful allottee (s) of their apartments till its due date or any other reason, the information/reminders of which has been given them according to terms of the Haryana Affordable Housing Policy 2013, dated 19/8/2013 (as amended).

Application No.	Carpet Area (Sq. Ft.)	Apartment No.
12934	301.60, 1 BHK (TYPE-8)	A-1304
10030, 12720, 12766, 11391, 10143, 12114	535.4, 2 BHK (TYPE-2)	B-1407, D-1303, A-307, C-1007, D-407, B-1103
11502, 12512, 10900, 10052	534.75, 2 BHK (TYPE-1)	E-802, E-1406, F-606, C-1202

Therefore, all the person/allottee (s) are hereby informed to submit claims/objections in writing, if any, for the cancellation of the said apartments to the undersigned company/developer along with the relevant documents to support their claims/objections within 7 days from the date of publication hereof.

In the absence of any claim within the stipulated period above, it shall be presumed and/or deemed that the allottee (s) or concern has no such claims/objections by virtue of this notice and, if any, the same have been waived or abandoned without any reference to such claims/objections made thereafter and necessary action will be taken as per rules for the process of re-allotment.

For **NANI RESORTS & FLORICULTURE PVT. LTD.**
Place: Gurugram (Haryana)

PUBLIC NOTICE
Public at large is hereby informed that my client Sh. Rajan Singh S/o Sh. Gurdayal Singh R/o RZ-203, Nand Vihar, Dwarka, South West Delhi, Delhi-110078 have severed all his relations with his son namely Dharam Singh and his wife Smt. Karishma and have disowned them from all his moveable and immovable properties, as they are not under the control of my above said client. Any person dealing with the above said Dharam Singh and his wife Smt. Karishma, shall be doing so at his/her/their own risks and responsibilities and my client shall not be responsible for their act(s), deed(s) and misdeed(s).
RAHUL YADAV Advocate
Office at: CH. NO. 741, DWARA COURTS, SEC-10, NEW DELHI-110075
Ph. No. 8802415178

सार्वजनिक सूचना
यह सूचित किया जाता है कि श्री शंतनु डब्लिश पुरी तीसरी मंजिल, छत के अधिकारों सहित, जो प्रॉपर्टी नंबर 177 × 178, जिसका क्षेत्रफल 25.90 + 25.90 = 51.80 वर्ग मीटर, ब्लॉक–F, पॉकेट–4, सेक्टर–16, रोहिणी रेजीडेंशियल स्कीम, रोहिणी, दिल्ली में स्थित है को श्री दिनेश शर्मा से खरीदने का इरादा रखते हैं। संपूर्ण मूल संपत्ति को श्री कपूर चंद और श्री अनिल बंसल ने डी.डी.ए

भाजपा के गोहाना से उम्मीदवार रविंद्र शर्मा ने नामांकन भरा

एजेंसी

सोनीपत। विधानसभा आम चुनाव के तहत नामांकन प्रक्रिया के दौरान गन्नौर विधानसभा से 2, राई विधानसभा से 2 तथा गोहाना विधानसभा से एक उम्मीदवार ने अपना नामांकन दाखिल करवाया। यह जानकारी जिला निर्वाचन अधिकारी एवं उपायुक्त डॉ0 मनोज कुमार ने दी।

उन्होंने बताया कि गन्नौर विधानसभा से इंडियन नेशनल कांग्रेस पार्टी के उम्मीदवार कुलदीप शर्मा तथा आजाद उम्मीदवार के तौर पर राम कुमार ने रिटर्निंग अधिकारी एवं एसडीएम गन्नौर निर्मल नागर को अपना नामांकन सौंपा। वहीं राई विधानसभा से भी एसयूसीआई पार्टी के उम्मीदवार देवेन्द्र तथा आजाद उम्मीदवार के तौरपर राहुल सैनी ने अपना नामांकन रिटर्निंग अधिकारी एवं डीडीपीओ जितेन्द्र कुमार के समक्ष अपना नामांकन प्रस्तुत किया। जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि गोहाना विधानसभा से भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार अरविंद कुमार शर्मा ने अपना नामांकन रिटर्निंग अधिकारी एवं अतिरिक्त उपायुक्त अंकिता चौधरी के समक्ष अपना नामांकन दाखिल करवाया। इस दौरान उनकी धर्मपत्नी रीटा शर्मा ने भी कवरिंग उम्मीदवार के तौर पर अपना नामांकन दाखिल किया। नामांकन प्रक्रिया के दौरान खरखौदा, सोनीपत व बरोदा विधानसभा से किसी भी उम्मीदवार ने अपना नामांकन दर्ज नहीं करवाया। उन्होंने बताया कि उम्मीदवारों द्वारा नामांकन पत्र गुरुवार 12 सितंबर, 2024 तक भरे जा सकते हैं।

भाजपा छोड़कर तरुण जैन ने किया निर्दलीय चुनाव लड़ने का ऐलान

हिसार। हिसार विधानसभा के निर्दलीय उम्मीदवार तरुण जैन 10 सितंबर को नामांकन भरेंगे। डाबड़ा चौक पुल के पास स्थित मुख्य चुनाव कार्यालय में 10 सितंबर को प्रातः 8.30 बजे जनकल्याण के निमित हवन किया जाएगा। इसके बाद तरुण जैन समर्थकों के साथ नामांकन के लिए रवाना होंगे। समाजसेवी तरुण जैन ने बताया कि समर्थकों व कार्यकर्ताओं का उत्साह देखते हुए उन्होंने हिसार के हितों के लिए चुनाव लडने् का निश्चय किया है। इसी संदर्भ में 10 सितंबर को नामांकन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि चुनाव लडने् की घोषणा के बाद से ही उन्हें विभिन्न वर्गों से लगातार समर्थन मिल रहा है। नामांकन के दौरान भी हिसार शहर के हर क्षेत्र व हर वर्ग के साथी मौजूद रहेंगे। तरुण जैन ने कहा कि उनका एकमात्र उद्देश्य हिसार की जनता को मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करवाना एवं सही मायने में हिसार का विकास करना है। उन्होंने कहा कि हिसार में सीवरेज व्यवस्था ठप्प पड़ी है। जगह-जगह कूड़े के ढेर लगे हैं और जनता टूटी-फूटी व गड्ढों से युक्त सडक़ों से आवागमन करने के लिए मजबूर है। इसी तरह बेसहारा पशुओं के कारण हिसारवासी हादसों का शिकार हो रहे हैं। इतना ही नहीं स्वच्छ पेयजल के लिए भी नागरिक तरस रहे हैं। थोड़ी सी बारिश होते ही जलभराव की समस्या को झेलना पड़ता है।

नामांकन के चौथे दिन 4 उम्मीदवारों ने किया नामांकन

रेवाड़ी। हरियाणा विधानसभा के 15वें आम चुनावों के लिए नामांकन भरने की प्रक्रिया 12 सितंबर तक जारी है। नामांकन प्रक्रिया के चौथे दिन 74-रेवाड़ी विधानसभा से लक्ष्मण सिंह यादव व सविता यादव ने भारतीय जनता पार्टी व चिरंजीव राव व अजय सिंह ने इंडियन नेशनल कांग्रेस प्रत्याशी के तौर पर अपना नामांकन दाखिल किया। आरओ एवं एसडीएम रेवाड़ी सुरेंद्र सिंह द्वारा नामांकन प्राप्त किए गए। बावल व कोसली विधानसभा क्षेत्र से किसी उम्मीदवार ने नामांकन दाखिल नहीं किया। उपायुक्त एवं जिला निर्वाचन अधिकारी अभिषेक मीणा ने बताया कि उम्मीदवारों द्वारा नामांकन पत्र गुरूवार 12 सितंबरए 2024 तक भरे जा सकते हैं। शुक्रवार 13 सितंबर को नामांकन पत्रों की समीक्षा करते हुए छंटनी की जाएगी। सोमवार 16 सितंबर तक नामांकन वापिस लिए जा सकते हैं। नामांकन प्रक्रिया के दौरान उम्मीदवारों को रिटर्निंग अधिकारी सहायक रिटर्निंग अधिकारी के कार्यालय में अपने साथ भारत निर्वाचन आयोग की ओर से निर्धारित संख्या में ही लोगों को लाने की अनुमति होगी। उम्मीदवार अपना नामांकन पत्र सम्बंधित रिटर्निंग अधिकारी व सहायक रिटर्निंग अधिकारी के कार्यालय में प्रातः 11 बजे से लेकर दोपहर बाद 3 बजे तक जमा करवा सकते हैं।

डीएसपी गीतिका जाखड़ के निलंबन की मांग पर हड़ताल पर रहे वकील

हिसार। जींद की डीएसपी गीतिका जाखड़ व वकीलों के बीच हुए विवाद के बाद हिसार में भी वकीलों का गुस्सा फूट पड़ा है। हिसार के वकील चौथे दिन भी न्यायिक परिसर में हड़ताल पर रहे और डीएसपी गीतिका जाखड़ के निलंबन की मांग उठाई। जिला बार एसोसिएशन हिसार के प्रधान विनय बिश्नोई व सचिव गौरव बेनीवाल ने कहा कि जींद बार एसोसिएशन के समर्थन में हमारी हड़ताल जारी रहेगी। हम डीएसपी गीतिका जाखड़ के निलंबन की मांग पर अड़िग हैं और जब तक मांग पूरी नहीं होती हमारी हड़ताल जारी रहेगी। हिसार बार एसोसिएशन के नोटरी पब्लिक एवं ओथ कमिश्नर द्वारा भी अटेस्टेशन के कार्यो को बंद कर दिया गया है। वकीलों की हड़ताल के कारण हिसार की अदालतों में कामकाज प्रभावित हुआ है और मामलों की समुचित सुनवाई नहीं हो पा रही है। वकीलों की हड़ताल से प्रदेश स्तर के पुलिस प्रशासन पर भी गीतिका जाखड़ मामले में भारी दवाब है।

राहुल गांधी की ये आदत में शुमार है कि वे बाहर जाकर देश को गालियां देते हैं : अनिल विज

एजेंसी

अंबाला। पूर्व गृह मंत्री अनिल विज ने राहुल गांधी पर पलटवार करते हुए कहा कि राहुल गांधी की ये आदत में शुमार है कि वह बाहर जाकर देश को गालियां देते हैं। देश में रहते हुए भी ये कई बार ऐसा कर चुके जिससे लगता है की ये बाहर वाले देशों की भाषा बोलते हैं। राहुल गांधी द्वारा टेक्सास में ये कहा गया कि भाजपा और आरएसएस की धारणा है कि महिलाएं घर पर बैठे, रसोई में खाना बनाएं और ज्यादा बात न करें इस बयान पर आज पूर्व गृह मंत्री अनिल विज मीडिया कर्मियों के सवाल का जवाब दे रहे थे। विज ने कहा कि राहुल के अंदर देश कितना है ये सारा हिंदुस्तान जानता है। राहुल गांधी को आरएसएस के बारे में कोई जानकारी नहीं है और राहुल गांधी को पता होने चाहिए कि आरएसएस में भी महिलाओं की विंग बनी हुई है। राहुल गांधी ने यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्सास में विद्यार्थियों से गुफ्तगूं के

दौरान ये भी कहाकि लोकसभा नतीजे आने के बाद यह साफ़ है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और आरएसएस का डर लोकसभा चुनाव के बाद लगभग गायब हो गया है।

राहुल के इस ब्यान पर विज ने फिर से राहुल गाँधी पर हमला बोला और कहा कि राहुल गाँधी को पता होना चाहिए कि आज भी रूस जैसी महाशक्ति यूक्रेन के साथ युद्ध में मध्यस्था करने के लिए नरेंद्र मोदी का नाम लेती हैं और यही बात इटली की प्रधानमंत्री ने भी कही है कि हिंदुस्तान इस मामले में मध्यस्था कर सकता है। ये नरेंद्र मोदी की मजबूती का सबसे बड़ा सबूत है।

राहुल गांधी ने टेक्सास में चीन की तारीफ करते हुए कहा कि चीन ग्लोबल व्यापार की तरफ ध्यान देता है लेकिन भारत में बेरोजगारी और व्यापार का बुरा हाल है। विज ने इस पर भी प्रतिक्रिया दी और कहा कि ÷मैंने तो पहले ही कहा है कि राहुल गांधी विदेशों की भाषा बोलते हैं अब ये नहीं पता कि राहुल गांधी किस किस देश के एजेंट हैं, लेकिन बोलते ये बाहर के देशों की भाषा ही हैं।

हरियाणा अध्यापक पात्रता परीक्षा 7 व 8 दिसम्बर को होगी : डॉ. वी.पी. यादव

एजेंसी

भिवानी। हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी द्वारा हरियाणा अध्यापक पात्रता परीक्षा-2024 (एचटेट) का आयोजन 7 व 8 दिसम्बर, 2024 (शनिवार-रविवार) को करवाया जा रहा है। शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. वी.पी. यादव ने बताया कि सरकार ने एचटेट परीक्षा के आयोजन की अनुमति दे दी है। उन्होंने बताया कि एचटेट परीक्षा के रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया जल्द ही शुरू कर दी जाएगी। बोर्ड अध्यक्ष डॉ. वी.पी. यादव ने आज यहां बताया कि हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड द्वारा 7 दिसम्बर को लेवल-3 की परीक्षा सायं 3ः00 बजे से 5:30 बजे तक एवं 8 दिसम्बर को लेवल-2 की परीक्षा सुबह 10:00 बजे से 12:30 बजे तक व लेवल-1 की परीक्षा सायं 3:00 बजे से 5:30 बजे तक आयोजित करवाई जाएगी। परीक्षा से सम्बन्धित सूचना बुलेटिन शीघ्र ही

बोर्ड की अधिकारिक वेबसाइट पर अपलोड कर दी जाएगी।

उन्होंने बताया कि इस बार भी प्रश्न पत्र की सुरक्षा को लेकर शिक्षा बोर्ड ने प्रश्न पत्रों पर क्यूआर कोड, अल्फा न्यूमेरिक और हिडन फीचर का फार्मूला अपनाया जाएगा। अगर कोई प्रश्न पत्र परीक्षा केन्द्र से आऊट होता है तो तुरंत उसका पता बोर्ड मुख्यालय की टीम को लग जाएगा। बोर्ड अध्यक्ष ने बताया कि शिक्षा बोर्ड ने हाई सिक्योरिटी कैमरे और जैमर परीक्षा केन्द्रों पर लगाने के लिए प्रक्रिया आरम्भ की हुई।

उन्होंने आगे बताया कि यदि कोई अभ्यर्थी एक लेवल के लिए एक से अधिक आवेदन करता है, तो उसका आवेदन/पात्रता रद्द कर दी जाएगी। उन्होंने आगे बताया कि हरियाणा अध्यापक पात्रता परीक्षा-2023 में 2,29,223 अभ्यर्थी 408 परीक्षा केन्द्रों पर प्रविष्ट हुए थे, जिसमें लेवल-1 (पीआरटी) परीक्षा में 47,700, लेवल-2 (टीजीटी) में 1,11,212 तथा लेवल-3 (पीजीटी) में 70,311 अभ्यर्थी शामिल हैं।

जेजेपी-एएसपी गठबंधन की दूसरी लिस्ट जारी, 12 मजबूत उम्मीदवारों का ऐलान

एजेंसी

चंडीगढ़। जननायक जनता पार्टी और आजाद समाज पार्टी (कांशीराम) गठबंधन ने हरियाणा विधानसभा चुनाव के लिए उम्मीदवारों की दूसरी सूची जारी कर दी है। जेजेपी-एएसपी ने दूसरी सूची में 12 मजबूत उम्मीदवारों की घोषणा की, इनमें 10 सीटों पर जेजेपी और दो सीटों पर एएसपी ने प्रत्याशी उतारे है। जेजेपी राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ अजय सिंह चौटाला की स्वीकृति और एएसपी प्रमुख चंद्रशेखर आजाद की सहमति के बाद गठबंधन ने यह लिस्ट जारी की।

जेजेपी की तरफ से पंचकुला में सुशील गर्ग पार्षद, अंबाला कैंट में अवतार करधान सरपंच, पिहोवा में डॉ सुखविंदर कौर, कैथल में संदीप गढ़ी चुनाव लड़ेंगे। गन्नौर में अनिल त्यागी, सफीदों में सुशील बैरागी सरपंच, गढ़ी सांपला किलोई में एडवोकेट पंडित सुशीला देशवाल,

क्र०सं०	विधानसभा सीट का नंबर एवं नाम		जननायक जनता पार्टी उम्मीदवार	आजाद समाज पार्टी (कांशीराम) उम्मीदवार
1	2	पंचकुला	सुशील गर्ग पार्षद	---
2	4	अंबाला कैंट	अवतार करधान सरपंच	---
3	5	अंबाला सिटी	---	पारूल नागपाल
4	14	पेहवा	डॉ सुखविंदर कौर	---
5	17	कैथल	संदीप गढ़ी	---
6	19	नीलोखेड़ी	---	कर्ण सिंह भुक्कल
7	28	गन्नौर	अनिल त्यागी	---
8	35	सफीदों	सुशील बैरागी सरपंच	---
9	61	गढ़ी सांपला - किलोई	एडवोकेट पंडित सुशीला देशवाल	---
10	75	पटौदी	अमर नाथ जेई	---
11	77	गुड़गांव	अशोक जांगड़ा	---
12	80	फिरोजपुर झिरका	जान मोहम्मद	---

पटौदी में अमरनाथ जेई, गुड़गांव में अशोक जांगड़ा और फिरोजपुर झिरका में जान मोहम्मद उम्मीदवार होंगे। वहीं एएसपी की ओर से अंबाला सिटी में पारूल नागपाल और नीलोखेड़ी में कर्ण सिंह भुक्कल को चुनावी मैदान में उतारा है। इससे पहले जेजेपी-एएसपी ने प्रथम सूची में 19 उम्मीदवारों की घोषणा की थी। जेजेपी-एएसपी गठबंधन के घोषित उम्मीदवारों में पंचकूला प्रत्याशी सुशील गर्ग पंचकुला नगर निगम में मौजूदा पार्षद हैं और इनके बेटे भी निगम पार्षद रह चुके हैं। अंबाला कैंट प्रत्याशी गांव करधान निवासी अवतार पैक्स के चेयरमैन रह चुके हैं। पिहोवा उम्मीदवार डॉ सुखविंदर कौर वरिष्ठ नेता एवं पूर्व उम्मीदवार प्रो. रणधीर चीका की धर्मपत्नी हैं और डीएवी कॉलेज पिहोवा में राजनीतिक विज्ञान की प्रोफेसर भी रह चुकी है। सुखविंदर कौर पार्षद भी रही है और फिलहाल एक शिक्षण एकेडमी चला रही है। कैथल प्रत्याशी संदीप गढ़ी कैथल हलके के जेजेपी अध्यक्ष हैं। गन्नौर प्रत्याशी अनिल त्यागी जेजेपी के हलका अध्यक्ष और इनके पिता विधानसभा का चुनाव लड़ चुके हैं। सफीदों उम्मीदवार सुशील बैरागी सरपंच है और जेजेपी के हलका अध्यक्ष हैं। फिरोजपुर झिरका प्रत्याशी जान मोहम्मद जेजेपी जिला प्रभारी हैं।

बढ़ते साइबर अपराध के चलते साइबर सुरक्षा के उपाय लागू करना महत्वपूर्ण : डॉ. प्रज्ञा

एजेंसी

हिसार। गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय योजना इकाई के सौजन्य से 'युवाओं की साइबर सुरक्षा के लिए मीडिया साक्षरता' कार्यक्रम का आयोजन

किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अथिति के रूप में डॉ प्रज्ञा कौशिक उपस्थित रही। डा. प्रज्ञा कौशिक ने स्वयंसेवकों को बताया कि साइबर क्राइम पूरे विश्व में लगातार बढ़ता ही जा रहा है, इसलिए साइबर सुरक्षा के उपायों को लागू करना महत्वपूर्ण है। उन्होंने प्रतिभागियों को साइबर सुरक्षा से जुड़े भारतीय कानून के बारे में जागरूक कराया। साइबर सुरक्षा के सुदृढ़ता के लिए भारत सरकार के कदम जैसे की गृह मंत्रालय के तहत भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (आई4सी) ने नागरिकों को 'साइबर अपराध स्वयंसेवकों' के रूप में पंजीकृत करने की अनुमति देने के उद्देश्य से साइबर अपराध स्वयंसेवक कार्यक्रम शुरू किया। राष्ट्रीय साइबर समन्वय केंद्र (एनसीसीसी), साइबर स्वच्छता केंद्र, भारत में साइबर सुरक्षा को बेहतर बनाने के सुझाव अनेक सुझाव दिए गए।

हम आंकड़ों के आधार पर प्रमाणिकता के साथ बात करते है : ज्ञान चंद गुप्ता

एजेंसी

पंचकूला। ज्ञान चंद गुप्ता ने आज पंचकूला विधानसभा के ग्रामीण क्षेत्र बरवाला में विधिवत पूजा-पाठ, हवन यज्ञादि करके चुनाव कार्यालय का उद्घाटन किया। इस अवसर पर ज्ञान चंद गुप्ता ने कहा, भारतीय जनता पार्टी अनुशासित कार्यकर्ताओं का संगठन है जो अपने हर चुनाव में चुनाव आचार संहिता का पूरी निष्ठां से पालन करते हुए सुचितापूर्ण ढंग से विकास के मुद्दों पर चुनाव लड़ती है, हमने पिछले पांच वर्ष के कार्यकाल में पंचकूला विधानसभा में लिए लगभग साढ़े पांच हज़ार करोड़ रुपये के विकास कार्य करवाए जिसमे बरवाला के ग्रामीण क्षेत्रो को पूरी प्राथमिकता दी गयी है, हम आंकड़ों के आधार पर प्रमाणिकता के साथ बात करते है, बरवाला में करवाए गए विकास के कार्यो जैसे सामुदायिक केंद्र, स्वास्थ्य केंद्र, शिक्षा, सड़क, पानी, बिजली

इत्यादि से क्षेत्र की बड़ी आबादी को भरपूर लाभ मिल रहा है, बरवाला आज विकास की मुख्यधारा से जुड़ चुका है, 2014 के पहले के बरवाला में और आज 2024 के बरवाला में जमीन आसमान का फर्क साफ़ देखा जा सकता है, विकास की यही गति हरियाणा सरकार के तीसरे कार्यकाल में भी जारी रहेगी। इस मौके पर जिला प्रभारी प्रमोद कौशिक ने कहा पंचकूला में भाजपा के पक्ष में बहुत अच्छा माहौल है, पिछले दस वर्षो के कार्यकाल में ज्ञान चंद गुप्ता द्वारा करवाए के अनगिनत विकास के कार्यों से पंचकूला की जनता बहुत खुश है और पंचकूला से लगातार तीसरी बार ज्ञान चंद गुप्ता को प्रचंड बहुमत से जीता कर हरियाणा में लगातार तीसरी बार भाजपा की सरकार बनाने का मन बना चुकी है। इस अवसर पर जिला अध्यक्ष दीपक शर्मा ने कहा, हाल में सम्पन्न लोकसभा चुनाव में जिस प्रकार हमने पंचकूला विधानसभा में शानदार जीत दर्ज़ की, उसी प्रकार इस विधानसभा चुनाव में हम दुगुनी ताकत के साथ शानदार प्रदर्शन करते हुए पंचकूला से ज्ञान चंद गुप्ता को बड़े मार्जिन से प्रचंड जीत दिलाने का कार्य करेंगे। इस अवसर पर बरवाला मंडल प्रधान गौतम राणा, पूर्व सरपंच, वर्तमान सरपंच, मंडल पदाधिकारी, वरिष्ठ कार्यकर्ता, स्थानीय जनता एवं कार्यकर्ता बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

भाजपा का जनाधार खत्म कांग्रेस सरकार बनाएगीः हुड्डा

एजेंसी

सोनीपत। सोनीपत के गन्नौर विधानसभा से कांग्रेस उम्मीदवार और पूर्व विधानसभा अध्यक्ष कुलदीप शर्मा ने अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। इस मौके पर उनके साथ हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा भी मौजूद थे। नामांकन के बाद हुड्डा ने अनाज मंडी में जनसभा को संबोधित किया, जहां

उन्होंने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि राज्य में भाजपा का जनाधार खत्म हो रहा है और इस बार कांग्रेस बहुमत के साथ सरकार बनाएगी। हुड्डा ने कांग्रेस के 41 प्रत्याशियों की सूची जारी होने की जानकारी देते हुए कहा कि बाकी उम्मीदवारों के नामों का ऐलान जल्द किया जाएगा। उन्होंने जनता से अपील की कि वे कुलदीप शर्मा को भारी बहुमत से जिताकर विधानसभा भेजें।

गन्नौर से दो बार विधायक व पूर्व स्पीकर रहे कुलदीप शर्मा ने कहा कि गन्नौर विधानसभा में ये उनका चौथा चुनाव है। उन्होंने अपना नामांकन दाखिल किया। इनके राजनीति के सफर में इन्हें साल 2009 में गन्नौर से विधायक का चुनाव जीतने के साथ स्पीकर बनाया गया था। साल 2014 में गन्नौर से दूसरी बार विधानसभा चुनाव जीता था, लेकिन साल 2019 में भाजपा से हारने के बाद एक बार फिर मैदान में हैं।

हरियाणा कांग्रेस प्रभारी दीपक बाबरिया की तबीयत बिगड़ी

चंडीगढ़। हरियाणा कांग्रेस प्रभारी दीपक बाबरिया की तबियत बिगडने् पर उन्हें सोमवार को अल सुबह दिल्ली स्थित एम्स अस्पताल में भर्ती कराया गया। कई घंटे की जांच के बाद डॉक्टरों ने उन्हें छुट्टी तो दे दी है लेकिन अगले दो से तीन दिन तक पूरी तरह आराम करने की सलाह दी है। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष दीपक बाबरिया पिछले कई दिनों से लगातार बैठकों में शामिल हो रहे हैं। कांग्रेस व आम आदमी पार्टी (आआपा) के बीच गठबंधन को लेकर बनी संयुक्त कमेटी में भी दीपक बाबरिया शामिल थे। इस बैठक के बाद आज गठबंधन को लेकर दोनों दलों की तरफ से अंतिम निर्णय लेकर औपचारिक ऐलान किया जाना था। इस बीच तड़के बीपी बढ़ने से दीपक बाबरिया की तबियत बिगड़ गई। जिसके बाद उन्हें एम्स में ले जाया गया, जहां कई घंटे तक डॉक्टरों ने उन्हें अपनी निगरानी में रखा और उनका इलाज किया।

विधानसभा चुनावों के मद्धेनजर पुलिस अधीक्षक ने पुलिस- पब्लिक कोर्डिनेशन कमेटी की बैठक ली

एजेंसी

सिरसा। आगामी 5 अक्तूबर को होने वाले हरियाणण विधानसभा चुनाव को जिला में पूरी तरह से शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन करवाने के लिए पुलिस अधीक्षक विक्रांत भूषण ने आज अपने कार्यालय में पुलिस पब्लिक कमेटी के सदस्यों तथा अन्य गणमान्य लोगों के साथ बैठक की । उन्होंने इस अवसर पर बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि आगामी विधानसभा चुनावों को लेकर सिरसा पुलिस पूरी तरफ से अलर्ट है तथा सुरक्षा के कड़े प्रबंध किए जा रहे है । पुलिस अधीक्षक विक्रांत भूषण ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि चुनावों को शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन करवाने तथा कानूना व्यवस्था बनाए रखने के लिए जन सहयोग अति आवश्यक है । उन्होंने कहा कि पुलिस और आमजन के बेहतर समन्वय से ही अपराध एवं अपराधियों तथा गैरकानूनी धंधा करने वालों पर कारगर ढंग से अंकुश लगाया जा सकता है,इसलिए जिला में शांतिपूर्ण मतदान करवाने के लिए कमेटी के सभी सदस्य व आमजन पुलिस का सहोयग करें । पुलिस अधीक्षक ने कहा कि पुलिस और जनता एक दूसरे के पूरक है,इसलिए किसी भी अभियान की शत प्रतिशत

सफलता के लिए जन सहयोग अति आवशयक है । इसलिए आमजन अपराध व अपराधियों तथा गैर कानूनी धंधा करने वालों पर शिकंजा कसने के लिए पुलिस का पूर्ण सहयोग करें । उहोंने कहा कि पुलिस की समाज में कानून व्यवस्था बनाए रखने व अपराध व अपराधियों पर शिकंजा कसने की अहम भूमिका होती है ,इसलिए पुलिस की कार्य प्रणाली से आम आदमी का जीवन जुड़ा होता है,ऐसे में आमजन को पुलिस से अपेक्षाएं बढ़ रही हैं । पुलिस अधीक्षक ने पुलिस-पब्लिक कमेटी की बैठक लेकर आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए कहा कि पुलिस और पब्लिक के बेहतर समन्वय से ही एक बेहतर समाज स्थापना की जा सकती है । उन्होंने कहा कि समाज में शांति एवं सुरक्षा का माहौल बनाए रखने के लिए पुलिस दिन-रात कार्य कर रही, इसलिए पुलिस और पब्लिक के बीच बेहतर समन्वय स्थापित कर समाज को एक नई दिशा में ले जाया जाए ।

विधानसभा चुनाव के लिए अब तक भरे गये 13 नामांकनः मोनिका गुप्ता

एजेंसी

नारनौल। हरियाणा विधानसभा आम चुनाव-2024 के लिए नामांकन प्रक्रिया के तहत जिला में 10 नामांकन पत्र प्राप्त हुए। जिले में अब तक 13 नामांकन भरे गए हैं। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं उपायुक्त मोनिका गुप्ता ने यह जानकारी देते हुए बताया कि विधानसभा चुनाव के लिए नामांकन प्रक्रिया 12 सितंबर 3 बजे तक चलेगी। नामांकन सुबह 11 से दोपहर बाद तीन बजे तक किया जा सकता है।

नांगल चौधरी विधानसभा क्षेत्र के लिए चार, महेंद्रगढ़ विधानसभा क्षेत्र के लिए दो, अटेली विधानसभा क्षेत्र के लिए तीन तथा नारनौल विधानसभा क्षेत्र के लिए एक उम्मीदवार ने नामांकन किया। नांगल चौधरी विधानसभा क्षेत्र के लिए भारतीय जनता पार्टी से डा. अभय सिंह यादव ने वहीं कवरिंग कैंडिडेट के तौर पर उनकी धर्मपत्नी कला ने, वीर लक्ष्या पार्टी से सागर चौहान तथा निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर करतार सिंह ने नामांकन भरा। महेंद्रगढ़ विधानसभा क्षेत्र के लिए इंडियन नेशनल कांग्रेस पार्टी से राव दान सिंह ने, राष्ट्रवादी जनलोक पार्टी (सत्य) से राकेश सिंह ने नामांकन भरा। नारनौल विधानसभा

क्षेत्र के लिए निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर उमाकांत ने तथा अटेली विधानसभा से जननायक जनता पार्टी और आजाद समाज पार्टी के गठबंधन से आयुषी यादव ने नामांकन भरा। वहीं अभिमन्यु यादव ने इनके कवरिंग कैंडिडेट के तौर पर नामांकन पत्र भरा। इसी क्रम में अटेली से निर्दलीय प्रत्याशी राव ओमप्रकाश इंजीनियर ने भी अपना नामांकन भरा।

देवीलाल के पोते आदित्य चौटाला नामांकन भरा, इनेलो सुप्रीमो ओमप्रकाश चौटाला साथ रहे

एजेंसी

सिरसा। देश के उप प्रधानमंत्री और हरियाणा के मुख्यमंत्री रहे ताऊ देवीलाल के पोते आदित्य चौटाला आज अपना नामांकन दाखिल कर दिया है। एक दिन पहले ही से बागी होकर उन्होंने INLD (इनेलो) जॉइन की थी। INLD के टिकट पर सिरसा की डबवाली विधानसभा से नामांकन पत्र दाखिल किया। इस दौरान INLD सुप्रीमो ओमप्रकाश चौटाला साथ रहे।

नामांकन दाखिल करने से पहले आदित्य चौटाला डबवाली के ऐतिहासिक गुरुद्वारा श्री चोरमार साहिब में पहुंचे और श्री गुरु ग्रंथ साहिब के आगे शीश नवाया। इससे पहले आदित्य ने रविवार को ढ्ढहरुष्ठ सुप्रीमो ओम प्रकाश चौटाला का भी आशीर्वाद प्राप्त किया था और उनके हाथों से ही टिकट लिया था। बता दें कि आदित्य चौटाला भाजपा की पहली सूची में नाम नहीं आने के कारण बागी हो गए थे। 8 सितंबर को उन्होंने समर्थकों से चौटाला गांव में मीटिंग की और ऐलान किया वह INLD में शामिल होंगे। इसके बाद अभय चौटाला ने मंच से ही आदित्य को डबवाली से उम्मीदवार बनाने की घोषणा की।

घर से मतदान के लिए बुजुर्गों और दिव्यांग मतदाताओं को उपलब्ध कराए जा रहे 12-डी फॉर्मः अभिषेक मीणा

एजेंसी

रेवाड़ी। हरियाणा विधानसभा के 15वें आम चुनाव 2024 के चलते जिला में स्वीप गतिविधियों के माध्यम से मतदाताओं को मतदान के लिए जागरूक किया जा रहा है। जिला प्रशासन का लक्ष्य है कि कोई भी योग्य पात्र व्यक्ति मतदान करने से वंचित न रहे, जिसके लिए मतदाताओं को विशेष सुविधाएं प्रदान करते हुए मतदान प्रकिया में सहभागी बनाने के लिए हरसंभव प्रयास किए जा रहे हैं। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं उपायुक्त अभिषेक मीणा ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग की ओर से 40 प्रतिशत या उससे अधिक प्रतिशत रखने वाले दिव्यांग व्यक्ति व 85 वर्ष से अधिक आयु के बुजुर्ग को घर से मतदान करने की वैकल्पिक सुविधा प्रदान करने का निर्णय लिया है। उन्होंने बताया कि 40 प्रतिशत दिव्यांग व्यक्ति व 85 वर्ष से अधिक आयु के बुजुर्ग को घर से मतदान करने के लिए फार्म 12 डी भरकर अपनी सहमति देते हुए मंगलवार 10 सितंबर तक रिटर्निंग अधिकारी को आवेदन कर सकते हैं। ऐसे में कोई भी उपरोक्त व्यक्ति मतदान

से अछूता ना रहे इसके लिए सभी बीएलओ द्वारा घर घर जाकर फार्म 12 डी उपलब्ध कराए जा रहे हैं। जिला निर्वाचन अधिकारी अभिषेक मीणा ने कहा कि अगर कोई व्यक्ति बूथ पर जाकर मतदान करना चाहता है तो उसे फार्म 12 डी भरकर देने को आवश्यकता नही है। उन्होंने बताया कि दिव्यांग मतदाताओं को दिव्यांगता प्रमाण पत्र की एक प्रति जमा करवानी होगी। उम्मीदवारों को ऐसे निर्वाचकों की एक सूची भी प्रदान की जाएगी, यदि वे प्रक्रिया पर नजर रखने के लिए अपने प्रतिनिधियों को नियुक्त करना चाहते हैं। मतदान अधिकारियों की टीम मतदाता का वोट लेने के लिए उसके पते पर पहुंचेगी। मतदाताओं को उनके दौरे के बारे में पहले से ही सूचित कर दिया जाएगा। बीएलओ दिव्यांग व 85 प्लस आयु के मतदाताओं के घर से फार्म-12 डी प्राप्त करेंगे।

अवादा समूह ने इंटरनेशनल सोलर फेस्टिवल में प्रदर्शित की सौर ऊर्जा की शक्ति

एजेंसी

नयी दिल्ली। एकीकृत ऊर्जा कंपनी अवादा समूह ने इंटरनेशनल सोलर फेस्टिवल में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज की और अपने विविध पोर्टफोलियो, सौर ऊर्जा उत्पादन, ग्रीन हाइड्रोजन और स्थायी ऊर्जा समाधानों का प्रदर्शन किया। इंटरनेशनल सोलर अलायन्स (आईएसए) द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में उज्ज्वल भविष्य के लिए सौर ऊर्जा की भूमिका और सोलर एनर्जी की और प्रगति कैसे हो इस पर चर्चा की गयी। कंपनी ने आज यहां जारी बयान में कहा कि यह प्रदर्शनी अवादा ग्रुप की अपने सभी वर्टिकल्स में अत्याधुनिक तकनीक एवं नवीन अनुसंधानों द्वारा ग्रीन एनर्जी का ज़्यादा से ज़्यादा उत्पादन एवं वितरण करने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। अवादा ग्रुप के स्टॉल ने सरकार और उद्योग के प्रतिनिधियों दोनों का ध्यान आकर्षित किया। सभी ने अवादा जैसी कंपनी के ऊर्जा के क्षेत्र में किए जा रहे सतत प्रयासों की सराहना की। इसमें दुनिया भर से नीति निर्माता, प्रमुख उद्योगपति, अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ, वक्ता और ग्रीन एनर्जी एवं रिन्यूएबल एनर्जी के बारे में अधिक जानने को उत्सुक एंटरप्रेन्योर ने हिस्सा लिया। अवादा ग्रुप के अध्यक्ष विनीत मित्तल ने भारत की हरित ऊर्जा क्षेत्र में बढ़ती भूमिका और उद्योगों के डीकार्बोनाइजेशन में सौर ऊर्जा के महत्व पर अपने विचार रखे और बताया कि कैसे भारत का रिन्यूएबल एनर्जी क्षेत्र, वैश्विक पर्यावरण संरक्षण की समस्या का समाधान कर सकता है।

आने वाले दशकों में 350 से 400 हवाई अड्डों का संचालन कर सकता है देशः नायडू

नयी दिल्ली। केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री किंजरापु राममोहन नायडू ने देश भर में क्षेत्रीय हवाई संपर्क को महत्वपूर्ण रूप से विस्तारित करने की योजना की घोषणा करते हुये कहा कि आने वाले 20 से 25 वर्षों में भारत 350 से 400 हवाई अड्डों का संचालन कर सकता है। नागरिक उड्डयन मंत्रालय और फिक्की के भारत क्षेत्रीय हवाई गतिशीलता सम्मेलन 2024 को संबोधित करते हुए उन्होंने क्षेत्रीय संपर्क योजना उड़ान (उड़े देश का आम नागरिक) को 2027 में इसकी वर्तमान समाप्ति तिथि से आगे दस वर्षों के लिए बढ़ाने की सरकार की मंशा बताई। श्री नायडू ने कहा, ÷ हमारा लक्ष्य आरसीएस उड़ान योजना को अगले दस वर्षों के लिए बढ़ाना है। हम इसे और भी प्रभावशाली बनाने के लिए एक नया कार्यक्रम तैयार कर रहे हैं, न केवल नागरिक उड्डयन क्षेत्र के लिए बल्कि इस देश के आम आदमी को ध्यान में रखते हुए और उनके लिए हवाई यात्रा को और अधिक किफायती बनाते हुए। 2016 में शुरू की गई उड़ान योजना ने भारत में क्षेत्रीय हवाई संपर्क को बढ़ाया है। उन्होंने इसकी सफलता पर कहा 583 से अधिक मार्गों को चालू करके, हम 86 हवाई अड्डों को जोड़ रहे हैं, जिनमें से कई पहले कम सेवा वाले या असेवित थे। उड़ान उड़ानों से 1.4 करोड़ से अधिक यात्रियों को लाभ हुआ है, इस योजना के तहत 2.80 लाख से अधिक उड़ानें संचालित की गई हैं और 3,700 करोड़ से अधिक की व्यवहार्यता अंतर निधि सहायता है।

ह्युंडई ने लॉंच की नयी अल्काजार

नई दिल्ली। यात्री वाहन बनाने वाली प्रमुख कंपनी ह्यूंडई मोटर इंडिया लिमिटेड (एच एम आई एल) ने अपनी न्यू ह्यूंडई अल्काजार एसयूवी को लॉन्च किया जिसकी दिल्ली में शुरूआती एक्स शोरूम कीमत 14.99 लाख रुपये और 15.99लाख रुपये है। कंपनी के प्रबंध निदेशक उनसू किम ने इसे लॉंच करते हुये कहा, ह्यूंडई मोटर इंडिया में हम अपने डायवर्स एवं वर्सटाइल प्रोडक्ट के माध्यम से ग्राहकों के अनुभव को निखारने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हम ग्राहकों की लगातार बदलती जरूरतों को समझने और साथ ही उनकी उम्मीदों के अनुरूप बदलाव करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। बोल्ड न्यू ह्यूंडई अल्काजार हमारी इसी प्रतिबद्धता का प्रमाण है। हम अपनी इस इंटेलीजेंट, वर्सटाइल और इंटेंस एसयूवी को लॉन्च करते हुए उत्साहित हैं, जो एसयूवी सेगमेंट में ग्रैंडनेस, कंफर्ट एवं कन्वीनियंस को नई ऊंचाई देने के लिए तैयार है। हमें भरोसा है कि इस एसयूवी से हमारे ग्राहकों को यूनीक वैल्यू एक्सपीरियंस होगा। उन्होंने कहा कि 6 एवं 7 सीटर कॉन्फिगरेशन में उपलब्ध बोल्ड न्यू ह्यूंडई ALCAZAR के साथ मिलेगी इंटेंस, पावरफुल और फन-टु-ड्राइव परफॉर्मेंस। 1.5 लीटर टर्बो जीडीआई पेट्रोल इंजन (6 स्पीड मैनुअल ट्रांसमिशन और 7 स्पीड डीसीटी) और 1.5 लीटर सीआरडीआई डीजल इंजन (6 स्पीड मैनुअल ट्रांसमिशन और 6 स्पीड ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन) से लैस है।

एसबीआई फाउंडेशन ने की आशा छात्रवृत्ति 2024 की घोषणा

नयी दिल्ली। देश के सबसे बड़े बैंक भारतीय स्टेट बैंक की सीएसआर शाखा एसबीआई फाउंडेशन ने अपने प्रमुख आशा छात्रवृत्ति कार्यक्रम के तीसरे संस्करण की घोषणा की है जो देश भर में वंचित पृष्ठभूमि के 10,000 मेधावी छात्रों को सहायता देगा। बैंक ने आज यहां जारी बयान में कहा कि कक्षा 6 से स्नातकोत्तर स्तर तक के छात्र अब एक वर्ष में 15,000 रुपये से लेकर 20,00,000 रुपये तक की छात्रवृत्ति प्राप्त कर सकते हैं। यह कार्यक्रम स्कूली छात्रों, स्नातक, स्नातकोत्तर के साथ-साथ भारत में आईआईटी और आईआईएम में नामांकित छात्रों के लिए विशेष श्रेणियां प्रदान करता है। विशेष रूप से, एससी और एसटी छात्रों के लिए डिज़ाइन की गई 'विदेश में अध्ययन' श्रेणी दुनिया भर के प्रतिष्ठित संस्थानों से मास्टर्स और उससे ऊपर की पढ़ाई करने में उनके लिए एक बड़ी सहायताके रूप में कार्य करेगी। छात्रवृत्ति के लिए आवेदन 1 अक्टूबर 2024 तक किया जा सकता है। छात्रवृत्ति की पात्रता और समयसीमा के बारे में विस्तृत जानकारी वेबसाइट पर उपलब्ध है, और छात्र हेल्पलाइन पर भी पूछताछ कर सकते हैं।

शोध एवं अनुसंधान राशि जीएसटी से मुक्तः सीतारमण

एजेंसी

नई दिल्ली। परिषद ने विश्विवद्यालयों एवं शिक्षण संस्थानों को शोध एवं अनुसंधान के लिए मिलने वाली राशि या अनुदान को जीएसटी से मुक्त करने का निर्णय लिया है।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की अध्यक्षता में हुयी बैठक में इसका प्रस्ताव स्वयं वित्त मंत्री ने किया और सभी राज्यों ने इसका समर्थन किया। बैठक के बाद श्रीमती सीतारमण ने संवाददाताओं से कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इसको लेकर सवाल उठाये थे। प्रधानमंत्री ने कहा था कि जब बजट में शोध एवं अनुसंधान कोष बनाने की बात की जा रही है तब ऐसी स्थिति में इस तरह की अनुदान आदि राशि पर जीएसटी लगना सही नहीं है। श्रीमती सीतारमण ने कहा कि हुयी परिषद की 54वीं बैठक इस मुद्दे के आने पर उन्होंने स्वयं इसको लेकर प्रस्ताव किया जिसका सबसे पहले पश्चिम बंगला की वित्त मंत्री ने समर्थन किया और उसके बाद एक एक कर सभी राज्यों

ने समर्थन किया। उन्होंने कहा विश्वविद्यालय और अनुसंधान केंद्र जो केंद्र सरकार के एक कानून द्वारा स्थापित किए गए हैं। दूसरा, राज्य सरकारों के कानून द्वारा स्थापित विश्वविद्यालय और शोध केंद्र या वे जिन्होंने आयकर छूट प्राप्त की है, वे सार्वजनिक और निजी दोनों से शोध निधि प्राप्त कर सकते हैं और उन्हें जीएसटी का भुगतान नहीं करना होगा। उन्हें जीएसटी का भुगतान करने से छूट दी गई है।

घरेलू शेयर बाजार में 2 नई कंपनियों की दस्तक, निवेशकों को 48 प्रतिशत का मुनाफा

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार में 2 नई कंपनियों ने अपने शेयर के जरिए दस्तक दी। गाला प्रेसीजन इंजीनियरिंग और जेय्यम ग्लोबल फूड्स के शेयर आज स्टॉक मार्केट में लिस्टिंग होने के बाद बिकवाली का शिकार हो गए। हालांकि, बिकवाली का झटका झेलने के बाद खरीदारों ने इन दोनों कंपनियों के शेयरों को सहारा दिया, जिससे निवेशक नुकसान का सामना करने से बच गए। गाला प्रेसीजन इंजीनियरिंग के शेयरों की आज बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज पर 750 रुपये के स्तर पर और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज में 721.10 रुपये के स्तर पर लिस्टिंग हुई। इस तरह आईपीओ के निवेशकों को 40 प्रतिशत से अधिक का लिस्टिंग गेन मिल गया। हालांकि, निवेशकों को उस वक्त झटका लगा, जब बीएसई में बिकवाली के दबाव की वजह से ये शेयर टूट कर 721 रुपये के स्तर पर पहुंच गया। हालांकि, थोड़ी देर बाद खरीदारों ने लिवाली करके इस शेयर की चाल को तेज कर दिया।

पूरे दिन के कारोबार के बाद गाला प्रेसीजन के शेयर 48.78 प्रतिशत की तेजी के साथ 787.05 रुपये के स्तर पर बंद हुए। हालांकि, जेय्यम ग्लोबल फूड्स के आईपीओ में निवेश करने वाले निवेशक इतने भाग्यशाली नहीं रहे। आईपीओ के तहत 61 रुपये के भाव पर जारी हुआ ये शेयर आज नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के एसएमई प्लेटफॉर्म पर बिना किसी बदलाव के 61 रुपये के स्तर पर ही लिस्ट हुआ। लिस्ट होते ही बिकवाली का दबाव बनने के कारण ये शेयर 57.95 रुपये के स्तर पर आ गया। हालांकि, बाद में खरीदारों ने लिवाली का जोर बना दिया, जिससे ये सूचकांक 5 प्रतिशत की मजबूती के साथ 64.05 रुपये के स्तर पर बंद हुआ।

एचपी और पैजेट भारत में लैपटॉप, पीसी का करेंगी निर्माण – अश्विनी वैष्णव

एजेंसी

नई दिल्ली । केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने घोषणा की कि उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स की प्रमुख कंपनियों एचपी इंक और पैजेट इलेक्ट्रॉनिक्स ने तमिलनाडु की एक फैक्ट्री में एचपी लैपटॉप, पर्सनल कंप्यूटर और ऑल-इन-वन पीसी बनाने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

वैष्णव ने यहां संवाददाताओं से कहा कि यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम के तहत उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना के लिए एक बड़ी सफलता है। मंत्री ने कहा, 'पिछले 10 वर्षों में भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण 10 लाख करोड़ रुपये (2014 में 2.4 लाख करोड़ रुपये से) को पार कर गया है। इसमें 10 लाख से अधिक लोगों को रोजगार मिला है। आईटी हार्डवेयर योजना के लिए पीएलआई के कारण, भारत प्रमुख आईटी हार्डवेयर ब्रांडों के लिए विनिर्माण केंद्र के रूप में

उभरा है।' घरेलू डिक्सन टेक्नोलॉजीज की सहायक कंपनी पैजेट इलेक्ट्रॉनिक्स के साथ समझौते के तहत एचपी उपकरणों का उत्पादन अगले साल जनवरी से शुरू होने वाला है और चेन्नई के एक औद्योगिक उपनगर ओरागदम में उत्पादन सुविधा शुरू होने के बाद अगले दो वर्षों में प्रति वर्ष 20 लाख इकाइयों तक पहुंचने का अनुमान है। मंत्री वैष्णव ने कहा कि, इससे 1,500 से ज्यादा प्रत्यक्ष नौकरियां पैदा होंगी और पैजेट धीरे-धीरे घटकों, मॉड्यूल और बाह्य उपकरणों के स्थानीय विनिर्माण को बढ़ाएगा, इससे ज?यादा नौकरियां पैदा होगी। देश में बढ़ते इलेक्ट्रॉनिक्स इकोसिस्टम के बीच वैश्विक इलेक्ट्रॉनिक्स ब्रांड भारत स्थित निर्माताओं के साथ साझेदारी कर रहे हैं। उद्योग विशेषज्ञों के अनुसार, भारत में आईटी हार्डवेयर क्षेत्र अभी भी प्रारंभिक चरण में है और डेल, एचपी, एएसयूएस, लेनोवो और एस?सार जैसी वैश्विक दिग्गज कंपनियों को देश को अपना विनिर्माण केंद्र बनाने में सुरक्षित महसूस कराना एक महत्वपूर्ण कारक होगा। आईटी हार्डवेयर योजना के लिए संशोधित पीएलआई 2.0, 17,000 करोड़ रुपये के बढ़े हुए बजटीय परिव्यय और छह साल तक विस्तारित अवधि के साथ, 3,35,000 करोड़ रुपये का वृद्धिशील उत्पादन उत्पन्न करने की उम्मीद है।इस योजना का उद्देश्य 75,000 प्रत्यक्ष रोजगार और 2,00,000 से अधिक अप्रत्यक्ष रोजगार सृजित करना है। इससे इस क्षेत्र में रोजगार के अवसरों में वृद्धि होगी।

शेयर बाजार ने फिर पकड़ी रफ्तार, सेंसेक्स और निफ्टी ने लगाई छलांग

एजेंसी

नई दिल्ली।पिछले सप्ताह के आखिरी तीन दिन तक गिरावट का सामना करने के बाद घरेलू शेयर बाजार ने आज सप्ताह के पहले दिन ही अपनी मजबूती दिखाई। हालांकि आज के कारोबार की शुरुआत भी गिरावट के साथ हुई थी। बाजार खुलने के बाद बिकवाली के दबाव के कारण सेंसेक्स और निफ्टी की कमजोरी और बढ़ गई, लेकिन पहले घंटे के कारोबार के बाद खरीदारी का सपोर्ट मिल जाने की वजह से शेयर बाजार ने मजबूती की राह पकड़ ली। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.46 प्रतिशत और निफ्टी 0.34 प्रतिशत की बढ़त के साथ बंद हुए।

आज दिन भर के कारोबार के दौरान बैंकिंग, एफएमसीजी और फाइनेंशियल सेक्टर के शेयरों में जम कर खरीदारी होती रही। ऑयल एंड गैस, मेटल और आईटी सेक्टर के शेयरों में बिकवाली का दबाव बना रहा। इसके साथ ही कैपिटल गुड्स, मीडिया, टेलीकॉम, पावर और रियल्टी इंडेक्स भी गिरावट के साथ बंद हुए। ब्रॉडर मार्केट में भी आज लगातार बिकवाली का दबाव बना रहा, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.28 प्रतिशत की कमजोरी के साथ बंद हुआ। इसी तरह स्मॉलकैप इंडेक्स ने 0.65 प्रतिशत की गिरावट के साथ आज के कारोबार का अंत किया।

आज शेयर बाजार में आई मजबूती के कारण स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में 36 हजार करोड़ रुपये का इजाफा हो गया। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन आज के कारोबार के बाद बढ़ कर 460.54 लाख करोड़ रुपये (अस्थाई) हो गया जबकि पिछले सप्ताह के आखिरी कारोबारी दिन यानी शुक्रवार को इनका मार्केट कैपिटलाइजेशन 460.18 लाख करोड़ रुपये था। इस तरह निवेशकों को आज के कारोबार से करीब 36 हजार करोड़ रुपये का मुनाफा हो गया।आज दिन भर के कारोबार में बीएसई में 4,181 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें 1,667 शेयर बढ़त के साथ बंद हुए, जबकि 2,371 शेयरों में गिरावट का रुख रहा, वहीं 143 शेयर बिना किसी उतार चढ़ाव के बंद हुए।

भारत–जापान वित्तीय सहयोग बढ़ाने, द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने पर सहमत

एजेंसी

नई दिल्ली । भारत और जापान ने वित्तीय सहयोग को बढ़ावा देने और द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने के लिए चर्चा जारी रखने पर सहमति जताई है। वित्त मंत्रालय ने जारी एक बयान में यह जानकारी दी है।

वित्त मंत्रालय ने कहा कि भारत-जापान वित्तीय सहयोग को और बढ़ावा देने तथा द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने के लिए चर्चा जारी रखने पर सहमत हुए है। दोनों देशों के बीच ये सहमति 6 सितंबर, 2024 को टोक्यो में आयोजित दूसरा भारत और जापान वित्त संवाद के दौरान बनी। मंत्रालय ने बताया कि इस बैठक में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व आर्थिक मामलों के सचिव

अजय सेठ ने किया, जबकि जापानी पक्ष की अगुवाई जापान के अंतरराष्ट्रीय मामलों के वित्त उप-मंत्री अत्सुशी मिमुरा ने की। जापानी प्रतिनिधिमंडल में वित्त मंत्रालय और वित्तीय सेवा एजेंसी के प्रतिनिधि शामिल थे।

वित्त मंत्रालय ने बताया कि जापान के टोक्यो में आयोजित 'दूसरे भारत-जापान वित्त संवाद' में दोनों देशों ने वित्तीय संबंधों की मजबूती पर चर्चा की।

इस दौरान दोनों देशों ने एक-दूसरे की वृहद-आर्थिक स्थिति पर अपनी राय से अवगत कराया। इस बैठक में भारत और जापान ने अन्य देशों में सहयोग, द्विपक्षीय सहयोग और अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा की। बैठक में प्रतिभागियों ने विनियमन एवं निगरानी, वित्तीय डिजिटलीकरण और दोनों देशों में अन्य नीतिगत पहल सहित वित्तीय क्षेत्र के मुद्दों पर विचार साझा किए।

पीएफसी, कॉनकॉर और राइट्स ने लाभांश किश्त के 712 करोड़ रुपये सरकार को दिए

एजेंसी

नई दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन (पीएफसी), कंटेनर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (कॉनकॉर) और राइट्स लिमिटेड ने लाभांश किश्त के रूप में करीब 172 करोड़ रुपये दिए हैं। इन कंपनियों में पीएफसी ने करीब 601 करोड़ रुपये, कॉनकॉर ने 68 करोड़ रुपये और राइट्स लिमिटेड ने 43 करोड़ रुपये का भुगतान किया है। वित्त मंत्रालय के निवेश और लोकसंपत्ति प्रबंधन विभाग (दीपम) के सचिव ने एक्स पोस्ट पर जारी बयान में कहा कि सरकार को सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन (पीएफसी), कंटेनर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (कॉनकॉर)

Power Finance Corporation Ltd. (A Government of India Undertaking) An ISO 9001:2015 & ISO 45001:2018 Certified Company
कॉनकॉर CONCOR RITES THE INFRASTRUCTURE PEOPLE

तथा राइट्स लिमिटेड से लाभांश किश्त के रूप में क्रमशः लगभग 601 करोड़ रुपये, 68 करोड़ रुपये और 43 करोड़ रुपये प्राप्त हुए हैं। इस तरह कुल मिलाकर सरकार को लाभांश किश्तों के रूप में करीब 172 करोड़ रुपये प्राप्त हुए हैं।

कैंसर की दवा एवं नमकीन पर जीएसटी की दर घटा, स्वास्थ्य बीमा प्रीमियम पर नवंबर में फैसलाः सीतारमण

एजेंसी

नयी दिल्ली। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) परिषद की बैठक में कई अहम फैसले लिए गए हैं। वित्त मंत्री ने कहा कि दरों को युक्तिसंगत बनाने पर गठित मंत्री समूह (जीओएम) और रियल एस्टेट पर गठित जीओएम ने अपनी स्थिति रिपोर्ट को सौंप दी है। उन्होंने कहा कि ऑनलाइन गेमिंग और कैसीनो पर स्थिति प्रस्तुत की गई है। सीतारमण ने कहा कि 6 महीनों में ऑनलाइन गेमिंग से राजस्व 412 फीसदी बढ़कर 6909 करोड़ रुपये हो गया है। सीतारमण ने राजधानी नई दिल्ली में सुषमा स्वराज भवन में जीएसटी परिषद की 54वीं बैठक के बाद पत्रकारों को संबोधित करते हुए यह बात कही। वित्त मंत्री ने कहा कि जीएसटी परिषद ने कैंसर की दवाओं पर जीएसटी की दर को 12 फीसदी से घटाकर पांच फीसदी किया है, जबकि नमकीन पर जीएसटी 18 फीसदी से घटाकर 12 फीसदी करने की

सिफारिश की गई है। उन्होंने कहा कि अब केंद्र और राज्य से मान्यता प्राप्त यूनिवर्सिटीज और रिसर्च सेंटर को ग्रांट लेने पर जीएसटी नहीं चुकाना होगा। वित्त मंत्री ने आगे कहा कि परिषद की बैठक में दो नए मंत्रियों का समूह (जीओएम) गठित किया गया है। इसमें एक जीएमओ चिकित्सा और स्वास्थ्य बीमा पर गठित किया गया है। ये जीओएम बिहार के उप-मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में दर युक्तिकरण जीओएम होगा लेकिन इस सीमित उद्देश्य के लिए नए सदस्यों को जोड़ा जाएगा। उन?होंने कहा कि हमने उनसे कहा है कि वे इस मामले को देखेंगे और अक्टूबर 2024 के अंत तक एक रिपोर्ट लेकर आएंगे। नवंबर में होने वाली जीएसटी परिषद इस रिपोर्ट के आधार पर अंतिम निर्णय लेगी जो कि जीओएम से आएगी। सीतारमण ने कहा कि मार्च 2026 के बाद आने वाले क्षतिपूर्ति उपकर के मुद्दे पर विचार करने के लिए भी मंत्री समूह का गठन किया गया है। वित्त मंत्री ने कहा कि आईजीएसटी (एकीकृत जीएसटी) पर अतिरिक्त सचिव (राजस्व) की अध्यक्षता में सचिवों की एक समिति बनाई जाएगी। इसमें वर्तमान में असंतुलन की स्थिति है। यह राज्यों से राशि वापस लेने के तरीकों पर गौर करेगी। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने आज नई दिल्ली में सुषमा स्वराज भवन में जीएसटी परिषद की 54वीं बैठक की अध्यक्षता की। वित्त मंत्री के साथ-साथ केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी, गोवा और मेघालय के मुख्यमंत्री, अरुणाचल प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश और तेलंगाना के उप-मुख्यमंत्री, राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों (विधानसभा सहित) के वित्त मंत्री और केंद्र सरकार और राज्यों के वरिष्ठ अधिकारी तथा वित्त मंत्रालय के अधिकारी भी बैठक में भाग ले रहे हैं।

दो हजार रुपये से कम के लेन-देन पर जीएसटी का प्रस्ताव समीक्षा के लिए फिटमेंट कमेटी के पास भेजा गया

नई दिल्ली। 2,000 रुपये से कम के लेन-देन पर पेमेंट एग्रीगेटर्स को होने वाली आय पर 18 प्रतिशत जीएसटी लगाने का प्रस्ताव फिलहाल समीक्षा के लिए जीएसटी फिटमेंट कमेटी के पास वापस भेज दिया गया है। जीएसटी काउंसिल की 54वीं बैठक में आज इस मुद्दे पर चर्चा होने के बाद फिलहाल इसे स्थगित करने का फैसला लिया गया। दरअसल, पेमेंट एग्रीगेटर्स ऐसे प्लेटफॉर्म होते हैं, जिनके जरिए ऑनलाइन लेन-देन किया जाता है। पेमेंट एग्रीगेटर्स ग्राहकों और दुकानदारों के बीच डिजिटल पेमेंट के लिए मध्यस्थ की भूमिका निभाते हैं, जिससे डिजिटल पेमेंट की प्रक्रिया आसान हो जाती है। फिलहाल पेमेंट एग्रीगेटर्स हर लेन-देन पर दुकानदारों से 0.50 प्रतिशत से लेकर 2 प्रतिशत तक चार्ज लेते हैं। जीएसटी फिटमेंट कमेटी इसी आय पर 18 प्रतिशत जीएसटी लगाने का प्रस्ताव लेकर आई थी। अभी तक की व्यवस्था में 2,000 रुपये से कम के लेन-देन से होने वाली आय पर पेमेंट एग्रीगेटर्स को जीएसटी नहीं देना पड़ता है। नवंबर, 2016 में डिमॉनेटाइजेशन के बाद डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देने के लिए 2017 में पेमेंट एग्रीगेटर्स को ये छूट दी गई थी, ताकि डेबिट या क्रेडिट कार्ड अथवा किसी भी पेमेंट कार्ड सर्विस के जरिए किए जाने वाले छोटे पेमेंट पर दुकानदारों पर जीएसटी का अतिरिक्त भार न पड़े। जानकारों का कहना है कि जीएसटी फिटमेंट कमेटी ने 2,000 रुपये से कम के लेन-देन पर होने वाली आय पर जीएसटी लगाने का प्रस्ताव देते समय तर्क दिया था

आईपीओ के जरिये 7 कंपनियों ने स्टॉक मार्केट में दी दस्तक

नई दिल्ली। कारोबारी सप्ताह के पहले दिन प्राइमरी मार्केट में 7 आईपीओ की लॉन्चिंग हुई। आज लॉन्च हुए आईपीओ में से बजाज हाउसिंग फाइनेंस का आईपीओ पहले दिन ही दो गुना से अधिक सब्सक्राइब

हो गया। इसी तरह दूसरे 6 आईपीओ को भी निवेशकों की ओर से बेहतर रिस्पॉन्स मिलता नजर आ रहा है।

बजाज हाउसिंग फाइनेंस के आईपीओ का शेयर बाजार में लंबे समय से इंतजार किया जा रहा था। ये आईपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए आज ही ओपन हुआ है और 11 सितंबर को क्लोज होगा। इस आईपीओ के जरिए कंपनी 6,560 करोड़ रुपये जुटाना चाहती है। आईपीओ के तहत 66 से 70 रुपये का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि एप्लीकेशन के लिए लॉट साइज 214 शेयर का है। कंपनी के शेयर 16 सितंबर को बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज पर लिस्ट होंगे। सबसे बड़ी बात तो ये है कि आज आईपीओ ओपन होने के बाद पहले दिन ही 2.02 गुना ओवर सब्सक्राइब हो गया। शाम 5 बजे तक क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्यूआईबी) के हिस्से में 1.07 गुना, नॉन इंस्टीट्यूशनल इंवेस्टर्स के हिस्से में 4.35 गुना और रिटेल इंवेस्टर्स के हिस्से में ये आईपीओ 1.51 गुना सब्सक्राइब हो चुका है।

इसी तरह ऑटो पार्ट्स बनाने वाली कंपनी क्रॉस का 500 करोड़ रुपये का आईपीओ भी आज सब्सक्रिप्शन के लिए खुला है। 11 सितंबर को ये आईपीओ क्लोज होगा। आईपीओ के तहत शेयर का प्राइस बैंड 228 रुपये से 240 रुपये तय किया गया है, जबकि एप्लीकेशन के लिए लॉट साइज 62 शेयर का है। क्रॉस कंपनी के शेयर भी बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज पर 16 सितंबर को लिस्ट होंगे। मेनबोर्ड सेगमेंट में ही टायर निर्माता कंपनी टोलिंस टायर्स का 230 करोड़ रुपये साइज वाला आईपीओ भी सब्सक्रिप्शन के लिए आज खुला है और ये भी 11 सितंबर को ही बंद होगा। आईपीओ के तहत इस शेयर का प्राइस बैंड 215 रुपये से 226 रुपये तय किया गया है, जबकि एप्लीकेशन के लिए इसका लॉट साइज 66 शेयर का है।

CHIRAG BUILDTECH PRIVATE LIMITED
Corp. Off.: ROF Group, Building No. 80, First Floor, Sector-44, Gurgaon-122003, Ph. 0124-4399399

Notice is hereby given to the Public at large that the following booking of residential apartments in the Affordable Housing Project ***"ROF ANANDA"*** being developed by M/s. **CHIRAG BUILDTECH PRIVATE LIMITED** situated at **Sector 95**, Gurugram, Haryana vide **(License No. - 17 of 2016 dated: 25.10.2016)** has been cancelled due to non –payment of installments or allotment amount by successful allottee (s) of their apartments till its due date or any other reason, the information/reminders of which has been given them according to terms of the Haryana Affordable Housing Policy 2013, dated 19/8/2013 (as amended).

Application No.	Carpet Area (Sq. Ft.)	Apartment No.
15711, 9717	554.77, 2 BHK (TYPE-E)	E-705, D-1305
15193, 5558, 3543, 5612, 9205	635.97, 3 BHK (TYPE-F)	A-508, B-701, A-1008, B-501, B-508
7104, 5054	347.96, 1 BHK (TYPE-A)	F-810, F-1004
9856, 15202, 1758, 3773, 5065	641.71, 2 BHK+S (TYPE-D)	D-607, E-902, C-203, B-1106, A-702

Therefore, all the person/allottee (s) are hereby informed to submit claims/objections in writing, if any, for the cancellation of the said apartments to the undersigned company/developer along with the relevant documents to support their claims/ objections within 7 days from the date of publication hereof.

In the absence of any claim within the stipulated period above, it shall be presumed and/or deemed that the allottee (s) or concern has no such claims/objections by virtue of this notice and, if any, the same have been waived or abandoned without any reference to such claims/objections made thereafter and necessary action will be taken as per rules for the process of re-allotment.

For **CHIRAG BUILDTECH PRIVATE LIMITED**
Place: Gurgaon (Haryana)

जीवन में बहुत तनाव लेते हैं? मत लीजिए वरना इतनी बीमारियां होंगी कि शरीर घुल-घुल कर रिसने लगेगा, बचने के टिप्स जानें

जीवन है तो तनाव होगा ही, लेकिन अगर आपने तनाव को मैनेज नहीं किया तो यह धीरे-धीरे साइलेंटली नासूर बन जाएगा. लंबे समय तक तनाव के कारण इतनी बीमारियां होंगी कि शरीर घुल-घुलकर रिसने लगेगा.

भारत में अधिकांश लोगों को पता भी नहीं है कि तनाव एक मानसिक बीमारी है जिसका समाधान जरूरी है. वरना शरीर में इतनी तरह की बीमारियां लग जाती है कि साइलेंटली शरीर घुल-घुल कर रिसने लगता है. हकीकत यह है कि अधिकांश भारतीय इस तनाव नाम की बीमारी के गिरफ्त में आ चुके हैं. शारीरिक रूप से किसी चीज को लेकर तंगी, उलझन, दिक्कत जब भावनाओं को बेचैन करने लगे तो यह एक तरह से तनाव है. यह शारीरिक तनाव भी हो सकता है और मानसिक तनाव भी हो सकता है. इसमें किसी चीज को लेकर चिंता होती है, बहुत कठिन परिस्थितियां आ जाती हैं या चुनौती होती है. इंसान का शरीर और दिमाग इस तरह से बना है कि इस तनाव को उसमें कंट्रोल करने की क्षमता स्वतः ही विकसित हो जाती है लेकिन जब यह तनाव बहुत लंबा खिचने लगे तो यह साइलेंट तरीके से धीरे-धीरे पूरे शरीर को खोखला करने लगता है.

हार्ट पर सबसे ज्यादा असर

टीओआई की खबर के मुताबिक बीएमजे में प्रकाशित एक रिपोर्ट में दावा किया गया था कि 13.67 लाख लोगों पर 1987 से 2013 के बीच जब अध्ययन किया गया तो पाया गया कि जो लोग ज्यादा तनाव में जीते थे उनमें तनाव के कारण दिल से संबंधित कई बीमारियों ने जकड़ लिया. चिंता की बात यह है कि ये बीमारियां 50 साल से पहले की उम्र में ही लग जाती है. रिसर्च के मुताबिक तनाव का सबसे ज्यादा असर हार्ट पर पड़ता है. जब हम तनाव में रहते हैं तो स्ट्रेस वाला हार्मोन कॉर्टिसोल ज्यादा रिलीज होने लगता है. यह कॉर्टिसोल करीब 1500 केमिकल को इधर से उधर कर देता है. कॉर्टिसोल ब्लड प्रेशर को बढ़ा देता है. इससे हार्ट पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है. जब तनाव नियमित रहने लगता है तब हाई ब्लड प्रेशर की बीमारी हो जाती है. इस कारण खून की नलियां जो हार्ट की ओर जाती है वह हार्ड होने लगती है और इसके फटने का खतरा बढ़ जाता है. इन सबसे हार्ट अटैक और स्ट्रोक का खतरा बहुत हो जाता है.

पाचन तंत्र बिगड़ जाएगा

हार्ट के बाद डाइजेस्टिव सिस्टम पर आपके तनाव का गहरा असर होता है. तनाव के कारण गट बैक्टीरिया का बैलेंस बिगड़ जाता है. इससे पेट में दर्द, ब्लोटिंग और शौच जाने की आदत में बदलाव होने लगता है. इसके अलावा एसिड रिफ्लेक्स होने लगता है और ज्यादा समय तक तनाव रहने से पेप्टिक अल्सर का खतरा बढ़ जाता है. कॉर्टिसोल हार्मोन पेट में एसिड प्रोडक्शन को भी बढ़ा देता है जिससे आंत की म्यूकस लाइनिंग कमजोर होने लगती है. तनाव के कारण भूख पर असर पड़ता है जिसके कारण या तो लोग ज्यादा खाने लगते हैं या खाते ही नहीं है.

मांसपेशियां कमजोर होने लगेंगी

लंबे समय तक तनाव में रहने के कारण साइटोकिनेस का प्रोडक्शन कम हो जाता है जिसके कारण इम्यून सिस्टम कमजोर होने लगता है. इससे आपको हमेशा इंफेक्शन लगने लगेगा और आप हमेशा बीमार रहेंगे. इतना ही नहीं इम्यून सिस्टम कमजोर होने के कारण किसी भी बीमारी को ठीक होने में बहुत लंबा समय लगेगा. इन सब कारणों से इम्यून आपके अपने ही टिशू पर हमला करने लगेगा. इससे मांसपेशियां कमजोर होने लगती है. जब आप तनाव में रहते हैं तो इससे मसल्स पहले टाइट होने लगते हैं और इसमें दर्द होने लगता है. अक्सर गर्दन, कंधा और बैक एरिया में पेन होगा. इस सबका अंत में यह असर होगा कि इससे टेंपरोमेंडीबुलर ज्वाइंट डिसॉर्डर हो जाएगा जो फाइब्रोमायलजिया का कारण बन जएगा.

तो क्या तनाव किलर है

रिपोर्ट के मुताबिक तनाव खुद में किलर तो नहीं है लेकिन यह पूरे शरीर को तहस-नहस कर देता है. शरीर में इतनी तरह की दिक्कतें हो जाएंगी कि ये सब मिलकर समय से पहले मौत का कारण बन सकती है. दरअसल, जब तनाव बढ़ता है तो लोग स्मोक करने लगते हैं, ज्यादा शराब पीते हैं, ये सब मिलकर कई तरह की बीमारियां लाती है और अंत में समय से पहले मौत हो जाती है.

दिखने लगी अखिलेश की धमक

सबसे अच्छी बात यह है कि जैसे मोदी की छवि के सामने बीजेपी और एनडीए के सब नेताओं की छवि दब गई वैसा विपक्ष में नहीं हो रहा।

राहुल की अखिल भारतीय छवि के सामने यूपी में अखिलेश यादव की छवि पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ा उल्टे वह और चमक गई। बाकी राज्यों में भी ऐसा ही हुआ। हर राज्य में इंडिया गठबंधन का नेता राहुल के साथ खड़ा होकर एक और एक ग्यारह हो गए।ताजा मिसाल यूपी की है। वहां मंगेश यादव के कथित एनकाउंटर के बाद उपजे जनता के गुस्से को जैसे अखिलेश ने स्वर दिया उससे लोगों को मुलायम सिंह के उन तेवरों की याद आ गई जब उन्होंने यूपी में एक अखबार के खिलाफ हल्ला बोल आंदोलन शुरू कर के यूपी के उस सबसे बड़े अखबार को झुकने के लिए मजबूर कर दिया था। 30 साल पहले। बात 1994 की है। अखबार को माफी मांगना पड़ी थी।

आज अखिलेश के तेवरों में लोग वही मुलायम सिंह देख रहे हैं। जिनके बारे में कहा जाता था जिसका जलवा कायम है उसका नाम मुलायम है! अब इनका जलवा अखिलेश में ट्रांसफर हो गया लगता है।

जिस कड़े और तार्किक अंदाज में अखिलेश ने इस एनकाउंटर के बारे में सवाल पूछे उससे लोगों को भरोसा हो गया कि अब यूपी में फर्जी एनकांउटर और बुलडोजर के खिलाफ एक मजबूत आवाज पैदा हो गई है। और फिर इसमें नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के आवाज मिला देने से यूपी में उम्मीद की आस और तेज हो गई है। सवाल सिर्फ फर्जी एनकाउंटर और बुलडोजर चला देने का नहीं है। यूपी में और सब जगह जहां डबल इंजन की सरकारें हैं वहां सिर्फ दिल्ली से बजाए जा रहे हिन्दू-मुस्लिम राग को ही रिप्ले किया जा रहा है। जैसे मोदी सरकार जनता का कोई काम नहीं कर रही है हर समस्या का जवाब एक नए जुमले से देती है। वैसे ही भाजपा शासित राज्य कर रहे हैं।

पहले दस साल हिन्दू-मुसलमान का राग बजाया गया। मगर लोकसभा चुनाव में नहीं चला तो अब विभाजन को नए स्तर पर ले आए हैं। यूपी में सबसे ज्यादा नुकसान हुआ। 66 सीटें घटकर 33 रह गईं। तो अब यूपी में मुसलमानों के बाद यादवों को टारगेट किया जाने लगा। अगर व्यापक अर्थों में देखा जाए तो अखिलेश के सफल सामाजिक समूह पीडीए को। पी से पिछड़ा। जिस का नाम पहले मुख्यमंत्री ने विधानसभा में लिया। एक यादव एक मुसलमान का। लखनऊ में बरसात के पानी को भीड़ द्वारा लोगों पर उछालने के मामले में पुलिस ने कई लोगों को आरोपी बनाया। एक दर्जन से ज्यादा। मगर मुख्यमंत्री योगी ने सिर्फ दो नाम लिए। और उन पर व्यंग्य करते हुए इसे सद्भावना (मुस्लिम यादव की) बताते हुए कहा कि इन पर सद्भावना एक्सप्रेस चलाई जाएगी।

मगर मामले में ट्विस्ट तब आया कि जमानत होने के बाद पवन यादव ने पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव से मिलकर कहा कि वह तो घटना स्थल पर था ही नहीं। यादव होने के नाते मुझे फंसाया गया। ऐसा ही उसने मुसलमान लड़के के बारे में बताया कि वह भी वहां नहीं था। अखिलेश ने मामले को गंभीरता से लेते हुए कहा था कि हम इस मामले को भूलेंगे नहीं। और पवन यादव के बहाने सब यादवों पिछड़ों से कहा था कि तुम भी मत भूलना।

तो यह पिछड़े का मामला मंगेश यादव के कथित एनकाउंटर के बाद और गहरा गया। अखिलेश का सीधा आरोप है कि इस मामले में शामिल मुख्य आरोपी को पुलिस ने सरेंडर करवा लिया। बाकी जिन को पकड़ा उनके पांव को छूती हुई गोली मारकर एनकाउंटर बताया। और रात को घर से मंगेश यादव को ले जाकर उसके सिर से सटाकर गोली मारी गई। परिवार वालों ने कहा बहुत मारा है। चेहरा पूरा खराब हो गया। वीभत्स। देखा नहीं जा सकता। अखिलेश ने फोन पर परिवार से बात की।यह मामला सुल्तानपुर में पड़ी एक डकैती का है। अखिलेश बहुत तीखे सवाल पूछ रहे हैं। उनके पास सूचनाएं आ रही हैं। जब विपक्ष का नेता मजबूत होने लगता है तो अफसरशाही उससे जुड़ने लगती है। अखिलेश ने पूछा कि डकैती का माल कहां है? अगर सारे अपराधी पकड़े गए एक यादव को मार दिया तो करोड़ों रुपए के स्वर्ण आभूषण कहां हैं? वह बरामद क्यों नहीं हुए? पीड़ित ज्वेलर भरतजी सोनी का कहना है कि अभी तक केवल दस प्रतिशत गहनों की ही रिकवरी हुई है। वह भी केवल चांदी के। सोने के जेवर नहीं मिले।पुलिस अब बता रही है कि मंगेश यादव पर इतने केस थे। मगर जौनपुर के उसके गांव में उसका मकान एक झोंपड़ी है। उसकी तस्वीर तक घर के बाहर रखी गई है। गरीब परिवार।यह पी ज्यादा लंबा हो गया। है भी पिछड़ों की तादाद सबसे ज्यादा। राहुल इन्हीं की गिनती करवाना चाहते हैं। ताकि सरकारी योजनाओं में इन्हें लाभ मिल सके। जितनी आबादी उतना हक। राहुल की जाति गणना देश का पूरा सामाजिक चरित्र बदल देगी। पिछड़ों को फिर इस तरह जुल्म का शिकार नहीं बनाया जा सकेगा। आज समाज में पिछड़ों के लिए एक से एक गंदी गालियां हैं। मुहावरों, कहावतों के तौर पर। ... बिना गुनाहम पांच पनाहम! पनहा यानि जूते। इस कहावत के पहली लाइन में कई पिछड़ी जातियों के नाम लिए जाते हैं। आम कहा जाता है कि बिना अपराध के मारो!अखिलेश के पीडीए में दूसरा अक्षर है डी। डी यानि दलित। जिसे सबसे ज्यादा गालियां दी जाती हैं। यूपी में इनके नाम पर मायावती ने लंबी राजनीति की। चार बार मुख्यमंत्री बनीं। मगर दलितों को सबसे बड़ा धोखा भी इन्होंने ही दिया। खुद को ईडी सीबीआई इनकम टैक्स से बचाने के लिए मोदी के साथ चली गईं। केन्द्र में और यूपी में दोनों जगह भाजपा की सरकार है। मगर वे हर जगह सपा और कांग्रेस का दोष बताती हैं। हाथरस में दलित लड़की के साथ भयानक बलात्कार हुआ। रातों-रात पुलिस ने उसका शव जला दिया। और आरोपियों के समर्थक लड़की के घर बाहर घेराव करके बैठ गए।राहुल गांधी को एक बार जाने नहीं दिया। रास्ते से वापस आना पड़ा। मगर वे तो राहुल हैं। जो ठान लेते हैं तो कर के ही मानते हैं। दूसरी बार फिर निकले। पुलिस ने धक्का देकर गिरा दिया। उठे और फिर चल दिए। पहुंचे। लेकिन मायावती एक बार भी नहीं गईं। दलित अत्याचार की और भी कई भयानक घटनाएं हुईं। राहुल प्रियंका हर जगह पहुंचे। मगर दलित जिन्हें सम्मान से बहिन जी कहते हैं किसी के आंसू पोंछने नहीं गईं। और इस समय हो रही घटनाओं के लिए वे सपा और कांग्रेस को दोषी ठहराती रहीं। अपने घर बैठ कर। जिसे अब दलित भी गुस्से में महल कहने लगे हैं। और इसी गुस्से में इस बार वे मायावती के साथ न जाकर अखिलेश और राहुल के इंडिया गठबंधन के साथ चले गए। यूपी में यही मायावती और भाजपा को बड़ी चोट लगी। और अखिलेश के पी, पिछड़े के साथ डी दलित भी कामयाब हो गया।

पीडीए में तीसरा है अल्पसंख्यक। भाजपा की राजनीति का मुख्य आधार। पिछले दस साल से मुसलमान के खिलाफ नफरत फैलाकर ही मोदी हिन्दुओं का ध्रुवीकरण करते रहे हैं। सारी लिंचिंग और बुलडोजर की कार्रवाइयां उसके ही खिलाफ हुई हैं। यूपी में ही नफरत और फैलाने एवं विभाजन को और तीखा करने के लिए प्रधानमंत्री मोदी इतने आगे तक चले गए कि श्मशान और कब्रिस्तान की तुलना करने लगे। और इस लोकसभा चुनाव में यहां तक कह गए कि हिन्दुओं से छीन लेंगे और मुसलमानों को देंगे। मगर दस साल में मुसलमान किसी भड़कावे में नहीं आए। मामलों को बच्चों के स्तर तक ले गए। अभी यूपी में ही एक सात साल के मुस्लिम बच्चे को प्रिंसीपल आतंकवादी कह कर स्कूल से निकाल देता है। और उससे पहले एक महिला शिक्षिका एक मुसलमान बच्चे के गाल में दूसरे बच्चे से थप्पड़ पड़वाती है। कितनी घटनाएं हैं। मगर मुसलमान लोकतांत्रिक व्यवस्था संविधान पर विश्वास रखते हुए खामोश रहा। और उसका असर इन लोकसभा चुनावों में दिख गया।

हिन्दू -मुसलमान विभाजन की थ्योरी फेल हो गई। और देश में 240 पर और यूपी में 80 में 33 पर बीजेपी रूक गई।यही अखिलेश की पीडीए की सफलता है। और अब नए साहस के साथ पिता मुलायम सिंह के अंदाज में बीजेपी को ललकारने ने उनका कद और बढ़ा दिया है। जैसे देश में विपक्ष दिखने लगा है वैसे ही यूपी में अखिलेश की धमक दिखने लगी है।

संपादकीय

राहुल की अमेरिकी यात्रा के सम्भावित फलितार्थ

राहुल गांधी बतौर नेता प्रतिपक्ष अमेरिका दौरे पर हैं। वहां के कुछ भारतीयों के संगठनों ने उन्हें बुलाया है। ओवरसीज़ इंडियन कांग्रेस के प्रमुख सैम पित्रोदा इस आयोजन के केन्द्र में हैं। राहुल की पिछली विदेश यात्राओं की ही तरह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भारतीय जनता पार्टी को इस यात्रा से भी दिक्कतें होंगी। खासकर इसलिये कि राहुल दो महत्वपूर्ण परिघटनाओं की पार्श्वभूमि में अमेरिका जा रहे हैं। दूसरे, स्वयं मोदी इसी देश की यात्रा करने वाले हैं। कहें तो राहुल व मोदी दोनों ही अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव के पहले उस देश में जा रहे हैं।मोदी के लिये इस बार की अमेरिकी यात्रा कठिन होने जा रही है। वह इस लिहाज़ से कि रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार एवं पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प लोकप्रियता के मामले में डोमोक्रेटिक पार्टी की तथा भारत से जिनके अनुवांशिकी नाते हैं- कमला हैरिस से बहुत नीचे हैं। उनका राष्ट्रपति बनना तय माना जा रहा है। पिछली बार ट्रम्प को चुनाव में सीधे समर्थन का ऐलान कर मोदी ने अपनी फजीहत तो कराई ही थी, डेमोक्रेट्स के मन में वह बात अभी भी चुभी हुई है। इतना ही नहीं, देश में भी मोदी कमजोर हुए हैं- इसका भी एहसास वहां के भारतीय समुदाय को है। राहुल की लोकप्रियता दुनिया भर में बढ़ी है।राहुल जिस दिन अमेरिका पहुंचे वह उनकी भारत में निकाली गयी %भारत जोड़ो यात्रा% की दूसरी वर्षगांठ थी। इस यात्रा से देश के साथ विदेश में भी भारत, खासकर राहुल व मोदी दोनों के प्रति वैचारिक बदलाव आया है। अब राहुल अमेरिका में हैं, तो उसके बारे में पित्रौदा का कहना है कि %जब से वे लोकसभा में प्रतिपक्ष के नेता बने हैं, उनसे मिलने, सुनने और बात करने की बड़ी इच्छा अमेरिका के लोगों ने दिखलाई है। खासकर वहां रहने वाले भारतीय मूल के अमेरिकी लोगों ने इसे लेकर बड़ा आग्रह किया था।% निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार, जब स्थानीय समय के अनुसार राहुल टेक्सास के डलास पहुंचे तो उनका बहुत गर्मजोशी से स्वागत किया गया। गुलाब की पंखुड़ियां बिखेरी गयीं और उनकी आरती उतारी गयी। डलास के अलावा वाशिंगटन डीसी में भी उनके लोगों से संवाद के कार्यक्रम हैं। राहुल ने अपनी यात्रा का मकसद दोनों देशों के बीच सम्बन्धों को मजबूत करना बताया है। बात यहीं तक होती तो न मोदी को परेशानी थी और न ही भारतीय जनता को। राहुल की पिछली दो विदेश यात्राएं- अमेरिका और ग्रेट ब्रिटेन की, मोदी को परेशान कर चुकी थी। भारत में तानाशाही के बढ़ते खतरों के बारे में उन्होंने लोगों को आगाह किया था तथा पश्चिम जगत को अवगत भी कराया। इसे लेकर भाजपा के आईटी सेल ने काफी हाय-तौबा मचाई थी और यह कहकर राहुल की आलोचना की थी कि वे विदेश में भारत की छवि को खराब कर आये हैं।

हालांकि लोगों पर इसका कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा था।राहुल की पहली दोनों यात्राओं ने यह संदेश दिया था कि राहुल की जो छवि भाजपा तथा उसके संगठनों ने बनाई थी, लोगों ने इसके विपरीत उन्हें अत्यंत परिपक्व और समझदार नेता बताया था। खुद पित्रौदा ने कहा है कि %राहुल अपने पिता से कहीं अधिक समझदार नेता है।% इसका कारण यह हो सकता है कि राजीव को कमान उनकी मां इंदिरा गांधी की बनाई जमीन पर मिली थी जबकि राहुल पिछले दस वर्ष से अधिक समय से मोदी का मुकाबला विषम परिस्थितियों में कर रहे हैं। उन पर लोगों ने अब यह आरोप लगाना भी छोड़ दिया है कि वे यह सब पीएम बनने के लिये कर रहे हैं।

लोगों को अब भी याद है कि 2004 में वे मंत्री बन सकते थे और 2009 में तो उनके पास प्रधानमंत्री बनने का तक अवसर था। इसलिये अब आईटी सेल का यह अस्त्र भोंथरा हो गया है। लोकसभा में विपक्ष के नेता बनने का उनका सफर कठिन रहा है। तमाम तरह के भीतरघातों एवं विरोधी दलों के विषैले प्रचार के बीच उन्होंने सकारात्मक राजनीति की मशाल जलाये रखी। उनका मखौल उड़ाया गया लेकिन नफरत के बाजार में मुहब्बत की दूकान ने लोगों को आकर्षित ही किया।

राहुल को इस अमेरिका दौरे में कैपिटल हिल पर कई लोगों से निजी संवाद का मौका मिलेगा। इस दौरान वे राष्ट्रीय प्रेस क्लब के सदस्यों से भी बातचीत करेंगे।

सिनेमा का असहनीय सच

महिलाएं जागरूक हो रही हैं, वे अब बलात्कार के लिए खुद को दोषी नहीं मानतीं। वे समाज से सवाल पूछ रही हैं। भ्रूण-हत्या, दहेज-हत्या, रेप, विधवा और तलाकशुदा लड़कियों के बारे में पुरुषों की सोच, लड़कियों की पवित्रता पर जोर, सेक्स को लेकर संकुचित, गंदी मानसिकता का नुकसान महिलाओं को ही नहीं, पुरुषों को और सारे समाज को भी उठाना पड़ रहा है। राजस्थान, हरियाणा, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार जैसे राज्यों में दूसरे राज्यों से लड़कियां ब्याह के लिए ख़रीदकर लाई जाती हैं। ऐसे में घर के कई पुरुष उस एक महिला के साथ यौन संबंध बनाते हैं।

आसमान में सितारे जगमगा रहे हैं और चांद अपनी सोलह कलाएं बिखेर रहा है, पर नजदीक जाते ही पता चलता है कि न सितारों के पास अपनी रौशनी है, न ही चांद ऐसा खूबसूरत है!% यह किसी साहित्यकार की पंक्ति होती तो हम ऐसी अभिव्यक्ति पर मुग्ध होते; लेकिन यह पंक्ति लिखी है, जस्टिस के. हेमा ने। जस्टिस हेमा के नेतृत्व में केरल सरकार ने मलियाली फिल्म-जगत में फैली गंदगी की जांच के लिए एक आयोग गठित किया था।कहानी फरवरी 2017 से शुरू होती है। खबर आई थी कि केरल की एक जानी-मानी हीरोईन की कार कुछ गुंडों ने अगवा की, उनके साथ छेड़छाड़ की और उसका वीडिओ भी बनाया। खबर फैली तो हंगामा मचा। इससे आहत मलियाली फिल्म जगत की चंद महिला कलाकारों ने, मई 2017 में %विमेन इन सिनेमा कलेक्टिव% (डब्ल्यूसीसी) नामक एक संगठन बनाया जिसने केरल सरकार पर दबाव बनाया कि वह मलयाली सिनेमा उद्योग में हो रहे महिलाओं के शोषण की जांच करके उपयुक्त कार्रवाई करे।

नतीजे में राज्य सरकार ने केरल हाईकोर्ट की रिटायर्ड जस्टिस के. हेमा के नेतृत्व में तीन सदस्यों की समिति बनाई। इस समिति में जस्टिस हेमा के अलावा मलयालम फिल्मों की ख्यात अभिनेत्री शारदा और सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी केबी वलसाला कुमारी शामिल थीं। समिति ने सारे मामले की जांच की और 2019 में सरकार को अपनी रिपोर्ट सौंप दी। तब से सरकारी अनिर्णय में दबी यह रिपोर्ट तब जाकर सार्वजनिक हुई जब %सूचना के अधिकार कानून% (आरटीआई) के तहत राज्य के सूचना आयुक्त ने सरकार को रिपोर्ट सार्वजनिक करने का आदेश दिया।

सरकार के कहने पर सूचना आयुक्त ने समाज के हित में अब भी इसके कई हिस्सों, खासकर नामों को सार्वजनिक नहीं करने के निर्देश दिए हैं। 19 अगस्त 2024 को उजागर हुई इस रिपोर्ट ने केरल में जलजला ला दिया है। रोज ही नई-नई महिलाएं, अपने साथ हुए यौनिक

अन्याय की बात लेकर सामने आ रही हैं और मलियाली फ़िल्म जगत की बड़ी-बड़ी हस्तियाँ मुंह छिपाती, त्यागपत्र देती नज़र आ रही हैं।

अपने दो साल के कार्यकाल में %हेमा समिति% ने केरल के फिल्म-उद्योग की गहराई से छानबीन की। शुरू में कलाकार समिति के सामने आकर बातें नहीं बता रहे थे इसलिए पूरी जांच को गोपनीय रखा गया। समिति ने अपने ध्येय के बारे में लिखा ~%यह समिति मलियाली सिनेमा उद्योग में लैंगिक शोषण और सुरक्षा के उपायों की जांच के लिए बनी है, न कि अपराधियों के नाम उजागर करने के लिए।%

रिपोर्ट ने यह भी कहा कि इंडस्ट्री में सब एक जैसे नहीं हैं। कुछ अच्छे लोग भी हैं, भले गिनती के हों। मशहूर कलाकारों- टेक्नीशियनों तथा अन्य लोगों की बड़ी संख्या है जो खुले आम महिलाओं का शोषण करते हैं, उस पर गर्व भी करते हैं और उसे मर्दानगी समझते हैं। कुछ पुरुषों ने यह कहकर बात को हल्का करने की कोशिश की कि ऐसी घटनाएं केवल फिल्म जगत में नहीं होतीं, बल्कि समाज के लगभग सभी व्यवसायों में होती हैं।

महिलाओं ने बताया कि यहां सिनेमा जगत में उनके सामने पहली शर्त यही रखी जाती कि क्या वे हर तरह का समझौता करने को तैयार हैं। ऐसी शर्त किसी दूसरे व्यवसाय में नहीं रखी जाती है। फिल्मी दुनिया में यह धारणा भी बनी हुई है कि पैसे और ग्लैमर के लिए जो लड़कियां इस क्षेत्र में आती हैं, वे किसी भी तरह का समझौता कर सकती हैं। इस सोच के कारण यौन संबंधों की मांग, उसकी अपेक्षा रखने में किसी को कोई हिचक या संकोच नहीं होता है।

आउटडोर शूटिंग संकट का दूसरा रूप लेकर आता है। लड़कियों के होटल के दरवाजे शराब में धुत्त लोग जोर-जोर से ठोकते हैं - इस तरह कि दरवाजा तोड़कर वे भीतर ही आ जाएंगे। %हमें अगली सुबह उन्हीं पुरुषों के साथ ऐसे काम करना पड़ता है, जैसे रात में कुछ हुआ ही न हो ! कई बार तो उसी हीरो के साथ हमें अंतरंग सीन भी करने पड़ते हैं जिसने रात में हमारे साथ वहशीपना किया था; और ऐसे में यदि हमारा सही भाव न आए तो उसी दृश्य का बार-बार रिटेक होता है और निर्देशक की डांट अलग पडती है !%आम लोग बड़ी आसानी से पूछ लेते हैं कि आप पुलिस के पास क्यों नहीं गईं? यही लोग तब एकदम अलग रवैया अपनाते हैं जब उनके घर की महिला पर अत्याचार हुआ हो। समिति ने लिखा है कि %विशाखा गाइड लाइन% का वर्तमान स्वरूप फ़िल्मी दुनिया के लिए अपर्याप्त है। सरकार को इसकी कोई नई, स्वतंत्र व्यवस्था खड़ी करनी होगी।

%हेमा कमिटी% न केवल मलयाली फ़िल्म जगत के पुरुषों के लिए, बल्कि सारे व्यवसायों के पुरुषों के लिए फिर से एक मौका बनाती है कि वे अपनी बीमार मानसिकता से बाहर निकलें। पुरुषों को अपनी आंतरिक गंदगी साफ करनी चाहिए। महिलाओं का यौन शोषण एक बीमार मानसिकता है, उसका हर किसी को विरोध करना चाहिए। ऐसा नहीं करने का ही परिणाम है कि यह खतरा हमारे दरवाजे पर आ खड़ा हुआ है। कोलकाता में महिला डॉक्टर का रेप और हत्या तथा स्कूलों में हमारे बच्चों के यौन शोषण को हम भूलेंगे तो भूल करेंगे।

महिलाएं जागरूक हो रही हैं, वे अब बलात्कार के लिए खुद को दोषी नहीं मानतीं। वे समाज से सवाल पूछ रही हैं। भ्रूण-हत्या, दहेज-हत्या, रेप, विधवा और तलाकशुदा लड़कियों के बारे में पुरुषों की सोच, लड़कियों की पवित्रता पर जोर, सेक्स को लेकर संकुचित, गंदी मानसिकता का नुकसान महिलाओं को ही नहीं, पुरुषों को और सारे समाज को भी उठाना पड़ रहा है। राजस्थान, हरियाणा, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार जैसे राज्यों में दूसरे राज्यों से लड़कियां ब्याह के लिए ख़रीदकर लाई जाती हैं। ऐसे में घर के कई पुरुष उस एक महिला के साथ यौन संबंध बनाते हैं।

इन राज्यों में शादी तथा किसी भी उत्सव में, आर्केस्ट्रा के नाम पर 12-13 या उससे भी कम उम्र की बच्चियों से अश्लील नाच नचवाया जाता है। यह सब सारे समाज में विष घोल रहा है। समाज को ऐसी प्रथाएं बंद करनी होंगी, पुरुषों को ऐसे चलन का विरोध करना होगा, मां-बहन की गालियां देना शर्म का विषय बनाना होगा। बीमार प्रथाएं, रिश्तों की गलत मान्यताएं, शराब व दूसरे नशों का चलन सब हमारे नैतिक पतन को तेज कर रहा है। इंटरनेट हमारे बच्चों को बीमार बना रहा है। बीमार समाज बीमार बच्चों की फसल ही तो उगा सकता है।

हमें %जस्टिस के. हेमा समिति% का आभारी होना चाहिए कि उसने हमें आईना दिखा दिया है। उसने जो प्रमाण इकट्ठा किए हैं, जैसे दस्तावेज पेश किए हैं, उनमें बदलाव की ताकत है, बशर्ते कि हम बदलने को तैयार हों तथा कानून उस बदलाव को समर्थन देता हो। पुरुष समाज शतुर्मुर्ग की तरह रेत में मुंह गड़ाए रहेगा तो उसके हाथ धूल-गर्द के सिवा कुछ भी नहीं आएगा - स्त्री तो अब उसकी पकड़ से बाहर निकल ही रही है। पुरुष समाज पतित भी होगा और बिखर भी जाएगा।

संगीत से रहे स्वस्थ निरोगी काया

एक तरफ जहां योग्य से मनुष्य शरीर, मन और मस्तिष्क को साधता है, वहीं संगीत हमारी आत्मा को शुद्ध करता है। संगीत का उद्देश्य केवल मनोरंजन करना नहीं है, आधुनिक एवं मीडिया में बने रहने के इच्छुक संगीतज्ञों को छोड़ दिया जाए तो हर तरह का संगीत शुद्धता व पवित्रता पर जोर देता है। स्वरों की उपासना, रियाज, शास्त्र शुद्ध पद्धति द्वारा आराधना कर अंतर्मन में गहराई तक उतारना संगीत का मुख्य लक्ष्य है। इसलिए संगीत शास्त्र व आध्यात्मिक एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, क्योंकि दोनों का उद्देश्य समान है आत्म साक्षात्कार।

मानव जीवन की आवश्यकताओं में पहला सुख निरोगी काया माना गया है। निरोगी शरीर व मस्तिष्क हर किसी के लिए आवश्यक है। आत्म साक्षात्कार हेतु प्रयासरत कई साधक बीमार शरीर के कारण प्रगति नहीं कर पाते हैं। जिस प्रकार संगीत एक उपासना का तरीका है। उसी प्रकार का योग शास्त्र जीवन का मित्र है। यदि शरीर स्वस्थ रहे तो हम जीवन का आनंद ले सकते हैं।संगीत में रियाज के लिए एकाग्रता की आवश्यकता होती है। योग शास्त्र हमारे शरीर को स्वस्थ रखने में सहायक है। मन की, मस्तिष्क की एकाग्रता, प्रसन्नचित्त व्यक्तित्व योग शास्त्र की देन है।संगीत में स्वरों की शुद्धता पर जोर दिया जाता है, पर योग शास्त्र में आसन व मुद्राओं पर जोर दिया जाता है। दोनों में ही स्वर व मुद्रा की श्रेष्ठता से आनंद और स्वास्थ्य पाया जा सकता है। इस दृष्टि से देखा जाए तो दोनों शास्त्र एक-दूसरे के पूरक हैं।

संगीत साधना फिर चाहे गायन हो, वादन हो, कलाकार को एक ही मुद्रा में घंटों बैठे रहना पड़ता है। उसी तरह से योग में भी एक अवस्था में बैठना आवश्यक है। संगीत में एक ही स्थान पर साधना करने के लिए शरीर, मन व मस्तिष्क पूर्ण स्वस्थ होना चाहिए। इसके लिए योग सर्वश्रेष्ठ है। योग से शरीर, मन, मस्तिष्क स्वस्थ रहता है। मनुष्य एकाग्र रहता है व प्रसन्न मन से काम करता है। विभिन्न वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि संगीत साधना व योग साधना दोनों से मनुष्य के जीवन में शक्ति का विकास होता है। अतः कहा जा सकता है कि शरीर तथा मन को स्वस्थ्य, प्रफुल्लित रखने के लिए योग शास्त्र व संगीत शास्त्र दोनों समान रूप से आवश्यक है। दोनों से शरीर, मन, मस्तिष्क स्वस्थ रहता है, एकाग्रता रहती है। योग की तरह ही संगीत से तनाव भी दूर होता है। संगीत का असली आनंद सड़क पर, बगीचे में, बरामदे में, छत पर सुबह, शाम घूमते हुए उठाना चाहिए। रात में सोने से 2 घंटे पहले सुपाच्य भोजन करना चाहिए और दिन में कम से कम एक बार दिल खोलकर हंसना चाहिए।

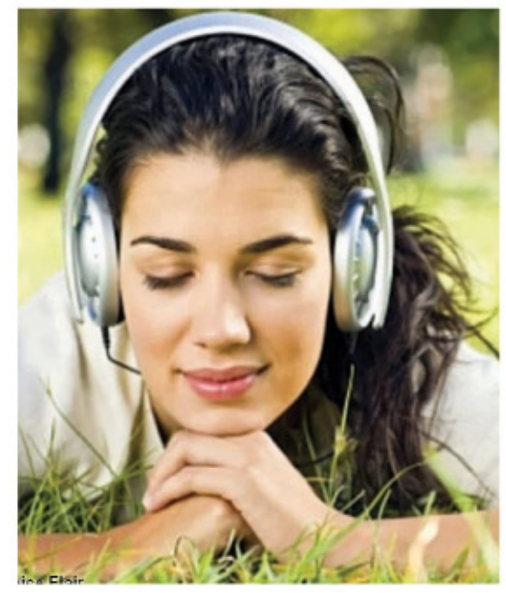

बरतें सावधानी

गर्भ–निरोधक का कोई भी उपाय करने से पहले डॉक्टर से दवाओं के असर, इनके असफल होने की संभावना और गर्भाशय से बाहर गर्भ धारण की संभावनाओं के बारे में पर्याप्त जानकारी प्राप्त कर लें। डॉक्टर की सलाह पर ही आप अपने लिए सही विकल्प चुनें।

अनचाही प्रेग्नेंसी रोकने खाएं गर्भ-निरोधक टैबलेट्स

किसी नन्हीं जान को धरती पर लाने का निर्णय आज के दौर में सोचा-समझा होना चाहिए। सोचिए! न चाहते हुए अगर कभी आपको कंसीव करना पड़े, तो आप उस स्थिति में क्या करेंगी? आपके पास दो ही रास्ते होंगे। या तो आप अनचाही प्रेग्नेंसी को स्वीकार करें या फिर अबॉर्शन करवाएं। अबॉर्शन यानी गर्भपात इतना आसान भी नहीं होगा। इसमें शारीरिक बल्कि मानसिक पीड़ा से भी आपको गुजरना पड़ता है। यह आपकी जान के लिए खतरा भी बन सकता है। इससे बेहतर तो यही होगा कि आप पहले से सही प्रोटेक्शन लें ताकि इस तरह की समस्या आपकी जिंदगी में आए ही नहीं। जी हां, हम बात कर रहे हैं कॉन्ट्रासेप्टिव यानी गर्भ-निरोधक उपायों की।

अब आपके मन में यह सवाल भी उठता होगा कि गर्भ-निरोधक के लिए गोली सही है या फिर इंजेक्शन। आपका सवाल जायज ही है, विशेषकर तक जब बाजार में कई सारे विकल्प हों। आपको यहां हम कुछ विकल्पों के बारे में बता रहे हैं:

आई पिल्स: अनचाही प्रेग्नेंसी को रोकने का सबसे सटीक उपाय है इमरजेंसी कॉन्ट्रासेप्टिव पिल्स, जैसे कि आई पिल। यह पिल्स असुरक्षित सेक्स या किसी अन्य कॉन्ट्रोसेप्टिव के नाकाम होने के बाद अनचाही प्रेगनेन्सी को रोकने का एक सुरक्षित और सरल तरीका है। यह तीन तरीके से काम करती है: पहला यह ओवरी से निकलने वाले एग्स को बाहर आने से रोकती है।

दूसरा, अगर कोई एग बाहर आ गया है, तो ये स्पर्म को उसे फर्टिलाइज करने से रोकती है और तीसरा, अगर एग पहले ही फर्टिलाइज हो चुका है, तो ये उसे गर्भाशय से जुड़ने से रोकती है। लेकिन यह तभी सफल होता है, जब इसे असुरक्षित सेक्स के बाद जल्द-से-जल्द, यानी 72 घंटों के भीतर ले लिया जाए।जितनी जल्द आप इसका इस्तेमाल करेंगी, उतना ही ज्यादा असरदार सिद्ध होगा। यह विकल्प सुरक्षित तो है, लेकिन रेग्युलर बर्थ कंट्रोल के तौर पर इसका लगातार प्रयोग करना ठीक नहीं है। इसे एक महीने में एक से ज्यादा बार इस्तेमाल कर सकते हैं, लेकिन इसे एक इमरजेंसी कॉन्ट्रासेप्टिव के तौर पर ही इस्तेमाल करें। ये इमरजेंसी पिल्स आपको अबॉर्शन के शारीरिक व मानसिक कष्ट से तो बचाती ही है, हॉस्टिपल के भागदौड़ और खर्चों से भी छुटकारा दिलाती है।

ये भी हो सकते है विकल्प

गर्भनिरोधक गोलियां- गर्भनिरोधक गोलियां जिन्हें सामान्यतः 'पिल्स' कहा जाता है, ओस्ट्रोजेन और प्रोजेस्टोजेन का सम्मिलित रूप हैं। गर्भनिरोधक गोलियों के नियमित इस्तेमाल से पीरियड्स कम पीड़ादायक और नियमित हो जाता है। हालांकि कुछ महिलाओं को गर्भनिरोधक गोलियों के लगातार इस्तेमाल से सिर दर्द, थकावट, त्वचा संबंधी परेशानियां आदि समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है।

मिनी पिल्स: गर्भनिरोधक गोलियों का एक विकसित रूप अब उपलब्ध है, जिसे मिनी पिल (प्रोजेस्टिन ओनली पिल्स) कहते हैं। यदि आप स्तनपान करवा रही हैं, तो यह शरीर में दूध बनने की प्रक्रिया को बदलती नहीं हैं। जब शरीर को पीओपी यानी मिनी पिल की आदत पड़ जाती है, तो इसका कुछ नकारात्मक असर भी दिखने लगता है, जिसमें सिर दर्द आदि प्रमुख है। सामान्यतः दो महीने के बाद ये परेशानियां खत्म हो जाती हैं, पर अगर यही लक्षण लंबे वक्त तक दिखें, तो डॉक्टरी सलाह जरूर लें।

इन्ट्रा युटरीन डिवाइस (आईयूडा- यह टी अल्फाबेट की आकृति में छोटा-सा, प्लास्टिक का यंत्र है जिसके अंत में धागा लगा रहता है। गर्भधारण को रोकने के लिए आईयूडी को गर्भाशय के अंदर लगाया जाता है। इसमें कॉपर आईयूडी या कॉपर टी ज्यादा प्रचलन में है। इसमें प्लास्टिक ट्यूब के अंदर कॉपर की तार लगी रहती है। एक नई हारमोन कॉपर टी भी उपलब्ध है, जो सामान्य कॉपर टी ज्यादा प्रभावशाली होता है। कॉपर टी को आप पांच से दस साल के लिए लगवा सकती हैं। इन सब के अलावा इंजेक्शन, फीमेल कंडोम आदि भी गर्भनिरोधक के अन्य विकल्प हैं।

रोज खाएं आंवला

आंवला भले ही खट्टा और कसैला हो, पर यह पौष्टिक होता है। आयुर्वेद की अनेक दवाओं में आंवले का प्रयोग खूब किया जाता है। इसे त्रिदोष नाशक भी बताया गया है। यह शारीरिक दुर्बलता को दूर करके शरीर को हृष्ट-पुष्ट बनाता है। आंवले को आप चाहे जिस रूप में सेवन करें, इसकी पौष्टिकता कम नहीं होती है। अमृत आंवला के और भी हैं कई गुणः

सूखे आंवले का एक छोटा चम्मच चूर्ण सुबह-शाम छाछ के साथ खाने से बवासीर की समस्या ठीक होती है।

आंवले के चूर्ण में सेंधा नमक मिलाकर सरसों तेल के साथ मसूड़ों पर मलने से मसूड़ों से रक्त आना बंद हो जाता है। यदि कब्ज आदि की समस्या रहती हो, तो रात को सोते समय आंवले का एक चम्मच चूर्ण पानी के साथ लेने से फायदा मिलता है।

आंवले के आधा चम्मच रस में 3 ग्राम पीपल का चूर्ण और दो चम्मच शहद मिलाकर सेवन करने से खांसी और दमा में आराम मिलता है।

एक चम्मच आंवले के रस में थोड़ा-सा शहद मिलाकर इसे चाटें। पित्त की समस्या दूर होती है। द्यबुढ़ापे में नित्य सुबह-शाम बिना कुछ खाए-पिए आंवले का मुरब्बा सेवन करे, तो व्यक्ति दीर्घजीवी होता है।

तीन ग्राम आंवले के चूर्ण में 6 ग्राम शहद मिलाकर रोजाना एक बार 3द्द दिनों तक खाने से श्वेत प्रदर में लाभ होता है।

प्रतिदिन प्रातःकाल आंवले के मुरब्बे में चांदी का वर्क लगाकर खाने से उच्च रक्तचाप ठीक होता है।

सूखे आंवले तथा जामुन की गुठली दोनों को समभाग लेकर चूर्ण बना लें। प्रतिदिन प्रातःकाल बासी मुंह 7 ग्राम चूर्ण का सेवन गाय के दूध के साथ करने से मधुमेह ठीक हो जाता है। गर्भावस्था के दौरान यदि किसी महिला को वमन की शिकायत हो, तो आंवले का मुरब्बा खाएं।

आंवला और आम की गुठली दोनों को समान मात्रा में पीसकर बालों में लेप करने से सफेद बाल काले, घने, मुलायम तथा चमकदार हो जाते हैं।

यूं रखें दांतों को स्वस्थ

यह सही है कि दांत के दर्द का इलाज महंगा होता है लेकिन अगर थोड़ी सावधानी बरती जाए और कुछ आदते डाल ली जाएं तो आप लंबे समय तक दांतो के डॉक्टर के पास जाने से बच सकते है क्योकि डेंटिस्ट के पास लगातार जाना किसी सिरदर्द से कम नही है। यहां पेश है ऐसे ही 10 खास तरीके जिन्हे आजमा कर आप चमकती मुस्कान पा सकते है।

1. दिन में कम से कम आठ से दस ग्लास पानी पिएं। जितना पानी आप पिएंगें उतना ही आपके दांत साफ होंगें। इसके अलावा यह चाय, कॉफी, शराब, सोडा आदि के दागों को भी दांतों से मिटाने में कारगर साबित होगा।
2. अपने खाने में फल और सब्जी शामिल करें। सेब, खीरा, गाजर आपके दांतों को प्राकृतिक रूप से साफ करते हैं। यह आपके दांतों में फंसे खाने को भी निकालते हैं और मसूड़ों की समस्या दूर होती है।
3. खाने के बाद पनीर का टुकड़ा खाने से आपके दांत चमकदार रहते हैं।
4. च्यूइंगम खाने से सलाइवा का निर्माण होता है जो आपके दांतों से प्लाक एसिड को साफ करता है। साथ ही आपके दांतों के इनैमल को मजबूत बनता है।

5. जूस और सोडा पीने के बाद ब्रश नहीं करना चाहिए। हो सके तो कॉफी और वाइन स्ट्रॉ से पिएं। इससे इनका सीधा संपर्क आपके दांतों से नहीं हो पाएगा और आपके दांत हमेशा चमकते रहेंगें।
6. हमेशा सॉफ्ट ब्रश का इस्तेमाल करें। अगर आप सख्त ब्रश का इस्तेमाल करते हैं तो उसे कुछ देर गर्म पानी मे डुबोकर फिर ब्रश करें।
7. चॉकलेट व कैंडी बार भी आपके दांतों के लिए नुकसानदेह हैं। इनकी जगह बादाम, वेजमाइट क्रैकर्स चीज के साथ दही और ताजा फल आदि खाना चाहिए।
8. दांतों के साथ ही जीभ की सफाई भी जरूरी है। टंग क्लीनर का इस्तेमाल रोजाना करें। यह आपके दांतों को हाईजीनिक बनाएं रखता है, साथ ही मुंह से आने वाली बदबू को भी दूर करता है।
9. चीनी और स्टॉर्च का इस्तेमाल कम से कम करना चाहिए। यह बैक्टीरिया पैदा करते हैं जो आपके दांतों को नुकसान पहुंचाते हैं।
10. खाने के बाद दांतों को हाइड्रोजन पेरॉक्साइड से साफ करना चाहिए, ताकि आपके दांतों से बैक्टीरिया दूर हों और वे सुंदर दिखें। मगर हमेशा एक बात का ध्यान रखें कि हाइड्रोजन पेरॉक्साइड को निगलना नहीं चाहिए। इससे सिर्फ गरारे करने चाहिए।

भूखे रहकर न घटाए वजन

यदि आप सोचती है भूखे रहकर वजन घटाना सही है तो यह गलत है। भूखे रहने से न सिर्फ आपके शरीर को नुकसान पहुंचता है बल्कि यह भी हो सकता है कि एक समय बाद आपका वजन और बढ़ जाए।

इसलिए व्यायाम विशेषज्ञों से लेकर चिकित्सकों तक सभी संतुलित और पौष्टिक भोजन एवं एक्सरसाइज के साथ वजन घटाने की सलाह देते हैं न कि भूखे रहने की। बैलेंस डाइट आपके शरीर को सही मात्रा में ऊर्जा देने के अलावा क्रियाशील बनाए रखने में भी मदद करती है। इसलिए ब्रेकफास्ट से लेकर लंच और डिनर तक हर चीज आपके लिए महत्वपूर्ण है। वह भी वक्त पर तथा पौष्टिक तत्वों के साथ।

भूखे रहने से आपके शरीर में पौष्टिक तत्वों की कमी तो होती ही है, बल्कि आप डायबिटीज, उच्च रक्तचाप आदि जैसी कई जीवनशैली जनित बीमारियों के शिकार भी आसानी से बन सकते हैं।

आपकी मसल्स को स्वस्थ तथा क्रियाशील बने रहने के लिए रोज नियमित रूप से पौष्टिक भोजन की आवश्यकता होती है। भूखे रहने से न केवल शरीर की मेटाबॉलिज्म रेट पर विपरीत असर पघ्ता है बल्कि आपका शरीर और तेजी से फैट्स स्टोर करने लगता है। यही कारण है कि जो लोग भूखे रहकर वजन घटाना चाहते हैं वे जब नॉर्मल डाइट पर भी आते हैं तो उनका वजन पहले से कहीं ज्यादा बघ जाता है।

इसलिए अगर आप फिट रहना चाहते हैं या वजन घटाना चाहते हैं तो पेटभर कर संतुलित और पौष्टिक भोजन खाइए और नारियल के पानी में दूध से ज्यादा पोषक तत्व होते हैं क्योंकि इसमें कोलेस्ट्रोल और वसा की मात्रा नहीं है। नारियल पानी में बेहद गुण पाए जाते हैं। इसमें बहुत ज्यादा मात्रा में इलेक्ट्रोलाइट और पोटेशियम पाया जाता है, जो ब्लड प्रेशर और दिल की गतिविधियों को दुरुस्त करने में सहयोगी होता है।

जानकारी

घर पर करें 30 सेकंड में ये 3 टेस्ट, आपको पता चल जाएगा स्वस्थ हैं या बीमार

हम किसी न किसी कारण के नियमित रूप से अपनी स्वास्थ्य जांच नहीं करा पाते तो हम आपको ऐसे टेस्ट के बारे में बता रहे हैं, जिनके जरिए आप आसानी से पता लगा सकते हैं कि आप बीमार हैं या स्वस्थ। अधिकतर लोग या कहें हम लोग जब तक बीमार नहीं पड़ते, तब तक किसी भी प्रकार की स्वास्थ्य जांच नहीं कराते। दरअसल जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है ठीक वैसे हमारी इम्युनिटी कमजोर होने लगती है और हम मौसम बदलने पर बीमार होने लगते हैं। बीमार होने के बाद हम मंहगे-मंहगे टेस्ट कराते हैं तब जाकर बीमारी का पता लगा पाते हैं। डॉक्टर हर दो साल में लोगों को फिजिकल चेकअप कराने की सलाह देते हैं, लेकिन हम सलाह कम मानते हैं और देते ज्यादा हैं। ऐसा करने वाले लोग वर्षों तक अपना मेडिकल टेस्ट नहीं कराते और उनका शरीर रोगों का घर बन जाता है। अगर आप भी उन लोगों में से हैं, जो किसी न किसी कारण के नियमित रूप से अपनी स्वास्थ्य जांच नहीं करा पाते तो हम आपको ऐसे टेस्ट के बारे में बता रहे हैं, जिनके जरिए आप आसानी से पता लगा सकते हैं कि आप बीमार हैं या स्वस्थ। इन टेस्ट को करने में सिर्फ आपको 30 सेकंड ही लगेंगे, लेकिन ध्यान रखें कि सटीक रिपोर्ट के लिए आप मेडिकल जांच ही कराएं।

हाथों की उंगलियों से जानें स्वास्थ्य

नाखून की जड़ को दबाएं: इस टेस्ट को करने के लिए सबसे पहले आप अपने दाहिने अंगूठे और तर्जनी उंगली से अपने किसी भी नाखून की जड़ को दबाएं। ऐसा करते वक्त आप अपने बाएं हाथ की उंगलियों के ऊपरी हिस्से पर दबाव डालें। ऐसा अपने बाए हाथ के अंगूठे से शुरू करें। अंगूठे को 3 से 5 सेकंड तक पकड़कर रखें। अंगूठे के बाद सभी उंगलियों के साथ इस प्रक्रिया को दोहराएं। इस प्रक्रिया को होने के बाद हाथ को देखें। अगर दबाव के बाद आपकी उंगली का ऊपरी हिस्सा दो सेकंड में सफेद से लाल नहीं हुआ तो समझ लीजिए कि आपके शरीर में रक्त प्रवाह पर्याप्त नहीं हो रहा है।

उंगली के हिसाब से जानें समस्या

अंगूठा: अगर आपको अंगूठे का नाखून दबाने से दर्द हो रहा है, तो यह इस बात का संकेत है कि आपको फेफड़ों की समस्या हो सकती है।

तर्जनी: तर्जनी उंगली आपकी बड़ी आंत से जुड़ी होती है। अगर आपको इस उंगली को दबाने से दर्द होता है तो यह बड़ी आंत में दिक्कत की ओर संकेत करता है। इसके कारण आपको कब्ज की शिकायत हो सकती है।

बीच वाली उंगली और अनामिका: बीच वाली उंगली और अनामिका में दर्द हृदय संबंधी समस्याओं की ओर इशारा करता है।

छोटी उंगली: आपके हाथ की सबसे छोटी उंगली में दर्द आपकी छोटी आंत की परेशानी की ओर संकेत करता है।

मुट्ठी बनाकर देखें नसें स्वस्थ हैं या नहीं

इस दूसरे टेस्ट को करने के लिए सबसे पहले आप मुट्ठी बना लें। मुट्ठी को 30 सेकंड के बाद खोलें। हाथ खोलने पर आपको आपकी मुट्ठी सफेद दिखाई देगी। हाथ खोलने के तुरंत बाद अगर आपके हाथ का रंग सफेद से लाल होना शुरू हो जाए तो इसका मतलब ये है कि आपकी रक्त वाहिकाएं सही काम कर रही हैं और आप पूरी तरह से स्वस्थ हैं, लेकिन अगर ऐसा होने में वक्त लग रहा है तो आपकी धमनियों में कुछ परेशानी है। दरअसल मुट्ठी बनाने से रक्त वाहिकाओं पर दबाव पड़ता है और रक्त प्रवाह रुक जाता है और जैसी ही आप हाथ खोलते हैं तो आपका रक्त प्रवाह फिर लौटना शुरू हो जाता है।

अगर हम किसी फुटबॉल खिलाड़ी या किसी भी खिलाड़ी को देखते हैं, तो उसकी हृष्ट-पुष्ट जांघ उसके शरीर की मजबूती का प्रतीक मानी जाती है। यह सच है कि मजबूत जांघ, मजबूत और स्वस्थ शरीर का प्रतीक होती है। हम भी योगासनों से जांघों को हृष्ट-पुष्ट बना सकते हैं, किंतु यह प्रशिक्षक के मार्गदर्शन में होना चाहिए। आइए जानते हैं पांच योगासनों के बारे में जो जांघ मजबूत करते हैं-

जांघ मजबूत करने के लिए उपयोगी हैं ये आसन

एक बहुत आसान पोज, जो आपकी कमर को राहत देकर आपके कूल्हों और पैरों को वर्कआउट के लिए वार्मअप करता है। इसे ऐसे करें-

- चटाई पर पीठ के बल लेट जाएं।
- प्रत्येक पैर को जांघ के बाहर की ओर से पकड़ें।
- पैरों को बीच में पकड़ें, जहां आर्क है, ज्यादातर लोगों के लिए ज्यादा सुविधाजनक होता है।
- अपने चेहरे की मांसपेशियों को ढीला छोड़ें और लंबी सांस लेकर इस पोज में एक मिनट तक रहें।

सुप्त बद्ध कोणासन

यह कूल्हों को गतिशील करने के लिए अच्छा पोज है। इस पोज से भी जांघ की अंदरुनी मांसपेशियां मजबूत होती हैं। एक सावधानी बरतें कि लंबी सांस पर ध्यान केंद्रित करें और आप पाएंगे कि आप पैर ज्यादा खोल पाते हैं और ज्यादा देर तक उस पोज में भी रह सकते हैं।

- चटाई पर पीठ के बल लेट जाएं। अपनी बांहों को बगल में शरीर से 45 डिग्री के कोण पर रखें।
- पैरों को घुटने के पास मोड़ें और पैर के तलुओं को नमस्ते के अंदाज में जोड़ने की कोशिश करें।
- अपनी एड़ियों को ग्रोइन के ज्यादा से ज्यादा पास लाने की कोशिश करें, इस दौरान चेहरे या शरीर में तनाव नहीं होना चाहिए।
- ध्यान रखें आपका सिर सीधा होना चाहिए। आंखों को बंद रखें, यह आपको सुस्ताने में मदद करेगा।
- इस पोज में एक मिनट तक रहें और लंबी गहरी सांसें लेना न भूलें।

उपविष्ट कोणासन

बैठने वाली पोजिशन पैर की कुछ मांसपेशियों के लिए बहुत फायदेमंद होती है। यह खड़े होकर की जाने वाली पोजिशन के लिए भी अच्छी शुरुआत की तरह होती हैं, जिसमें मजबूती, लचीलेपन और संतुलन की दरकार होती है।

- चटाई पर बैठकर पैरों को तीन से चार फीट चौड़ाई तक फैला लें।
- अब अपने हाथों को चटाई पर रखें। अपने हाथों से जितना हो सके आगे जाएं।
- अपने सिर, गर्दन को पीठ की सीध में रखें।
- इस पोज में लंबी सांस लें। आराम से धीरे-धीरे हर सांस के साथ जमीन की ओर झुकते रहें।
- इस पोज में जितनी देर आराम से रह सके रहें, लेकिन एक मिनट से ज्यादा नहीं।
- पोज से बाहर निकलने के लिए हाथों को धीरे-धीरे वापस लाएं।

परिघासन

- आपकी कमर को बेहतरीन खिंचाव देने के अलावा यह पोज जांघों और ग्रोइन की मांसपेशियों को खोलकर उनका लचीलापन बढ़ाती है।
- चटाई पर घुटनों के बल बैठिए। अपनी एड़ियों को साथ रखें। पैरों की अंगुलियां जमीन पर और पीठ सीधी।
- दाएं पैर को अपनी दाईं ओर जितना हो सके स्ट्रेच करें। घुटना छत की ओर होना चाहिए।
- दाएं पैर के तलुए को जमीन पर रखें।
- अब अपनी दोनों बांहों को सिर के ऊपर ऊठाएं और सीधा रखें।
- धड़ और दाईं बांह को लंबे किए हुए दाएं पैर की तरह झुकाएं।
- दाएं हाथ को दाएं पैर पर रखें। (संभव हो तो दाईं कलाई को दाईं एड़ी पर रखें)
- अपनी हथेली का मुंह छत की तरफ करें।
- अब अपनी बाईं बांह को सिर के ऊपर से दाईं ओर लाएं, जो लोग लंबी अवधि से योगा करते आ रहे हों, वह अपनी बांई हथेली को दाईं हथेली पर रखने की कोशिश कर सकते हैं। इस पोज में आपका बायां कान आपकी बाईं बांह के ऊपरी हिस्से को छूना चाहिए और दायां कान दाईं बांह के ऊपरी हिस्से को।
- इस पोज में कुछ सांसों तक बने रहिए। (तकरीबन 45 सेकंड तक) उसके बाद शुरुआती पोज में आ जाइए।
- आराम कीजिए और समूची प्रक्रिया को बाईं ओर से दोहराइए।

उत्थित त्रिकोणासन

- अंत में एक खड़े होकर किया जाने वाला आसन जो पैर की छोटी मांसपेशियों के लिए चुनौतीपूर्ण होता है। यह शरीर के संतुलन को भी सुधारता है।
- चटाई पर पैर चौड़े करके खड़े हो जाएं।
- दाएं पैर को दाई तरफ की दीवार की तरफ मोड़ें।
- संतुलन के लिए बाएं पैर को थोड़ा सा दाईं तरफ मोड़ें।
- बांहों को उठाएं। कंधे की ऊंचाई पर लाएं, जब तक कि वह जमीन के समानांतर न हो जाए।
- कमर से दाईं ओर झुकें और दाईं हथेली को पैर पर या जमीन पर (जो भी सुविधाजनक हो) रख दें।
- बाईं बांह को सिर के ऊपर उठाकर सिर को धीरे से बाएं हाथ की ओर मोड़ें।
- इस पोज में 30 से 45 सैकंड तक रहें।
- पैरों को वापस लाते हुए शुरुआती स्थिति में आ जाएं।
- अब इसे दूसरी ओर दोहराएं।
- हर बार सारे आसनों की समाप्ति के बाद पांच मिनट के लिए शवासन करना चाहिए। पीठ के बल लेट जाइए, आंखें बंद कीजिए, शरीर को ढीला छोड़ दें। सिर सीधा रखें। हर मांसपेशी से तनाव को मुक्त कर दें। पैर से लेकर बांह, कंधे, गर्दन और सिर तक। आंखों को बंद रखें। अब करवट लेकर उठकर बैठ जाएं। हथेलियों को रगड़कर गर्म करें। फिर उन्हें आंखों पर रख दें। हथेलियों को हटाए बगैर आंखों को धीरे-धीरे खोलें। हाथ नीचे करें और दिन की शुरुआत सकारात्मक ऊर्जा के साथ करें।

सेहत

ज्यादा नमक खाने से पड़ता है दिमाग पर बुरा असर

याददाश्त ही नहीं बुद्धि भी होती है कमजोर

क्या आप जानते हैं कि अधिक नमक का सेवन करने से दिमाग में खून का प्रवाह 25 फीसदी तक कम हो जाता है? हाल ही में हुए एक शोध में पता चला है कि ज्यादा नमक युक्त आहार का सेवन करने से बुद्धिमत्ता में कमी आ सकती है। एक हालिया शोध में यह दावा किया गया है। दिमाग में टाउ प्रोटीन की मात्रा बढ़ने से याददाश्त कमजोर होती है और बुद्धिमत्ता में कमी आ सकती है।

अल्जाइमर का कारण होता है टाउ प्रोटीन

शोध के दौरान वैज्ञानिकों ने व्यवहारात्मक, सेरिब्रोवस्कुलर और मोलिक्युलर स्तर पर परीक्षण किया। इसमें पाया गया कि ज्यादा नमक का सेवन करने वाले चूहों में नाइट्रिक ऑक्साइड की मात्रा कम थी जिससे दिमाग में टाउ प्रोटीन की मात्रा ब? गई थी। टाउ का अधिक स्तर अल्जाइमर का कारण माना जाता है।

डिमेंशिया का सबसे प्रमुख कारण है नमक

न्यूयॉर्क स्थित फिल फैमिली ब्रेन एंड माइंड रिसर्च इंस्टीट्यूट के प्रोफेसर डॉक्टर गिउसेप्पे फरको इस शोध के प्रमुख शोधकर्ता हैं। इस शोध को जर्नल नेचर न्यूरोसाइंस ट्रस्टेड सोर्सेज में प्रकाशित किया गया है। डॉक्टर फरको ने कहा कि ज्यादा नमक के सेवन और खराब दिमाग की कार्यक्षमता के बीच हमेशा से ही संबंध रहा है और ज्यादा नमक का सेवन करना डिमेंशिया का सबसे प्रमुख कारण है।

चूहों पर किया गया अध्ययन

पूर्व में शोधों में शोधकर्ताओं को पता चला कि ज्यादा नमक के सेवन से चूहों में डिमेंशिया के लक्षण दिखने लगे। नमक ऐसे अणुओं का तेजी से उत्पादन करता है, जिससे शरीर में सूजन आती है। इंटरल्यूकिन-17 अणु दिमाग की कोशिकाएं नाइट्रिक ऑक्साइड बनाना कम कर देती हैं। नाइट्रिक ऑक्साइड रक्त वाहिकाओं को चौड़ा करता है और रक्त के प्रवाह में मदद करता है। हालांकि, नाइट्रिक ऑक्साइड की कमी से रक्त का प्रवाह कम हो सकता है।

चूहों पर किए गए अध्ययन में देखा गया कि ज्यादा नमक वाले आहार का सेवन करने से उनमें आईएल-17 का स्तर बढ़ गया और नाइट्रिक ऑक्साइड का स्तर कम हो गया, जिससे दिमाग में खून का प्रवाह 25 फीसदी तक कम हो गया।

सोडियम की ज्यादा मात्रा नुकसानदायक

शोधकर्ता फरको और उनकी टीम का मानना था कि सोडियम की ज्यादा मात्रा दिमाग में हो रहे रक्त प्रवाह को बाधित कर डिमेंशिया के खतरे को बढ़ाती है, लेकिन, शोध के बाद पता चला कि रक्त के प्रवाह की कमी नहीं, बल्कि टाउ प्रोटीन की मात्रा बढ़ने के कारण याददाश्त में कमी आती है।

शोधकर्ताओं ने आठ हफ्ते के चूहों में से कुछ को सामान्य आहार दिया और कुछ को ज्यादा सोडियम वाला आहार दिया। चार से 36 हफ्तों तक चूहों को आहार दिया गया। इसके बाद वैज्ञानिकों के परीक्षण में पाया गया कि ज्यादा नमक का सेवन करने वाले चूहों में नाइट्रिक ऑक्साइड की मात्रा कम थी, जिससे दिमाग में टाउ प्रोटीन की मात्रा बढ़ गई थी। 04 से 36 हफ्तों तक चूहों को सामान्य और सोडियम वाला आहार दिया गया।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। जोखिम से दूर रहना ही बुद्धिमानी होगी। शुभ कार्यों की प्रवृत्ति बनेगी और शुभ समाचार भी मिलेंगे। किसी से कहा सुनी न हो यही ध्यान रहे। अपना कार्य दूसरों के सहयोग से बना लेंगे। लाभकारी गतिविधियों में सक्रियता रहेगी। शुभांक-1-4-6

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): अपने संघर्ष में स्वयं को अकेला महसूस करेंगे। विशेष परिश्रम से ही अभिष्ट कार्य सिद्ध होंगे। व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। बनते हुए कार्यों में बाधा आएगी। विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। चल-अचल सम्पति में वृद्धि होगी। बाहरी सहयोग की अपेक्षा रहेगी। शुभांक-2-4-6

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा): अपने संघर्ष में स्वयं के आर्थिक उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। रोजगार में तरक्की मिलेगी। जमीन जायदाद का लाभ भी हो सकता है। आवास, मकान तथा वाहन की सुविधाएं मिलेंगी। कर्ज तथा रोगों से मुक्ति भी संभव है। शत्रुओं की पराजय होगी। कुछ आर्थिक चिंताएं भी कम होगी। शुभांक-2-5-6

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): उच्चमनोबल रखकर कार्य करें, सफल होंगे। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। शुभांक-2-5-7

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): यात्रा का दूरगामी परिणाम मिल जाएगा। कामकाज में आ रही बाधा को दूर कर लेंगे। सुविधा और समन्वय बना रहने से कामकाज में प्रगति बनेगी। लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। बुद्धितत्व की सक्रियता से अल्प लाभ का हर्ष होगा। कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य बनाने के लिए भाग-दौड़ रहेगी। शुभांक-4-6-7

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): घर-परिवार में प्रसन्नता व सहयोग का वातावरण बनेगा। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। व्ययाधिक्य का अवसर आ सकता है। कामकाज की अधिकता रहेगी। लाभ भी होगा और पुराने मित्रों का समागम भी। बाहरी सहयोग की अपेक्षा रहेगी। श्रम अधिक करना पड़ सकता है। शुभांक-4-6-8

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते): शांतिपूर्वक नित्य कार्य करें। संतान की प्रगति से संतोष होगा। व्यर्थ की भाग-दौड़ में समय व्यतीत होगा। वरिष्ठजनों से मतभेद उभर सकते हैं। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। कलह विवाद का डर बना रहेगा। पारिवारिक तनाव, अलगाव का सामना करना पड़ सकता है। शुभांक-4-6-7

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू): अपना कार्य दूसरों के सहयोग से बना लेगें। प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। कुछ कार्य भी सिद्ध होंगे। किसी अपने की सलाह उपयोगी सिद्ध होगी। शुभांक-1-5-9

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): बुद्धि और धन का दुरूपयोग न करें व्यर्थ के आडम्बरों से बचें। परिवार में किसी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। मानसिक तनाव में बढ़ोतरी होगी। किसी का अभद्र व्यवहार खिन्नता व तनाव बढ़ायेगा। विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। आज का परिश्रम आगे लाभ देगा। शुभांक-2-5-7

मकर (भे जा जी खी खू खे खो गा गी): आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध हो रहे हैं। कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते हैं। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। सुख-आनंद कारक समय है। लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। आय के अच्छे योग बनेंगे। शुभांक-3-7-9

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): बुद्धितत्व की सक्रियता से अल्प लाभ का हर्ष होगा। कुछ महत्वपूर्ण कार्य बनाने के लिए भाग-दौड़ रहेगी। सुखद समय की अनुभूतियां प्रबल होंगी। मनोविनोद बढ़ेगे। व्ययाधिक्य का अवसर आ सकता है। शुभ कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा। कामकाज की अधिकता रहेगी। संतान की उन्नति के योग हैं। शुभांक-5-7-9

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा ही जाए तो अच्छा है। जरा-सी लापरवाही आपको परेशानी में डाल सकती है। मानसिक व्यथा व संतान के कारण परेशानी होगी। आवेश में आना आपके हित में नही होगा इसलिए व्यवहार व वाणी पर नियत्रंण रखें। पुरानी गलती का पश्चाताप होगा। शुभांक-3-5-7

काकुरो पहेली - 2583

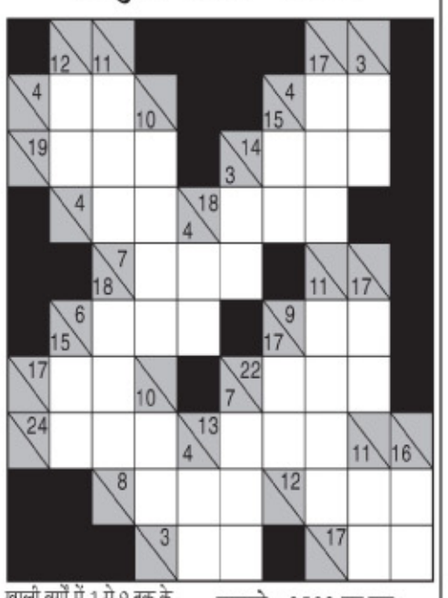

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए. किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणत:

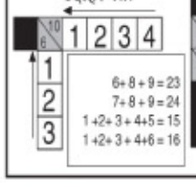

6+8+9=23
7+8+9=24
1+2+3+4+5=15
1+2+3+4+6=16

काकुरो - 2582 का हल

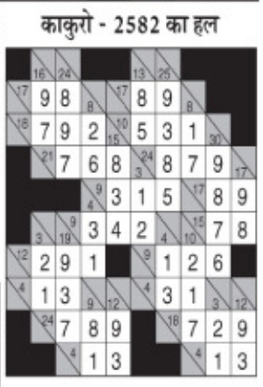

लॉफिंग ज़ोन

एक अत्यन्त सुनसान स्थान पर एक प्रेमी अपनी प्रेमिका को कार में घुमा रहा था. सहसा प्रेमी ने बताया-'लगता है कार में पेट्रोल समाप्त हो गया है.'

प्रेमिका-'फिक्र की कोई बात नहीं ! फिलहाल मेरे पास एक बोतल है !'

'वाह, क्या बात है ? स्कॉच है या व्हिस्की ?'प्रेमी ने प्रसन्नता से उछलते हुए पूछा.

'इन दोनों में से कुछ नहीं है.'

'फिर ?'

'प्रेट्रोल है !' प्रेमिका ने सादगी से जवाब दिया.

☺ ☺ ☺

रवि ने राजेश से पूछा- यार, लोग तुम्हें ईश्वर कैसे मान बैठे हैं? राजेश बोला- आज जब मैं पार्क से गुजरा तो सभी मुझे देखकर एक साथ बोले- हे ईश्वर ! तू आज फिर आ गया.

☺ ☺ ☺

सुरेश ने नरेश से पूछा-'यार, तुम उस लड़की को देखने गये थे, क्या हुआ ?'

नरेश -'वह मेरी समझ में नहीं आई !'

सुरेश-'क्यों ?'

नरेश-'उस लड़की ने बहुत से मैडल, कप और शील्डें जीत रखी हैं.'

सुरेश-'यह तो बहुत अच्छा है ?'

नरेश-'अच्छा तो है. मगर ये सारे पुरस्कार उसे जूडो, कराटे की प्रतियोगिता में जीतने पर मिले हैं.'

फिल्म वर्ग पहेली- 2583

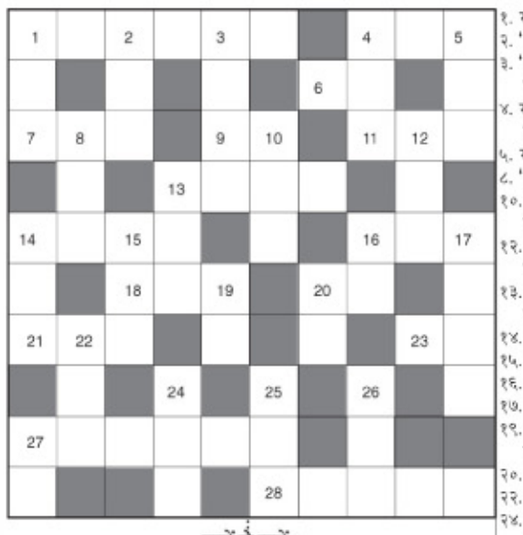

बायें से दायें:-

१. अभिषेक, सुनील, ऐश, शबाना की 'बहका दिया' गीत वाली फिल्म-४,२
४. 'दोस्ती हो गई रे' गीत वाली सुनील शेट्टी, सुष्मिता, नम्रता की फिल्म-३
६. 'छोड़ो मुझे' गीत वाली फिल्म 'जानू' में जैकी के साथ नायिका कौन थी-२
७. 'दिल खुश है आज उनसे' गीत वाली सुनीलदत्त, मीना कुमारी की फिल्म-३
९. फिल्म 'प्यार का साया' में राहुलराय के साथ नायिका कौन थी-२
११. एम. एफ. हुसैन की फिल्म 'गजगामिनी' में मुंशी प्रेमचंद की 'निर्मला' की भूमिका किसने की है-३
१३. राजेंद्रकुमार, बबीता की 'रिमझिम के गीत सावन गाए' गीतवाली फिल्म-४
१४. 'रामजी की निकली सवारी' गीतवाली ऋषिकपूर, जयाप्रदा की फिल्म-४
१६. कमल हासन, श्रीदेवी की 'ऐ जिंदगी गले लगा ले' गीत वाली फिल्म-३
१८. 'चोरी चोरी तेरे संग' गीत वाली मिथुन, आयशा जुल्का की फिल्म-३
२०. लकी अली, गौरी कार्णिक की 'कभी शाम ढले तू मेरे' गीत वाली फिल्म-२
२१. 'हमीं से मोहब्बत हमीं से' गीत वाली दिलीपकुमार, वैजयंती की फिल्म-३
२३. अनिलकपूर, माधुरी की 'एक बात मान लो तुम' गीत वाली फिल्म-२
२७. 'फूल सा चेहरा चाँद सी' गीत वाली प्रदीपकुमार, नर्गिस की फिल्म-२,२,२
२८. देव आनंद, गिरीश, रीना मुनीम की 'आवाज सुरीली का' गीत वाली फिल्म-५

ऊपर से नीचे:-

१. सतीश, सुभाष घई, अर्चना की फिल्म-३
२. 'चलती है पुरवाई' गीत वाली फिल्म-३
३. 'तेरी चाहत में दीवाना हूँ' गीत वाली फरदीन खान, सेलिना की फिल्म-४
४. संजयदत्त, अतुल, रवीना, करिश्मा की 'काश तुम मुझसे एक' गीत वाली फिल्म-३
५. राजेश खन्ना, ऋषिकपूर, पूनम की फिल्म-३
८. 'तुम भी चलो हम' गीत वाली फिल्म-३
१०. फारूख शेख, नसीरूद्दीनशाह, स्मिता पाटिल की फिल्म-३
१२. अक्षयकुमार, रवीना टण्डन की 'एक लड़की एक लड़का' गीत वाली फिल्म-३
१३. फिल्म 'पुष्पक' में कमल हासन के साथ नायिका कौन थी-३
१४. प्रदीपकुमार, कल्पना की फिल्म-३
१५. 'उड़ जा काले कावां' गीतवाली फिल्म-३
१६. नसीर, अतुल अग्निहोत्री की फिल्म-२
१७. शशि कपूर, शर्मिला टैगोर की फिल्म-२,२
१९. अनिलकपूर, जैकी, अजय, मनीषा, माधुरी, सोनाली, रेखा की फिल्म-२
२०. 'मेरा सेहरा तू है' गीत वाली फिल्म-२
२२. सनी देओल, मीनाक्षी की फिल्म-३
२४. 'चढ़ती जवानी मेरी चाल' गीत वाली फिल्म-३
२५. फिल्म 'अजूबा' में 'शहजादी हिना' की भूमिका किसने की थी-३
२६. 'तू लाली है सवेरे वाली' गीत वाली फिल्म-३
२७. फिल्म 'शर्मीली' में शशिकपूर के साथ नायिका कौन थी-२

फिल्म वर्ग पहेली- 2582

सूडोकु -2583

			1					6
7		2		5				9
		4			2	7	5	
5	7				9		1	8
				6				
6	1		3				2	4
	5	1	9			8		
2				8		9		1
9					3			

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -2582 का हल

1	9	3	2	4	6	5	8	7
4	7	2	5	1	8	3	6	9
6	5	8	7	3	9	1	2	4
3	8	9	4	5	1	2	7	6
2	4	7	6	9	3	8	1	5
5	1	6	8	7	2	4	9	3
8	2	4	9	6	5	7	3	1
7	6	1	3	2	4	9	5	8
9	3	5	1	8	7	6	4	2

शब्द पहेली - 2583

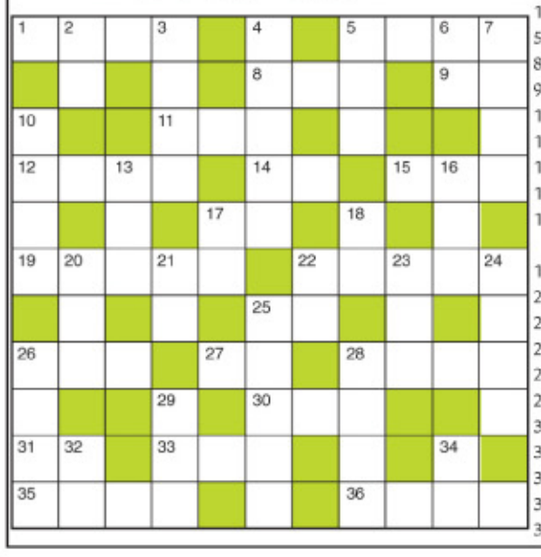

बाएँ से दाएँ

1.उथल-पुथल, कोलाहल-4
5.अस्पताल-4
8.पक्षाघात-3
9.मिट्टी, धूल-2
11.पुष्प, फूल, सुमन-3
12.बुरे कार्य करनेवाला-4
14.जादू, तंत्र-मंत्र-2
15.सौत, सपत्नी-3
17.साड़ी के किनारे पर लगाया जानेवाला लंबा कपड़ा-2
19.नगर में रहनेवाले-5
22.गणपति, गणेश-5
25.बागवान-2
26.जुदा, पृथक्-3
27.जी, इच्छा-2
28.पहरेदार-4
30.सिसकना-3
31.रहस्य-2
33.सोना,धतूरा-3
35.हृदयगति, स्पंदन-4
36.फिल्म 'मैंने प्यार किया' में सलमान की मां का किरदार निभानेवाली अभिनेत्री-2,2

ऊपर से नीचे

2.उद्देश्य,गंतव्य-2
3.राम-सीता के पुत्र-2,2
4.टालना-2,3
5.स्याही रखने का पात्र-3
6.क्षार-2
7.सुंदरी (उर्दू-4)
10.जबरदस्ती-4
13.होशियार-3
16.पुत्र,बेटा-3
17.रस्सी के फंदे पर लटकाना-2
18.जान,जीवन-2
20.जहर, विष-3
21.अदालत में प्रस्तुत वाद-2
22.छोटा रास्ता, कूचा-2
23.अपवित्रता (उर्दू-3)
24.पक्षियों का शोर-4
25.मानसिक सोच-5
26.गुनाह,जुर्म-4
28.रखवाली करना-4
29.मुर्गा-3
32.मूल, पेड़ का वह हिस्सा जो जमीन में रहता है-2
34.आमिर खान, ट्विंकल खन्ना की फिल्म-2

शब्द पहेली -2582 का हल

राज्यपाल ने ममता बनर्जी से मांगी कैबिनेट के सभी फैसलों की जानकारी

एजेंसी

कोलकाता। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल सीवी आनंद बोस ने मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से संविधान के अनुच्छेद 167 (सी) के तहत राज्य कैबिनेट के सभी फैसलों की जानकारी राजभवन को भेजने का अनुरोध किया है। यह अनुरोध हाल ही में कोलकाता के राज्य संचालित आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में एक महिला डॉक्टर के साथ दुष्कर्म एवं हत्या की घटना के मद्देनजर काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। राजभवन की ओर से मंगलवार को जारी बयान के अनुसार अनुच्छेद 167 के प्रावधानों के तहत मुख्यमंत्री का कर्तव्य है कि वे राज्य के मामलों के प्रशासन और विधायिका के प्रस्तावों से संबंधित मंत्रिपरिषद के सभी फैसलों की जानकारी राज्यपाल को दें। राजभवन ने यह भी याद दिलाया है कि मुख्यमंत्री का यह कर्तव्य है कि वे राज्य कैबिनेट द्वारा विचार किए गए विषयों की जानकारी राज्यपाल को दें। राज्यपाल ने अपने बयान में यह भी दावा किया कि राज्य प्रशासन और कानून प्रवर्तन एजेंसियों को मानक से भटकने की एक के बाद एक घटनाओं के कारण आलोचनाओं का सामना करना पड़ा है।

बिहार के बांका जिले में चार लड़कियों की तालाब में डूबकर मौत

पटना। बिहार में बांका जिले के चांदन के आनंदपुर थाना क्षेत्र के बेहरार गांव में मंगलवार को चार लड़कियों की मौत तालाब में डूबने से हो गयी। चारों लड़कियां करमा-धरमा पर्व के मौके पर नहाने के लिए तालाब में गई थीं। तभी एक के बाद एक चारों गहरे पानी में चली गईं। हादसे के बाद परिवार वालों के साथ पूरे गांव में मातम का माहौल है। बताया जा रहा है कि गांव की पांच लड़कियां मंगलवार की सुबह नहाने के लिए तालाब पर गई थीं। इसी दौरान एक बच्ची तालाब के गहरे पानी में चली गयी। एक दूसरे को बचाने के दौरान चारों बच्चियों की मौत डूबने से हो गई। ग्रामीणों ने काफी मशक्कत के बाद चारों लड़कियों के शवों को पानी से बाहर निकाला। मृतक लड़कियों में बेहरार गांव निवासी शंकर यादव की 14 वर्षीय बेटी पूनम कुमार, संजय यादव की 12 साल की बेटी निशा कुमार, विनोद यादव की 15 वर्षीय बेटी पुष्पा कुमारी और बजरंगी यादव की 14 साल की बेटी ज्योति कुमारी है। घटना की जानकारी मिलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने चारों बच्चियों के शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और छानबीन शुरू की।

भारत-फिलीपींस जेडीसीसी की बैठक 11 सितंबर को, रक्षा सचिव मनीला जाएंगे

नई दिल्ली। रक्षा सचिव गिरिधर अरमाने 11 सितंबर को भारत-फिलीपींस संयुक्त रक्षा सहयोग समिति (जेडीसीसी) की पांचवीं बैठक की सह-अध्यक्षता करने के लिए मनीला का दौरा करेंगे। यात्रा के दौरान रक्षा सचिव दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग को और मजबूत करने के तरीकों पर चर्चा करेंगे। वह फिलीपींस सरकार के अन्य गणमान्य व्यक्तियों से भी मिलेंगे। बैठक की सह-अध्यक्षता फिलीपींस के राष्ट्रीय रक्षा मंत्रालय के वरिष्ठ अवर सचिव इरिनियो क्रूज एस्पिनो करेंगे।यह यात्रा इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि भारत और फिलीपींस राजनयिक संबंधों के 75 साल और भारत की एक्ट ईस्ट नीति के 10 साल पूरे होने का जश्न मना रहे हैं। दोनों देशों के बीच एक मजबूत और बहुआयामी संबंध हैं, जो रक्षा और सुरक्षा सहित कई रणनीतिक क्षेत्रों में और आगे बढ़े हैं। वे रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में एक-दूसरे का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।जेडीसीसी का गठन 2006 में दोनों देशों के बीच हस्ताक्षरित रक्षा सहयोग पर समझौता ज्ञापन के दायरे में किया गया है। बैठक का चौथा संस्करण मार्च, 2023 में नई दिल्ली में संयुक्त सचिव स्तर पर आयोजित किया गया था। पांचवें संस्करण में सह-अध्यक्ष को सचिव स्तर पर पदोन्नत किया गया। इसीलिए रक्षा सचिव गिरिधर अरमाने बैठक की सह-अध्यक्षता करने के लिए मनीला का दौरा करने जा रहे हैं।

स्वामी शुद्धिदानंद ने आरजी कर कांड पर कहा - ऐसे अपराधियों का अंत जरूरी

कोलकाता। आर.जी. कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में एक लेडी जूनियर डॉक्टर के साथ हुए दुष्कर्म और हत्या के मामले को लेकर पूरे देश में गुस्सा और विरोध प्रदर्शन जारी है। इस बीच, रामकृष्ण मठ और मिशन के अद्वैत आश्रम के सचिव स्वामी शुद्धिदानंद ने इस घटना पर बड़ी बात कही है। उन्होंने एक वीडियो जारी किया है। उन्होंने कहा है कि ऐसे अपराधियों का अंत जरूरी है।

स्वामी शुद्धिदानंद ने कहा है कि यह लड़ाई अधर्म के खिलाफ धर्म की है। उन्होंने इस जघन्य अपराध को अंजाम देने वाले अपराधियों को मानव के वेश में राक्षस करार दिया और कहा कि ऐसे लोगों का विनाश करना जरूरी है। उनका कहना है कि ऐसे अपराधों के खिलाफ लड़ाई में हिंसा भी जायज है। उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण का उदाहरण देते हुए कहा कि महाभारत में अर्जुन को भी अधर्म के खिलाफ लड़ाई में हिंसा का मार्ग अपनाने का पाठ पढ़ाया गया था।

स्वामी शुद्धिदानंद ने आगे कहा कि समाज में ऐसे जघन्य अपराधों के खिलाफ आवाज उठाना जरूरी है और इस मुद्दे पर देशभर में हो रहे विरोध प्रदर्शनों की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह इस बात का संकेत है कि लोग अभी भी संवेदनशील हैं और समाज में हो रहे अत्याचारों के खिलाफ खड़े होने के लिए तैयार हैं।

मोदी को 'बिच्छू' कहने के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने थरूर के खिलाफ मानहानि की कार्यवाही पर रोक लगाई

एजेंसी

नयी दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की तुलना कथित तौर पर बिच्छू से करने के एक पुराने मामले में कांग्रेस सांसद शशि थरूर के खिलाफ चल रही मानहानि की कार्यवाही पर मंगलवार को पर रोक लगा दी।

न्यायमूर्ति ऋषिकेश रॉय और न्यायमूर्ति आर महादेन की पीठ ने श्री थरूर को अंतरिम राहत दी और इस मामले के शिकायतकर्ता भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नेता राजीव बब्बर को नोटिस जारी करके चार सप्ताह के भीतर अपना जवाब देने का निर्देश दिया। शीर्ष अदालत ने श्री थरूर द्वारा दिल्ली उच्च न्यायालय के नौ अगस्त 2024 के फैसले के खिलाफ दायर विशेष अनुमति याचिका पर अपना यह आदेश पारित किया, जिसमें आपराधिक मानहानि मामले को खारिज करने के कांग्रेस सांसद के अनुरोध को अस्वीकार कर दिया गया था। पीठ के समक्ष श्री थरूर की ओर से पेश हुए अधिवक्ता मोहम्मद अली खान ने तर्क दिया कि उनके द्वारा दिया गया बयान भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 499 के अपवाद खंड 08 और 09 के अंतर्गत आता है, क्योंकि टिप्पणी को सद्भावनापूर्वक की गई टिप्पणी मानी जा सकती है। उन्होंने यह भी कहा कि किसी राजनीतिक दल के सदस्य को पीड़ित व्यक्ति नहीं कहा जा सकता। याचिकाकर्ता ने यह भी

कहा कि 28 अक्टूबर, 2018 को की गई उनकी टिप्पणी एक मार्च, 2012 को एक पत्रिका में दिए गए बयान पर आधारित थी। पीठ ने कहा कि याचिकाकर्ता द्वारा किया गया असाधारण प्रभावशाली रूपक÷ मानहानिकारक माना जाता है।

यह मामला 2018 का है, जिसमें में श्री थरूर पर श्री मोदी की तुलना बिच्छू से करने का आरोप है। वरिष्ठ कांग्रेस नेता ने 28 अक्टूबर, 2018 को बंगलुरु साहित्य महोत्सव में कथित तौर पर यह बयान दिया था कि श्री मोदी शिवलिंग पर बैठे बिच्छू हैं।दिल्ली उच्च न्यायालय ने कार्यवाही रद्द करने की श्री थरूर की याचिका को खारिज कर दी थी और उन्हें 10 सितंबर को निचली अदालत में पेश होने का निर्देश दिया गया था। उच्च न्यायालय ने कहा था, इस चरण में कार्यवाही को खारिज करने के लिए कोई उचित कारण नहीं हैं। श्री थरूर ने अपनी ओर से तर्क दिया कि वह केवल गोरधन जदाफिया के एक उद्धरण को दोहरा रहे थे, जो कई वर्षों से सार्वजनिक रूप से उपलब्ध है। उन्होंने दावा किया कि टिप्पणियां उनकी अपनी राय नहीं थीं, बल्कि मौजूदा बयान की पुनरावृत्ति थीं। इसलिए, शिकायतकर्ता के पास भारतीय दंड संहिता की धारा 499 (मानहानि) के तहत मामला दर्ज कराने का अधिकार नहीं था।

उत्तराखंड में केदारनाथ मार्ग पर भूस्खलन से पांच लोगों की मौत

एजेंसी

देहरादून। उत्तराखंड के रूद्रप्रयाग जिले में केदारनाथ धाम यात्रा मार्ग पर सोमवार शाम को हुए भूस्खलन के कारण फंसे तीर्थयात्रियों में से मंगलवार सुबह चार और शव बरामद हुए हैं। जिससे मृतकों की संख्या आज पांच हो गई है। जबकि तीन अन्य को घायल अवस्था में बाहर निकाला गया है। मृतक और घायलों में पड़ोसी देश नेपाल के साथ, मध्य प्रदेश और गुजरात के यात्री शामिल हैं। राहत और बचाव कार्य अभी जारी है।

रूद्रप्रयाग के अपर जिलाधिकारी श्याम सिंह राणा ने आज बताया कि सोमवार शाम करीब साढ़े सात बजे सूचना प्राप्त हुई कि कोतवाली सोनप्रयाग क्षेत्रान्तर्गत, सोनप्रयाग से लगभग 01 किमी दूर गौरीकुण्ड की तरफ हाल ही में हुए भूस्खलन प्रभावित क्षेत्र में गौरीकुण्ड से सोनप्रयाग की ओर आ रहे कुछ यात्री मलबे में दब गए हैं। सूचना पर पुलिस, प्रशासन, एसडीआरएफ, एनडीआरएफ व डीडीआरएफ की ओर से संयुक्त बचाव अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान देर रात तीन व्यक्तियों को घायल अवस्था में बाहर निकाला गया, जबकि एक अचेत अवस्था में मिला जिसे डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। उन्होंने बताया कि यहां पर रात के समय खराब मौसम व लगातार मलबा-पत्थर आने के कारण रेस्क्यू टीमों को अपना कार्य करने में दिक्कतें आयी व बचाव कार्य रोकना पड़ा। श्री राणा के अनुसार, मंगलवार

तड़के रेस्क्यू टीमों द्वारा फिर बचाव कार्य शुरू किया गया। इस स्थल पर 3 व्यक्ति (2 महिला व 1 पुरुष) अचेत अवस्था में मिले, जिनको डॉक्टरों द्वारा मृत घोषित किया गया है। उन्होंने बताया कि लगातार चले बचाव अभियान के दौरान, कुछ देर बाद रेस्क्यू टीमों को एक और महिला अचेत अवस्था में मिली, जिनको डॉक्टरों द्वारा मृत घोषित किया गया है। इस प्रकार इस हादसे में मृतकों की संख्या 05 हो गई है। उन्होंने बताया कि मृतकों की पहचान गोपाल पुत्र भक्तराम, निवासी जीजोड़ा, पोस्ट राजोद, जिला धार, मध्य प्रदेश, उम्र 50 वर्ष, दुर्गाबाई खापर पत्नी संघन लाल निवासी नेपावाली, जिला घाट, मध्य प्रदेश, उम्र 50 वर्ष, तितली देवी पत्नी राजेंद्र मंडल, निवासी ग्राम वैदेही, जिला धनवा, नेपाल, उम्र 70 वर्ष, भारत भाई निरालाल पुत्र निरालाल पटेल, निवासी ए 301, सरदार पैलेस करवाल नगर, खटोदरा, सूरत, गुजरात, उम्र 52 वर्ष और समनबाई पत्नी शालक राम, निवासी झिझोरा, जिला धार मध्य प्रदेश, उम्र 50 वर्ष के रूप में हुई है। अपर जिलाधिकारी श्री राणा ने बताया कि इसके अतिरिक्त, जीवच तिवारी पुत्र रामचरित, निवासी धनवा नेपाल, उम्र 60 वर्ष, मनप्रीत सिंह पुत्र कश्मीर सिंह, निवासी वेस्ट बंगाल, उम्र 30 वर्ष और छगनलाल पुत्र भक्त राम, निवासी राजोत, जिला धार, मध्य प्रदेश, उम्र 45 वर्ष को घायल अवस्था में रेस्क्यू किया गया है।

जलवायु परिवर्तन दुनिया की चिंता का सबसे बड़ा विषय : योगी

एजेंसी

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को कहा कि देश-दुनिया की चिंता का सबसे बड़ा विषय जलवायु परिवर्तन है और अनियंत्रित व अनियोजित विकास मानवता के सामने संकट खड़ा कर चुका है।

उप्र अधीनस्थ सेवा चयन आयोग के जरिये चयनित 647 वन रक्षकों/वन्यजीव रक्षकों व 41 अवर अभियंताओं को नियुक्ति पत्र वितरित करने के बाद श्री योगी ने कहा कि असमय बारिश, अतिवृष्टि, ओलावृष्टि हो रही है। एक ही समय पर कहीं सूखा तो कहीं बाढ़ आई है। कहीं अतिवृष्टि तो कहीं लोग एक बूंद जल के लिए तरस रहे हैं। दोनों नुकसानदायी है। आज हम सब जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणामों के भुक्तभोगी हैं। नवनियुक्त वन व वन्य जीव रक्षक यदि ईमानदारी से कार्य करेंगे तो जलवायु परिवर्तन का दुष्प्रभाव कम करने में बड़ी भूमिका

का निर्वहन कर सकते हैं।

उन्होने कहा कि पहले परीक्षा के बाद फाइनल नियुक्ति पत्र मिलने में एक वर्ष लग जाता था, लेकिन बिना विलंब किए नई प्रतिबद्धता के साथ सरकार ने आपको छह महीने/एक वर्ष से पहले नियुक्ति पत्र प्रदान किया है। भर्ती की प्रक्रिया शुरू होने से लेकर नियुक्ति पत्र वितरण तक कहीं भी सिफारिश व लेनदेन की नौबत नहीं आई। आपको नहीं लगा होगा कि कुछ लोग परीक्षा में अनुचित साधन का प्रयोग करते हुए परीक्षा को प्रभावित कर सकते हैं, इसलिए सरकार भी आपसे ऐसे ही ईमानदारी पूर्वक कार्य करने की उम्मीद करती है। योगी ने कहा कि साढ़े सात वर्ष में सरकार ने कुछ कार्यक्रम आगे बढ़ाए। जलवायु परिवर्तन के सामने सबसे बड़ा चैलेंज घटते जंगलों, वनाच्छादन, अनियंत्रित, अनियोजित विकास, प्लास्टिक का बेतरतीब उपयोग है। ऐसी वस्तुओं का उपयोग पर्यावरण के लिए घातक हो सकता है। इन पर लगाम लगाने के बावजूद किसी न किसी स्तर पर इसका दुरुपयोग होता है। पहाड़ी क्षेत्रों में किसी भी सीजन में जंगलों के बीच से धुआं उठाई देता है। जंगल जलेंगे तो पर्यावरण को नुकसान व भूस्खलन होगा। असमय जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणामों का सामना न केवल वन्यजीवों, बल्कि मानवों को भी करना पड़ेगा। वन के दायरे कम होने के कारण मानव-वन्यजीव संघर्ष की नौबत आती है।

सीपीएम महासचिव सीताराम येचुरी की हालत गंभीर : एम्स

एजेंसी

नई दिल्ली। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान(एम्स) में भर्ती भारतीय काम्युनिस्ट पार्टी-मार्क्सवादी (सीपीआई-एम) के महासचिव सीताराम येचुरी की हालत गंभीर है। वह सीने में दर्द की शिकायत के बाद ही 19 अगस्त को दिल्ली के एम्स में भर्ती हुए थे। येचुरी की देखभाल कर रहे एम्स के डॉक्टर ने बताया कि उनकी हालत गंभीर है, कुछ भी कहा नहीं जा सकता है। येचुरी को रेस्पिरेटरी सपोर्ट पर रखा गया है।

केंद्रीय समिति कार्यालय की ओर से जारी किए गए एक बयान में कहा गया कि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी-मार्क्सवादी (सीपीआई-एम) के महासचिव कॉमरेड सीताराम येचुरी का अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली की गहन देखभाल इकाई में तीव्र श्वशन के संक्रमण का इलाज चल रहा है। वह रेस्पिरेटरी सपोर्ट पर हैं। डॉक्टरों की एक टीम उनकी स्थिति पर पूरी नजर रख रही है, जो इस समय गंभीर

है। येचुरी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के प्रमुख वामपंथियों में नेताओं में शामिल हैं। येचुरी ने 1974 में लिबरल फेडरेशन ऑफ इंडिया से राजनीतिक जीवन की शुरुआत की और जल्द ही वह भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गए थे।

मप्र सरकार की मांग के अनुसार की जाएगी सोयाबीन की खरीद : शिवराज चौहान

एजेंसी

भोपाल। मध्य प्रदेश में सोयाबीन के दाम छह हजार रुपये प्रति क्विंटल किए जाने की मांग को लेकर किसान आंदोलित हैं। कांग्रेस सोयाबीन किसानों की मांग को लेकर कांग्रेस द्वारा किए जा रहे आंदोलन के बीच केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान का बड़ा बयान सामने आया है। उन्होंने कहा है कि मध्य प्रदेश सरकार जैसी डिमांड करेगी, वैसे केन्द्र सरकार सोयाबीन की खरीद कराएगी।

केन्द्रीय कृषि मंत्री चौहान अपने प्रतिदिन पौधरोपण के संकल्प के क्रम में मंगलवार को भोपाल के स्मार्ट सिटी उद्यान में पौधरोपण करने के लिए पहुंचे थे। यहां उन्होंने पौधा रोपने के बाद

मीडिया से बातचीत करते हुए कहा कि पेड़-पौधे हमें ऑक्सीजन ही नहीं देते, बल्कि धरती की हरियाली और सुंदरता को भी बढ़ाते हैं। आप भी पौधरोपण अवश्य करें। इस मौके पर कांग्रेस द्वारा सोयाबीन के दाम को लेकर मंगलवार से शुरू की गई किसान न्याय यात्रा को लेकर केन्द्रीय कृषि मंत्री से सवाल पूछा गया तो उन्होंने कहा कि नरेन्द्र मोदी किसान हितैषी प्रधानमंत्री हैं। सोयाबीन का समर्थन मूल्य चार हजार 994 रुपये प्रति क्विंटल तय है और हमारी प्रतिबद्धता है कि हम न्यूनतम समर्थन मूल्य पर किसानों का सोयाबीन खरीदेंगे। किसानों को उसके पसीने की पूरी कीमत देना प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी और एनडीए सरकार की प्रतिबद्धता है।

अजमेर में ट्रैक पर दो जगह ट्रेन को बेपटरी करने की साजिश, मुकदमा दर्ज

एजेंसी

अजमेर। राजस्थान में 17 दिन में तीसरी बार ट्रेन को बेपटरी करने की साजिश हुई है। इस बार अजमेर में सराधना और बांगड़ ग्राम रेलवे स्टेशन के बीच दो स्थानों पर बदमाशों ने सीमेंट के 70 किलो वजनी ब्लॉक रख दिए। गनीमत रही कि ट्रेन इन्हें तोड़ते हुए आगे निकल गई और कोई हादसा नहीं हुआ। रेलवे और आरपीएफ के अधिकारियों ने मंगलवार सुबह घटना स्थल का मुआयना किया। आरपीएफ के असिस्टेंट कमिश्नर रामेश्वर लाल मीना ने मौके पर रखे ब्लॉक को हटाने के निर्देश किए। मामला फुलेरा से अहमदाबाद मार्ग पर रविवार रात का है। इसका खुलासा सोमवार रात्रि में हुआ। यह मालगाड़ी फुलेरा से अहमदाबाद जा रही थी। इस मामले में मांगलियावास थाना पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है। उन्होंने बताया कि पुलिया पर रेलवे के ही ब्लॉक रखे हुए थे, जिसे बदमाशों ने उठाकर ट्रैक पर रख दिया। आरपीएफ के अफसरों ने माना कि एक से ज्यादा व्यक्तियों ने ऐसा किया होगा। सिविल पुलिस और रेलवे सुरक्षा बल मिलकर मामले में अनुसंधान कर रहे हैं।

अमित शाह ने परमवीर चक्र विजेता अब्दुल हमीद को किया नमन

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह एवं सहकारितामंत्री अमित शाह ने आज परमवीर चक्र विजेता अब्दुल हमीद के बलिदान दिवस पर उनका पुण्य स्मरण कर नमन किया। शाह ने एक्स हैंडल पर इस योद्धा को याद करते हुए उनके बलिदान की चर्चा की। केंद्रीय गृहमंत्री शाह ने लिखा, 'अब्दुल हमीद जी ने 1965 के युद्ध में अपनी जान की परवाह किए बिना दुश्मनों का दृढ़ता से मुकाबला किया और वीरगति को प्राप्त हुए। उनके अदम्य साहस ने दुश्मन के टैंकों के साथ-साथ उनकी पूरी रणनीति को भी धराशायी कर दिया। राष्ट्ररक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले इस परमवीर सैनिक की गाथा आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बनी रहेगी।'

पश्चिम बंगाल में ट्रक ऑपरेटरों की तीन दिवसीय हड़ताल का ऐलान, त्योहारी सीजन पर असर पड़ने की आशंका

एजेंसी

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में ट्रक ऑपरेटरों ने अपनी विभिन्न मांगों को लेकर बुधवार से 72 घंटे की हड़ताल का ऐलान किया है। यह हड़ताल पश्चिम बंगाल ट्रक ऑपरेटर्स एसोसिएशन (डब्ल्यूबीटीओए) द्वारा बुलाई गई है, जिससे त्योहारी सीजन से पहले आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति श्रृंखला बाधित हो सकती है।

डब्ल्यूबीटीओए के एक पदाधिकारी सुभाष चंद्र बोस ने बताया कि हड़ताल बुधवार सुबह छह बजे से शुरू होगी। उन्होंने बताया कि बार-बार अपील करने के बावजूद सामान के ओवरलोडिंग पर रोक नहीं लगाई जा रही है, क्योंकि कुछ ट्रक चालक और अधिकारी इसमें संलिप्त हैं। उन्होंने कहा, इसका परिणाम यह है कि ट्रक मालिकों को उचित

परिवहन शुल्क नहीं मिल पाता। साथ ही, ओवरलोडिंग के कारण सड़कों और वाहनों को नुकसान होता है और घातक दुर्घटनाओं का खतरा बढ़ जाता है।

ट्रक ऑपरेटरों ने यह भी आरोप लगाया है कि बीरभूम और कूचबिहार जैसे कुछ जिलों में वज़न पुलों पर ओवरलोडिंग की अनुमति देने के लिए प्रति ट्रक 236 रुपये अवैध रूप से वसूले जा रहे हैं।

उन्होंने यह भी दावा किया कि माल की कम मात्रा के कारण राज्य के अनुमानित सात लाख ट्रकों में से तीन लाख ट्रक व्यवसाय से बाहर हो गए हैं। इसके अलावा, उन्होंने आरोप लगाया कि उन्हें विभिन्न जिलों में पुलिस और भूमि राजस्व अधिकारियों द्वारा उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है। इस हड़ताल के चलते पश्चिम बंगाल में आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति प्रभावित होने की संभावना है, जो त्योहारी सीजन के मद्देनज़र गंभीर चुनौती साबित हो सकती है।

कांग्रेस ने बदली है मोदी की मनोदशाः राहुल

एजेंसी

वॉशिंगटन डीसी/नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर हमला करते हुए कहा है कि वह जिस आक्रामकता के साथ पहले कांग्रेस को घेरते थे उनकी इस सोच पर कांग्रेस ने लगाम कसी है और इसी के कारण श्री मोदी अब संसद के भीतर तथा बाहर खुद ही फंस जाते हैं।श्री गांधी ने वॉशिंगटन डीसी में जॉर्जटाउन विश्वविद्यालय के छात्रों से बातचीत करते हुए कहा कि भारत में कांग्रेस अत्यंत क्षमतावान है और उसमें खुद को बदलने की ताकत है जो अन्य राजनीतिक दलों की तुलना में उन्हें ज्यादा लगती है। उन्होंने कहा यदि आप कांग्रेस पार्टी को देखें और इसकी तुलना अन्य राजनीतिक दलों से करें तो इसमें खुद को नया रूप देने की क्षमता है। इसमें एक तत्व है जो राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के समय से मौजूद है और एक राजनीतिक संगठन के रूप में इसमें कई गुण बहुत शक्तिशाली हैं। कांग्रेस नेता ने

कहा कि 2024 के चुनाव के दौरान भी उन्हें प्रताड़ित किया गया था। उन्होंने कहा चुनाव के दौरान एक समय ऐसा आया जब मैं पार्टी की कोषाध्यक्ष से बातचीत करते हुए कह रहा था देखो, आपके बैंक खाते फ्रीज कर दिए गए हैं। यदि आपके बैंक खाते फ्रीज कर दिए गए हैं तो आप चुनाव कैसे लड़ेंगे। तब हमारे पास सच में कोई जवाब नहीं था। फिर भी कांग्रेस पार्टी ने चुनाव लड़ा और मूलतः मोदी के विचार को नष्ट कर दिया। आप उसकी झलक श्री मोदी के चेहरे पर भी देख सकते हैं। लोकसभा में विपक्ष के नेता ने कहा कांग्रेस ने इस चुनाव में मूलतः मोदी के विचार को नष्ट किया है। श्री मोदी अब संसद में भी मनोवैज्ञानिक रूप से फंस जाते हैं। संसद से बाहर खुद को भगवान कहने लगते हैं। श्री मोदी को इस स्थिति में कांग्रेस की वजह से ही खड़ा होना पड़ा है।

उन्होंने कहा प्रधानमंत्री को अब संसद में देखते हैं, तो वह मनोवैज्ञानिक रूप से फंसे होते हैं। वे समझौता नहीं कर सकते और अब समझ नहीं पा रहे हैं कि यह कैसे हो गया। मेरे लिए, और कांग्रेस पार्टी के लिए यह स्थिति देखना आश्चर्यजनक है। यह सिर्फ एक राजनीतिक दल नहीं बल्कि राजनीतिक विचारों का एक पूरा समूह है। पीछे मुड़कर देखें, तो इसके जीवित रहने का एक कारण पार्टी की बुनियादी संरचना है। मैं कभी कभी कांग्रेस के विचार, उसके दर्शन, उसकी मूल्य प्रणाली और संगठन के बीच अंतर करता हूं। वे 100 फीसदी ओवरलैप नहीं होते लेकिन जब करीब आते हैं तो वे बहुत शक्तिशाली हो जाते हैं।

सिखों पर राहुल गांधी के बयान पर भाजपा का हमला, कहा-खतरनाक नैरेटिव सेट करने की है कोशिश

एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस सांसद और नेता विपक्ष राहुल गांधी के सिखों से जुड़े बयान पर भारतीय जनता पार्टी(भाजपा) ने तीखा हमला किया है। भाजपा ने कहा कि राहुल गांधी विदेशी धरती पर देश को बदनाम करने की कोशिश कर रहे हैं। वे खतरनाक नैरेटिव सेट करने की कोशिश कर रहे हैं। मंगलवार को भाजपा मुख्यालय में आयोजित प्रेसवार्ता में केन्द्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने कहा कि जब राहुल गांधी विपक्ष के नेता नहीं थे, तब वह कभी भी अपने शब्दों को लेकर मजबूत नहीं थे। वह ज्ञान की कमी के कारण ऐसा बोलते हैं। कुछ संवेदनशील मुद्दे हैं, जिनमें हमारी राष्ट्रीय पहचान, एकता और ताकत शामिल है। हरदीप पुरी ने कहा कि विविधता में एकता जैसे विषयों पर जब वह बोलते हैं तो ऐसा लगता है कि वह उन चीजों पर एक नया, बल्कि खतरनाक नैरेटिव सेट

करने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि उनका(राहुल गांधी) कहना है कि देश में सिखों को 'पगड़ी' और 'कड़ा' पहनने में परेशानी हो रही है। लेकिन सभी सिखों को सिख होने पर बेहद गर्व है। किसी को भी अपने धर्म के अनुसार रहने और पगड़ी पहनने में कोई दिक्कत नहीं है। आज सिख 1947 के बाद इतिहास में किसी भी समय की तुलना में अधिक सुरक्षित और सम्मानित महसूस कर रहा है। उन्होंने कहा कि यदि सिख समुदाय ने कभी असुरक्षा और अस्तित्व संबंधी खतरे की भावना महसूस की है, तो वह समय कांग्रेस के शासन का काल रहा है। 1984 में एक नरसंहार किया गया था सिख समुदाय के खिलाफ, जिसमें 3000 निर्दोष लोग मारे गए थे।प्रेसवार्ता में राष्ट्रीय प्रवक्ता आरपी सिंह ने राहुल को चुनौती दी कि वे यही बात भारत में बोलकर दिखाएं। अगर यही बातें वे हमारे देश में कहेंगे तो उनके खिलाफ अदालत में मामला दर्ज कराया जाएगा। उल्लेखनीय है कि राहुल गांधी ने मंगलवार को अमेरिका के वर्जीनिया में कहा कि लड़ाई इस बात को लेकर है कि क्या एक सिख को भारत में पगड़ी पहनने की इजाजत दी जाएगी। क्या एक सिख को भारत में कड़ा पहनने की इजाजत दी जाएगी या वह गुरुद्वारा जा सकेगा... लड़ाई इसी बात को लेकर है, और यह सिर्फ सिखों के लिए नहीं है, यह सभी धर्मों के लिए है।

अगर बच्चा होमवर्क न करे तो करें बातचीत

अभिभावकों को अक्सर लगता है कि बच्चे स्कूल में अच्छा करें यह उनकी भी जिम्मेदारी बनती है। यह जिम्मेदारी चिंता में तब्दील हो जाती है। आपके विचार बच्चे के बिगड़ते भविष्य तक भी पहुंच जाते हैं। और ऐसा न हो इसके लिए सही तरीके से किया गया होमवर्क पहला कदम नजर आने लगता है।

इस कारण आप बच्चे को बार बार होमवर्क करने के लिए कहते हैं। उसकी नोटबुक देखकर जानने की कोशिश करते हैं आखिर आज का काम क्या है। कुछ समझ आता है कुछ नहीं समझ पाते। जानिए आखिर कैसे आप बच्चे को करा सकते हैं होमवर्क आसानी से और डाल सकते हैं उनके कुछ बहुत अच्छी आदतें डालें।

बच्चे के साथ बैठिए

अपने बच्चे के साथ बैठिए और उसके साथ अपनी आगे आने वाले साल के विषय में बातचीत कीजिए। बेहतर होगा एकेडिमिक ईयर की शुरूआत में ही प्लान बन जाए ताकि आपके और बच्चे के पास भरपूर वक्त और मौका रहे। ऐसी इच्छाएं ही रखिए जो हो सकती हैं। जरूरत से अधिक अपेक्षाएं बच्चे पर अतिरिक्त मानसिक बोझ डाल सकती हैं। अपने बच्चे के कमजोर क्षेत्रों को पहचानें। उसका पिछले साल का रिपोर्ट कार्ड और उसका अनुभव इसमें आपकी मदद करेगा। इस हिस्से पर आपको और बच्चे को अधिक काम करना है।

दिन के घंटे बांटिए आपके बच्चे की पिछले साल भी कुछ दिनचर्या रही होगी। इस बार टाइमटेबल में उन गल्तियों को जगह न दें जो पिछले साल परेशानी का कारण बन गईं थीं। हो सकता है पिछले साल बच्चे का सोने और होमवर्क का समय एक ही हो ऐसे में टीवी के टाइम में कटौती कर थोड़ा पहले होमवर्क करना समझदारीभर होगा।

होमवर्क को रोचक बनाने की कोशिश करें क्या आपका बच्चा पढ़ने से जी चुराता है? ऐसे में आप दूसरे बच्चों के उदाहरण दे देकर उसे इंस्पायर करने की कोशिश करने में उसके मन में जलन और असुरक्षा की भावना पैदा करते हैं। बच्चा न पढ़ने के बहाने ढूंढ़ने लगता है। बच्चे को दूसरे बच्चे के उदाहरण देने के बदले, पढ़ाई को खेल खेल में सिखाने की कोशिश करें। ऐसे नए तरीके खोजने की कोशिश करें जिसमें बच्चे का मन लगे। आप अपने बच्चे को सबसे बेहतर जानते हैं और आप ही उसकी पसंद की एक्टिविटी आसानी से खोज सकते हैं।

होमवर्क प्लान का आंकलन करें एकेडमिक ईयर की शुरूआत में बनाया गया प्लान हो सकता है सही न हो। इस समस्या के उपाय के तौर पर बीच बीच में इस प्लान का मूल्यांकन करें। अपने बच्चे से सलाह मशवरा करें और अगर जरूरी लगता है तो इसमें बदलाव अवश्य करें।

बच्चों को भी काम की अधिकता इतनी होती है कि अगर सही टाइमटेबल मैंटेन नहीं किया जाए तो काम इकट्ठा हो जाता है और समस्या बहुत बढ़ जाती है। होमवर्क सही तरीके से होता रहे इसके लिए जरूरी है कि आप टाइमटेबल फॉलो होने पर ध्यान दें।6. स्कूल के बाद दें आधे घंटे का ब्रेक स्कूल से लौटने के बाद बच्चे को आधे घंटे का ब्रेक दें। इस दौरान बच्चा न तो टीवी देखें, न इमेल चेक करें और न ही वीडियों गेम्स खेलना शुरू करे। अगर बच्चा इन सब में लग जाता है तो वह आधे घंटे के बाद उठने से रहा। बजाय रात में होमवर्क के बच्चे को दिन में अधिकतर काम निपटा लेने के लिए प्रेरित करें। रात में घर के सभी सदस्य घर पर होने से बच्चे का मन टीवी और सभी के साथ बैठने का रहता है। ऐसे में अकेले बैठकर पढ़ना मुश्किल काम है।

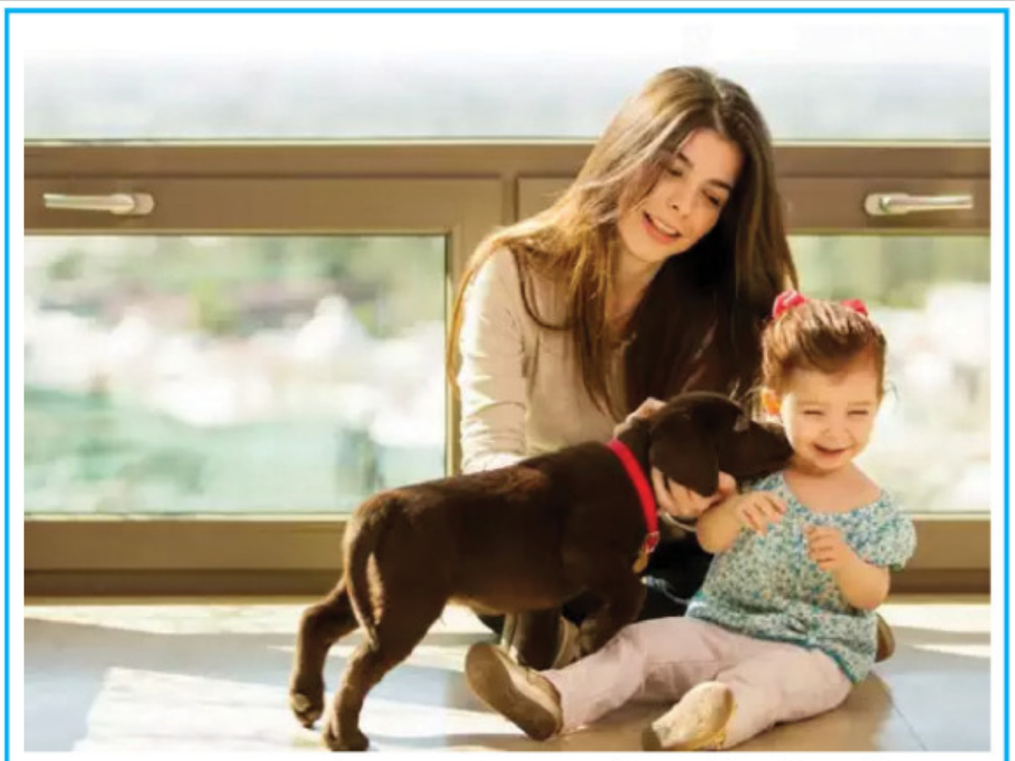

बच्चों को जिम्मेदार भी बनाते हैं पेट्स

आजकल एकल परिवार हैं। ऐसे में बढ़ती महंगाई और खर्चों के कारण अब माता-पिता दोनों काम करते हैं और इस कारण उन्हें ज्यादातर समय घर से बाहर ही रहना पड़ता है। ऐसे में देखा गया है कि बच्चे, विशेषकर अकेला बच्चा, खुद को अकेला और उपेक्षित महसूस करता है। ज्यादातर मामलों में अभिभावक अपने बच्चों के साथी के तौर पर पालतू जानवरों पसंदीदा (पेट्स) को रखते हैं।

एक पालतू जानवर बच्चे के भाई-दोस्त या परिवार के सदस्य की जगह नहीं ले सकता, पर यह बच्चे के खालीपन को जरूर भर सकता है। बच्चा इनके साथ खेलते हुए कई चीजें सीखता है।

ज्यादातर अभिभावक अपने बच्चों को मजबूत बनना सिखाते हैं। लेकिन जब एक बच्चा घर में किसी पेट्स के साथ बड़ा होता है तो वह ज्यादा संवेदनशील होना सीखता है। वह इनके बीमार होने पर दर्द समझता है।

पेट्स के साथ वक्त बिताने का एक अन्य फायदा यह होता है कि बच्चे ज्यादा सतर्क रहना सीख जाते हैं। वह जान जाते हैं कि कब उसे भूख लगी है।

पालतू जानवरों की देखभाल करते वक्त केयरिंग, संवेदनशील और चौकन्ना रहने की जरूरत होती है और पेट्स के साथ वक्त बिताते हुए बच्चे कम उम्र में ही इन खूबियों को अपने अंदर ढाल लेते हैं।

पेट्स के साथ बड़े होने का एक अन्य फायदा है कि इससे बच्चे जिम्मेदार बनना सीखते हैं।

पेट्स का साथ बच्चों को जिम्मेदार बनना सिखाता है क्योंकि वह अपने प्यारे पेट्स की सभी जरूरतों का ख्याल रखते हैं। यदि बच्चे को उसके पेट्स के खाने, घुमाने और डॉक्टर का अपॉइंटमेंट लेने जैसी जिम्मेदारी दे दी जाएं, तो वह अपने काम को सही तरीके से अंजाम देते हैं।

बच्चों को जिंदगी और मौत की अवधारणा के बारे में समझाना बहुत मुश्किल होता है। पेट्स के साथ रखकर उन्हें जिंदगी और मौत के चक्र के बारे में बताया जा सकता है।

एक अभिभावक होने के नाते आप अपने पालतू जानवर के जीवन का हर पड़ाव देखते हैं। आप उसके बचपन से लेकर उसे बड़ा होते हुए और फिर वृद्धावस्था में जाने के बाद उसकी मृत्यु को भी देखते हैं। उनकी यह जिंदगी और मौत हमें इंसान के जीवन के पूरे चक्र के बारे में बताते हैं।

अपने साथ पेट्स को रखना अपने अच्छे दोस्त को घर पर रखने जैसा होता है। घर में रहने वाला पेट्स न सिर्फ घर में सभी के लिए तनाव दूर करने वाला बनता है बल्कि आपके बच्चों को रचनात्मक रूप से व्यस्त भी रखता है। पेट्स की देखभाल करते हुए बच्चे दयालु, निस्वार्थ, केयरिंग और जिम्मेदार बनना सीखते है। घर में रहने वाले पेट्स आपके बच्चे को सही और आसान तरीके से बेहतर इंसान बनने में मदद करते हैं।

बच्चों को लिखना ऐसे सिखायें

लिखना भी एक कला है, लेकिन बच्चों को लिखना सिखाना तो यह और भी बड़ी कला है। बच्चों को लिखना सिखाने के लिए माता-पिता, अध्यापक तथा घर के अन्य बड़े सदस्यों का सहयोग बहुत ही आवश्यक है। बहुत से माता-पिता को यह समस्या होती है कि बच्चों को लिखना कैसे सिखाया जाए? जिस प्रकार बच्चों को पढ़ाने के लिए लगातार अभ्यास कराना पड़ता है, उसी प्रकार लिखने का भी निरन्तर प्रयास कराना आवश्यक है। पढ़ने की तुलना में लिखना ज्यादा कठिन है। ऐसा देखा गया है कि जो जल्दी पढ़ना सीख जाते हैं वे लिखना देर से सीखते हैं। कुछ बच्चों को पढ़ना-लिखना साथ-साथ सिखाया जाता है। बच्चों को लिखना सिखाने के लिए माता-पिता, अध्यापक तथा घर के अन्य बड़े सदस्यों का सहयोग बहुत ही आवश्यक है।

यदि बच्चे ने मेहनत करके लिखा है तो बड़ों को चाहिए कि वह उसे देखें तथा उन्हें पढ़ कर सुनाने के लिए कहें। समान्यत- बच्चे वही लिखते हैं, जो सरल पाते हैं। बच्चे लिखने-पढ़ने में जल्दबाज़ी नहीं करते। कुछ बच्चे लिखना पढ़ना एक साथ सीख जाते हैं। प्रारम्भ में बच्चों को लिखने की शिक्षा माता-पिता तथा घर के अन्य बड़े सदस्यों द्वारा घर पर ही दी जाती है। बाद में जब बच्चा स्कूल जाने लगता है तो यह ज़िम्मेदारी शिक्षकों पर आ जाती है, लेकिन स्कूल जाना प्रारम्भ करने के बाद भी माता-पिता की ज़िम्मेदारी बनी ही रहती है कि बच्चा स्पष्ट व सुंदर लिखे।

शिक्षकों का कहना है कि बच्चों को सर्वप्रथम छपे हुए अलग-अलग वर्णमाला पढ़ना सिखाना चाहिए, जिससे अक्षरों को पढ़ने व पहचानने की क्षमता जागृत हो। आमतौर पर वे बेहद एकाग्र होकर कसकर पैंसिल पकड़ कर लिखते हैं, जिससे उनकी आंखों पर जोर पड़ने की सम्भावना होती है। परिणामस्वरूप शीघ्र ही उसे चश्मा पहनना पड़ता है। माता-पिता को बच्चों की इस आदत पर नियंत्रण प्रारम्भ से ही रखना चाहिए।

आज की पीढ़ी में देखा गया है कि बच्चे काफी कम उम्र में लिखने-पढ़ने के प्रति रुचि दिखाने लगते हैं। विशेषकर दूरदर्शन, रेडियो आदि के प्रभाव से जल्द समझदार हो जाते हैं। उनमें बड़ों को देख कर लिखने की इच्छा जागती है। वे अपना, अपने मित्रों तथा माता-पिता का नाम लिखने का प्रयास करते हैं। माता-पिता या बड़ों को चाहिए कि वे ऐसे मौके का पूरा फायदा उठाएं, बच्चों में सही व सुन्दर लिखने को प्रोत्साहित करें। सीखने की रुचि बच्चों में स्वयं ही होती है। अत- वह बड़ों के कहने को बहुत ही गम्भीरता से लेते हैं, जिससे उनके लिखने की योग्यता विकसित होती है।

बच्चों के टिफिन को ऐसे करें तैयार

बच्चे बहुत मूडी होते हैं। इसलिए इस बात का ख़ास ख़याल रखें कि बच्चों का खाना इस तरह का हो, जिससे उन्हें अधिक से अधिक पौष्टिक तत्व मिल सकें और यह उनकी पसंद का भी होना चाहिये। अक्सर बच्चे फल और सलाद खाने में आनाकानी करते हैं, पर उन्हें विभिन्न शेप, साइज़ और डिज़ाइन में काटकर और कलरफुल लुक देकर खाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

इस प्रकार का खाना रखें

कुछ बच्चे खाने में अधिक समय लगाते हैं। इसलिए खाना स्वादिष्ट, साद व आसानी से खानेवाला होना चाहिए।

कई बार खाना टिफिन में इस तरह से पैक किया हुआ होता है कि बच्चे हाथ गंदे कर लेते हैं या पैकिंग खोल नहीं पाते हैं। इसलिए टिफिन में लंच इस तरह से पैक करें कि बच्चे आसानी से खोल व खा सकें.

सैंडविचेज़, रोल्स और परांठा को काटकर दें, ताकि बच्चे आसानी से खा सकें।

यदि लंच ब्रेक के लिए सेब, तरबूज़, केला आदि दे रही हैं, तो उन्हें छीलकर, बीज निकालकर और स्लाइस में काटकर दें।

टिफिन खरीदते समय ध्यान दें

टिफिन ख़रीदते समय इस बात का ध्यान रखें कि टिफिन ऐसा हो, जिसे बच्चे आसानी से खोल व बंद कर सकें।

बच्चों को टिफिन में फ्राइड फूड न दें। यदि कटलेट, कबाब व पेटिस आदि दे रही हैं, तो वे भी डीप फ्राई किए हुए न हों।

लंच में खाने की अलग-अलग वेराइटी बनाकर दें। उदाहरण के लिए- कभी फ्रूट्स दें, तो कभी सैंडविच, कभी वेज रोल, तो कभी स्टफ्ड परांठा।

बच्चों को टिफिन में फ्रूट्स व वेजीटेबल (ककड़ी, गाजर आदि) सलाद भी दे सकती हैं, लेकिन सलाद में केवल एक ही फल, ककड़ी या गाजर काटकर न दें, बल्कि कलरफुल सलाद बनाकर दें। बच्चों को कलरफुल चीज़ें आकर्षित करती हैं।

ककड़ी, गाजर और फल आदि को शेप कटर से काटकर दें। ये शेप्स देखने में अच्छे लगते हैं और विभिन्न शेप्स में कटी हुई चीज़ों को देखकर बच्चे खुश होकर खा भी लेते हैं।

सलाद को कलरफुल और न्यूट्रिशियस बनाने के लिए उसमें इच्छानुसार काला चना, काबुली चना, कॉर्न, बादाम, किशमिश आदि भी डाल सकती हैं।

ओमेगा3 को 'ब्रेन फूड' कहते हैं, जो मस्तिष्क के विकास में बहुत फ़ायदेमंद होता है। इसलिए उन्हें लंच में वॉलनट, स्ट्रॉबेरी, कीवी फ्रूट, सोयाबीन्स, फूलगोभी, पालक, ब्रोकोली, फ्लैक्ससीड से बनी डिश दें।

मल्टीग्रेन ब्रेड रहेगी अच्छी

व्हाइट ब्रेड (मैदेवाली ब्रेड) स्वास्थ्य को नुक़सान पहुंचाती है, इसलिए उन्हें व्हाइट ब्रेड की जगह मल्टीग्रेन ब्रेड से बने सैंडविचेज़ और रोल्स आदि दें। इन सैंडविचेज़ और रोल्स में सब्ज़ियां, सलाद और चीज़ आदि भरकर उन्हें अधिक हेल्दी और टेस्टी बना सकती हैं।

लंच में यदि डेयरी प्रोडक्ट देना चाहती हैं, तो चीज़ स्टिक्स/क्यूब्स और दही दे सकती हैं। यदि दही दे रही हैं, तो वह ताज़ा हो।

खाने के समय बच्चों को अधिक प्रोटीन की आवश्यकता होती है। इसलिए उन्हें लंच में उबला हुआ अंडा, पीनट बटर, दाल परांठा, काबुली चना, सोया, पनीर, बीन्स आदि से बना खाना दें।हेल्दी लंच के साथ-साथ बच्चों को पानी की बॉटल भी दें।

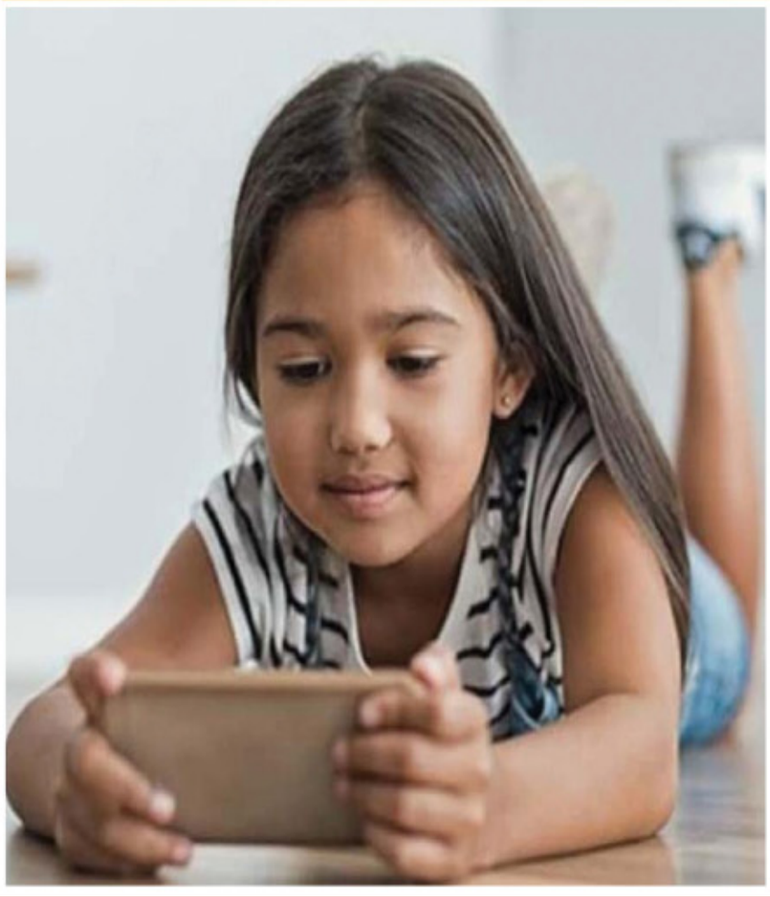

सेल्फी की आदत से बच्चों को दूर रखें

आजकल मोबाइल की पहुंच बच्चों ओर किशोरों तक भी है और वह भी सेल्फी लेने लगे हैं। वहीं इससे लगातार हादसे के मामले सामने आ रहे हैं। ऐसे में बच्चों को इस आदत से दूर रखना अभिभावकों का काम है। वहीं विशेषज्ञों के अनुसार हम एक ऐसे युग में रहते हैं जहां मोबाइल फोन हमारे जीवन में प्रवेश कर चुका है और वास्तविक मानवीय संपर्क लगभग न के बराबर है हालांकि प्रौद्योगिकी ने सभी के लिए जीवन को आसान बना दिया है, लेकिन इसके साथ एक गंभीर समस्या भी है। पिछले दो वर्षों में दुनिया भर में सेल्फी का बुखार बढ़ा है। सेल्फी को दुनिया भर में बड़ी संख्या में मृत्यु दर और महत्वपूर्ण बीमारी से जोड़ा गया है।

इस डिजिटल युग में, अच्छे स्वास्थ्य के लिए तकनीक का इस्तेमाल जरुरत से ज्यादा न हो। हम में से बहुत से लोग ऐसे उपकरणों के गुलाम बन गए हैं जो वास्तव में हमें फ्री टाइम देने और जीवन को बेहतर तरीके से अनुभव करने तथा लोगों के साथ अधिक समय बिताने के लिए बनाये गये थे। जब तक जल्द से जल्द एहतियाती उपाय नहीं किए जाते, यह लत लंबी अवधि में किसी के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक साबित हो सकती है।

मोबाइल फोन के अधिक उपयोग के कारण होने वाली समस्याओं को अभिभावक इस प्रकार रोकें।

बच्चों को सोने से 30 मिनट पहले किसी भी इलेक्ट्रॉनिक गैजेट का उपयोग न करने दें

हर तीन महीने में सात दिन के लिए फेसबुक से दूर रखें।सप्ताह में एक बार, पूरे दिन के लिए सोशल मीडिया का उपयोग न करने दे।अपने मोबाइल फोन का उपयोग केवल तभी करें जब घर से बाहर हों।

अपने मोबाइल टॉक टाइम को दिन में दो घंटे तक सीमित करें। अपने मोबाइल की बैटरी को दिन में एक से अधिक बार रिचार्ज न करें। मोबाइल भी अस्पताल में संक्रमण का एक स्रोत हो सकता है, इसलिए, इसे हर दिन कीटाणुरहित किया जाना चाहिए।

अफगानिस्तान-न्यूजीलैंड टेस्ट: पहले दिन का खेल गीली आउट फिल्ड के कारण बिना टॉस के रद्द

एजेंसी

ग्रेटर नोएडा। अफगानिस्तान और न्यूजीलैंड के बीच आज से यहां शहीद विजय सिंह पथिक स्टेडियम में शुरू हुए एकमात्र टेस्ट मैच का पहला दिन गीली आउट फिल्ड के कारण बिना टॉस हुए रद्द कर दिया गया। सुबह धूप होने के बावजूद पिछले दिनों बारिश के कारण मैदान गीला था, सुबह से अंपायरों ने कई बार मैदान का निरीक्षण किया और अंततः दिन का खेल रद्द कर दिया गया। दोनों अंपायरों, कुमार धर्मसेना और शरफुद्दौला ने उल्लेख किया कि खिलाड़ियों की सुरक्षा मुख्य चिंता थी और मैदान आज खेलने के लिए उपयुक्त नहीं था। उन्होंने कहा कि कल से अगले चार दिनों तक दिन का अतिरिक्त आधे घंटे का खेल होगा और खेल स्थानीय समयानुसार सुबह 9.30 बजे शुरू होगा।

हीरो एशियन चैंपियंस ट्रॉफी: कोरिया ने पाकिस्तान को 2-2 से बराबरी पर रोका

मोकी (चीन)। हन्नान शाहिद के 60वें मिनट में पाकिस्तान के लिए लगातार दो गोल की बदौलत पाकिस्तान ने एशियन चैंपियंस ट्रॉफी के एक मैच में दक्षिण कोरिया के खिलाफ मैच को बराबरी पर रोक दिया। हन्नान शाहिद ने 60वें मिनट में एक के बाद एक गोल करके पाकिस्तान को बराबरी दिलाने और 2-1 की बढ़त दिलाने का शानदार अंतिम प्रयास किया, लेकिन खराब बचाव के कारण कोरिया को अंतिम हूटर बजने से कुछ सेकंड पहले ही मैदानी गोल करने में सफलता मिल गयी। कोरिया के लिए जिवांग ह्यून ने 16वें और सुंगह्युन किम ने 60वें मिनट में गोल किये। युवा स्ट्राइकर हन्नान शाहिद और अपना 100वां मैच खेल रहे अहमद अजाज पाकिस्तानी आक्रमण के केंद्र थे और खेल के शुरुआती मिनटों में उन्होने हमलावर रुख अपनाते हुये कोरियाई सर्किल में हमले किये। पहला क्वार्टर समाप्त होने में केवल पांच सेकंड बचे थे कि हन्नान ने गोल पर एक अच्छा शॉट लगाया मगर कोरियाई गोलकीपर जेहान किम ने उसे रोक दिया। पहले क्वार्टर में पाकिस्तान गेंद पर कब्जे के मामले में हावी रहा, वहीं कोरिया ने बेहतर गेंद कब्जे के साथ दूसरे क्वार्टर में कामचलाऊ प्रदर्शन किया। 16वें मिनट में जिवांग ह्यून के जरिये कोरिया ने अपना खाता खोला। कोरिया की 1-0 की बढ़त ने पाकिस्तान को बैकफुट पर ला दिया।

इंग्लैंड की महिला टीम ने आयरलैंड को एकदिवसीय मैच में 275 रनों से हराया

बेलफास्ट। टैमी ब्यूमोंट (नाबाद 150) की बेहतरीन शतकीय और फ्रेया केम्प (65) रनों की पारियों के बाद केट क्रॉस और लॉरेन फाइलर (तीन-तीन विकेट) की घातक गेंदबाजी के दम पर इंग्लैंड की महिला टीम ने दूसरे एकदिवसीय मुकाबले में आयरलैंड को रिकार्ड 275 रनों से हरा दिया है। 320 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी आयरलैंड की महिला टीम की शुरुआत बेहद खराब रही और उसने पहले ही ओवर में कप्तान गैबी लुईस (शून्य) का विकेट गवां दिया। इसके बाद तो आयरलैंड के विकेट एक के बाद एक ताश के पत्तों की ढह गये। टीम के लिए ऊना रेमंड-होए ने सर्वाधिक 22 रन बनाये। शेष कोई भी बल्लेबाज दहाई आंकड़े तक नहीं पहुंच सका। आलम यह था कि आयरलैंड के नौ बल्लेबाज स्कोर में मात्र 23 रन का इजाफा कर पवेलियन लौट गये। आयरलैंड की पूरी टीम 16.5 ओवर में 45 रन पर सिमट गई। इंग्लैंड की ओर से केट क्रॉस और लॉरेन फाइलर ने तीन-तीन विकेट लिये। फ्रेया केम्प और जॉर्जिया डेविस को दो-दो विकेट मिले।

श्रीलंका ने तीसरे टेस्ट मैच में इंग्लैंड को आठ विकेट हराया

ओवल। पथुम निसंका (नाबाद 127) की शतकीय और उनकी एंजोल मैथ्यू (नाबाद 33) के साथ तीसरे विकेट के लिये करीब 111 रनों की अवजित साझेदारी के दम पर श्रीलंका ने तीसरे टेस्ट मैच के चाथे दिन इंग्लैंड को आठ विकेट से हरा दिया है। श्रीलंका को जीत के लिए 219 रनों के लक्ष्य मिला था। श्रीलंका ने कल के एक विकेट पर 94 के स्कोर से आगे खेलना शुरु किया 20वें ओवर में गस ऐटकिंसन ने कुल मेंडिस (39) को आउट कर पवेलियन भेज दिया। इसके बाद पथुम निसंका ने एंजोल मैथ्यूज ने शानदार खेल का मुजाहिरा करते हुए श्रीलंका को आठ विकेट से जीत दिला दी। इससे पहले तीसरे दिन पथुम निसंका और डी करुणारत्ने ने संभल शुरुआत की लेकिन अभी टीम का स्कोर 39 रन पहुंचा था कि क्रिस वोक्स ने कुरुणारत्ने को अपनी ही गेंद पर कैच आउट कर पवेलियन भेज दिया। तीसरे दिन का खेल समाप्त होने के समय श्रीलंका का स्कोर एक विकेट पर 94 रन था। कुसल मेंडिस और निसंका के बीच दूसरे विकेट के लिए 69 रनों की साझेदारी हुई। गस ऐटकिंसन ने मैच के चौथे दिन कुसल मेंडिस को बशीर के हाथों कैच आउटकरा श्रीलंका को दूसरा झटका दिया। चौथे नंबर पर बल्लेबाजी करने आये एंजोल मैथ्यू ने निसंका के साथ धैर्यपूर्ण पारी खेलते हुए अपनी टीम को जीत दिला दी। निसंका ने (नाबाद 111) और एंजोल मैथ्यू (नाबाद 32) रनों की पारी खेली।

महिला टी20 विश्व कप 2024 के लिए मायर, कैस्पर्क न्यूजीलैंड टीम में शामिल

एजेंसी

वेलिंगटन। न्यूजीलैंड ने संयुक्त अरब अमीरात में आगामी महिला टी20 विश्व कप 2024 के लिए अपनी 15 सदस्यीय टीम में तेज गेंदबाज रोजमेरी मायर और ऑफस्पिनर लेघ कैस्पर्क को शामिल किया है।

इस साल की शुरुआत में मार्च में इंग्लैंड के न्यूजीलैंड दौरे के टी20ई चरण के दौरान मायर को पीठ में चोट लग गई थी, जिससे वह बाद के एकदिवसीय मैचों और फिर जून-जुलाई में वापसी दौरे से बाहर हो गईं।

दूसरी ओर, ऑफ स्पिनर कैस्पर्क ने इंग्लैंड की उस यात्रा के टी20ई चरण में एक साल के बाद न्यूजीलैंड में वापसी की, और वह विश्व कप में टीम के स्पिन रिजर्व को मजबूत करेंगी जो कि उनका चौथा विश्व कप होगा।

इस बीच, सोफी डिवाइन, जो टूर्नामेंट के बाद टी20ई कप्तानी छोड़ देंगी ने कहा, महिलाओं के खेल के

विकास में टी20 विश्व कप एक महत्वपूर्ण माध्यम रहा है और यह सोचना मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि जब से इसकी शुरुआत हुई है तब से मैं इसमें खेल रही हूं। उन्होंने कहा, मैं वास्तव में विश्व स्तरीय टीमों के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करने के एक और अवसर की प्रतीक्षा कर रही हूं जो ट्रॉफी घर ले जाने की होड़ में हैं। मुख्य कोच बेन सॉयर ने कहा, मैं वास्तव में इस टीम से खुश हूं, मुझे लगता है कि ये हमारे सर्वश्रेष्ठ 15 खिलाड़ी हैं जो संभावित विभिन्न परिस्थितियों के अनुकूल ढल जाएंगे।

विश्व कप के लिए रवाना होने से पहले यही टीम 19 से 24 सितंबर के बीच ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीन मैचों की टी20 सीरीज में भी खेलेगी।विश्व कप में न्यूजीलैंड मौजूदा चैंपियन ऑस्ट्रेलिया, भारत, पाकिस्तान और श्रीलंका के साथ ग्रुप ए में है। वे अपने दो अभ्यास मैच दक्षिण अफ्रीका और इंग्लैंड के खिलाफ खेलेंगे और 4 अक्टूबर को भारत के खिलाफ अपने विश्व कप अभियान की शुरुआत करेंगे।

न्यूजीलैंड की टीमः सोफी डिवाइन (कप्तान), सुज़ी बेट्स, एडेन कार्सन, इज़ी गेज़ (विकेटकीपर), मैडी ग्रीन, ब्रुक हॉलिडे, फ्रैन जोनास, लेह कैस्पर्क, जेस केर, मेली केर, रोज़मेरी मायर, मौली पेनफ़ोल्ड, जॉर्जिया प्लिमर, हन्नाह रोवे, ली ताहुहु।

बंगनसन के हैट्रिक की बदौलत म्यंगकन क्रिश्चियन हायर सेकेंडरी स्कूल 63वें सुब्रतो कप जूनियर ब्वॉयज के फाइनल में

एजेंसी

नई दिल्ली। बंगनसन ने एक और शानदार हैट्रिक लगाई जिससे म्यंगकन क्रिश्चियन हायर सेकेंडरी स्कूल, मेघालय ने गवर्नमेंट सेकेंडरी स्कूल, याजाली, अरुणाचल प्रदेश को 7-0 से हराकर 63वें सुब्रतो कप जूनियर ब्वॉयज इंटरनेशनल फुटबॉल टूर्नामेंट के फाइनल में प्रवेश किया। यह मैच यहां तेजस फुटबॉल ग्राउंड में खेला गया। म्यंगकन की टीम अब बुधवार (11 सितंबर) को अंबेडकर स्टेडियम में फाइनल में टी.जी इंग्लिश स्कूल, बिष्णुपुर, मणिपुर से भिड़ेगी, जिसने श्रीलंका स्कूल्स फुटबॉल एसोसिएशन को 1-0 से हराकर फाइनल में जगह बनाई।

म्यंगकन क्रिश्चियन हायर सेकेंडरी स्कूल ने मैच की शुरुआत से ही पूरे मैदान पर अपना दबदबा बनाए रखा। मैच के 21वें मिनट में बंगनसन ने एक शानदार एकल प्रयास से पहला गोल किया, जिससे टीम ने 1-0 की बढ़त बना ली। इसके बाद गोलों की झड़ी लग गई, जब बंगनसन ने 36वें मिनट में दूसरा गोल किया। तीन मिनट बाद, मेबनलमियनित ने एक बेहतरीन काउंटर अटैक से तीसरा गोल किया। एलिसस्टार ने 44वें मिनट में चौथा गोल तब किया जब उन्होंने गोलकीपर को छकाते हुए गेंद को खाली पोस्ट में डाल दिया। बंगनसन ने 46वें मिनट में डिफेंडर से गेंद छीनकर अपना हैट्रिक पूरा किया एलिसस्टार ने अरुणाचल की टीम पर और दबाव डालते हुए 51वें मिनट में अपना दूसरा और टीम का छठा गोल दागा। सब्स्टीट्यूट मेनात्सखेंग ने 65वें मिनट में दो डिफेंडरों और गोलकीपर को छकाते हुए गेंद को फिर से खाली गोल में डालकर टीम को 7-0 की शानदार जीत दिलाई। दूसरे सेमीफाइनल में, हीरोबा के 27वें मिनट के गोल की बदौलत टी.जी इंग्लिश स्कूल, बिष्णुपुर, मणिपुर ने श्रीलंका स्कूल्स फुटबॉल एसोसिएशन को 1-0 से हराकर फाइनल मुकाबले में जगह बनाई। राइट विंगर ने विपक्षी डिफेंस की गलती का फायदा उठाते हुए पहला ही शॉट पोस्ट से टकराकर गोल में डाल दिया।

अमेरिका कप नौकायन : फ्रेंच ओरिएंट एक्सप्रेस यॉट बाहर, आईएनईओएस-ब्रिटानिया बोट शीर्ष पर

एजेंसी

नई दिल्ली। बार्सिलोना में चल रहे अमेरिका कप में दूसरे राउंड-रॉबिन श्रृंखला में रेसिंग के आखिरी दिन के बाद बाहर होने वाली छह उम्मीदों में से फ्रेंच ओरिएंट एक्सप्रेस यॉट पहली थी। अमेरिका कप एक नौकायन प्रतियोगिता है और किसी भी खेल में अभी भी संचालित होने वाली सबसे पुरानी अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता है। बार्सिलोना में खराब मौसम के कारण रेस स्थगित होने के बाद सेमीफाइनल में पहुंचने की संभावना के लिए फ्रांसीसियों को जीत की जरूरत थी, लेकिन उन्हें ब्रिटेन की आईएनईओएस-ब्रिटानिया बोट ने हराया और छह-नौका समूह में दो राउंड रोबिन श्रृंखला में से केवल एक जीत के साथ अंतिम स्थान पर रहने के बाद बाहर हो गए। दिन की दूसरी दौड़ में स्विट्जरलैंड की अलिंगी रेड बुल रेसिंग नौका का सामना करने की तैयारी में कोर्स की सीमाओं से परे जाने के बाद इतालवी लूना रॉसा प्रादा पिरेली को अयोग्य

घोषित कर दिया गया। स्विस को अब सेमीफ़ाइनल में जगह मिल गई है, लेकिन अयोग्यता का मतलब है कि लूना रॉसा ने समूह में शीर्ष पर पहुंचने का मौका गंवा दिया।अन्य रेस का क्वालीफिकेशन पर कोई असर नहीं पड़ा और टीम एमिरेट्स-न्यूजीलैंड ने एनवाईसी अमेरिका मैजिक को हरा दिया।

कुंवर ग्लोबल स्कूल ओवर आल चैंपियन, अकादमी श्रेणी में लखनऊ ताइक्कांडो अव्वल

एजेंसी

लखनऊ। कुंवर ग्लोबल स्कूल ने लखनऊ ओपन इंटर स्कूल ताइक्कांडो चैंपियनशिप में 108 अंक के साथ ओवरऑल चैंपियनशिप ट्रॉफी अपने नाम कर ली। दूसरी ओर क्लब और अकादमी श्रेणी में लखनऊ ताइक्कांडो अकादमी 182 अंक के साथ ओवरऑल विजेता बनी।लखनऊ जिला ताइक्कांडो एसोसिएशन के तत्वावधान में सनराइज ताइक्कांडो अकादमी द्वारा राजाजीपुरम मिनी स्टेडियम में रविवार को आयोजित चैंपियनशिप में कुंवर ग्लोबल स्कूल की टीम 108 अंक के साथ पहले स्थान पर रही। इस श्रेणी में सेंट एंजनीज स्कूल 72 अंक के साथ दूसरे व सिद्धांत वर्ल्ड स्कूल 69 अंक के साथ तीसरे स्थान पर रहा। क्लब व अकादमी श्रेणी में लखनऊ ताइक्कांडो अकादमी 182 अंक के साथ पहले स्थान पर रही। सनराइज ताइक्कांडो अकादमी 159 अंक के साथ दूसरे स्थान पर रही जबकि लखनऊ ताइक्कांडो क्लब को 123 अंक के साथ तीसरे स्थान से संतोष करना पड़ा। विशेष पुरस्कारों में एक्टिव

पार्टिसिपेशन अवार्ड सेंट एंथोनी पब्लिक स्कूल व बेस्ट डिस्पिलिन्ड टीम अवार्ड उत्कर्ष श्रीवास्तव पब्लिक स्कूल को मिला।

चैंपियनशिप के समापन व पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश ओलंपिक संघ के कोषाध्यक्ष डा.सैयद रफत जुबैर रिजवी एवं अति विशिष्ट अतिथि उत्तर प्रदेश ताइक्कांडो एसोसिएशन के अध्यक्ष शैलेश कुमार शैलू ने पदक विजेताओं को सम्मानित किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के तौर पर पूर्व पार्षद शिवपाल सांवरिया व गोमती हेल्थी न्यूट्रीएंट्स प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक राजकुमार बत्रा की भी गरिमामयी मौजूदगी रही। समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए उत्तर प्रदेश ताइक्कांडो एसोसिएशन व लखनऊ जिला ताइक्कांडो एसोसिएशन के सचिव राजकुमार ने बताया कि इस चैंपियनशिप में लखनऊ के 50 क्लब/स्कूल/अकादमी के 700 से अधिक खिलाड़ियों ने प्रतिभाग किया। इस अवसर पर लखनऊ ताइक्कांडो संघ के कोषाध्यक्ष मोहित कुमार व अध्यक्ष आनंद मणि जुगरान, आयोजन समिति के चेयरमैन मुख्तार अहमद, आयोजन अध्यक्ष मोहसिन खान व आयोजन सचिव बिलाल खान सहित अन्य मौजूद थे।

यूएस ओपन से जल्दी बाहर होने के बाद डेविस कप के लिए तैयार कार्लोस अल्कराज

एजेंसी

मैड्रिड। स्पेन के स्टार टेनिस खिलाड़ी कार्लोस अल्कराज इस सप्ताह के अंत में डेविस कप के ग्रुप चरण में स्पेन का नेतृत्व करने के लिए तैयार हैं। स्पेन का कठिन ग्रुप में ऑस्ट्रेलिया, चेक गणराज्य और फ्रांस से मुकाबला होगा, जिसके मैच वालेंसिया में खेले जाएंगे।

एक प्रेस कांफ्रेंस में, अल्कराज से यूएस ओपन में दूसरे दौर में निराशाजनक हार के बाद उनकी फिटनेस के बारे में पूछा गया। उन्होंने स्वीकार किया कि, न्यूयॉर्क में, वह उस स्तर पर खेलने में कामयाब नहीं हुए जो उन्हें पसंद था। उन्होंने कहा, उस स्तर पर प्रदर्शन करना बहुत मुश्किल है जो आप हर दिन चाहते हैं, और आपको करना होगा चीजें जैसी

भी आएं उन्हें स्वीकार करने के लिए तैयार रहें। अल्काराज़ ने कहा कि प्रशिक्षण में कमी और बहुत तीव्र गर्मी के कारण बाद उनमें तैयारी की कमी थी, उन्होंने जोर देकर कहा कि हालंकि अब वह घर पर डेविस कप खेलने के लिए अच्छा और प्रेरित महसूस कर रहे हैं। उन्होंने कहा, मानसिक रूप से मैं सुधार जारी रखने के लिए बहुत उत्सुक और प्रेरित हूं, और शारीरिक रूप से मैंने डेविस कप और जो आने वाला है उसका सामना करने के लिए न्यूयॉर्क में हारने के बाद से अच्छा काम किया है। अल्काराज ने खुलासा किया कि बोटिक वैन डे ज़ैंडस्चुल्प से यूएस ओपन में हार के बाद, वह अन्य रुचियों के साथ समय बिता रहे थे। उन्होंने कहा, मेरे पास अपने दिमाग को शांत करने के लिए कुछ दिन थे। लेकिन हमने सोचा कि सबसे अच्छी बात प्रशिक्षण पर वापस जाना और शारीरिक रूप से फिट होना है।

अफगानिस्तान के खिलाफ एकदिनी श्रृंखला के लिए लुंगी एनगिडी की दक्षिण अफ्रीकी टीम में वापसी

एजेंसी

जोहानसबर्ग। जेसन स्मिथ, नकाबा पीटर और एमडिले सिमलेन को संयुक्त अरब अमीरात में अफगानिस्तान और आयरलैंड के खिलाफ आगामी श्रृंखला के लिए पहली बार दक्षिण अफ्रीका की एकदिवसीय टीम में शामिल किया गया है। दक्षिण अफ्रीका को 18 सितंबर से शारजाह मे अफगानिस्तान के खिलाफ तीन वनडे मैच खेलने हैं। इसके बाद 27 सितंबर से अबू धाबी में आयरलैंड के खिलाफ दो टी-20 और तीन वनडे मैच खेले जाएंगे।

लेगस्पिनर पीटर और ऑलराउंडर जेसन ने इस साल की शुरुआत में क्रमशः मई और अगस्त 2024 में वेस्टइंडीज के खिलाफ अपना टी20ई डेब्यू किया था। पीटर ने दो मैच खेले हैं और तीन विकेट लिए हैं, जबकि जेसन ने केवल एक मैच खेला है और छह रन बनाए हैं। हालाँकि, सिमेलेन के लिए यह अंतरराष्ट्रीय टीम में उनका पहला कॉल-अप है। 21 वर्षीय ऑलराउंडर की पहचान एक उच्च क्षमता वाली प्रतिभा के रूप में की गई है और वह अगस्त में हाल ही में संपन्न जिम्बाब्वे के दक्षिण अफ्रीका इमर्जिंग टूर का हिस्सा थे। उन्होंने एक दिवसीय श्रृंखला में श्रीलंका ए के खिलाफ दक्षिण अफ्रीका ए का भी प्रतिनिधित्व किया था। इस बीच, तेज गेंदबाज लुंगी एनगिडी दाहिनी पिंडली में लगी चोट से उबर गए हैं और उन्हें तीनों टीमों में शामिल किया गया है। वह अगस्त में वेस्टइंडीज के खिलाफ तीन मैचों की टी20 सीरीज में शामिल नहीं हुए थे।

प्रो कबड्डी लीग सीजन 11 का कार्यक्रम घोषित, तेलुगु टाइटन्स बनाम बेंगलुरु बुल्स मुकाबले से होगा आगाज

एजेंसी

मुंबई। प्रो कबड्डी लीग सीजन 11 की शुरुआत 18 अक्टूबर को हैदराबाद में तेलुगु टाइटन्स और बेंगलुरु बुल्स के बीच होने वाले मुक़ाबले के साथ होगा। लीग के आयोजक मशाल स्पोर्ट्स ने पीकेएल के ग्यारहवें सीजन के कार्यक्रम की घोषणा की। इस मैच में घरेलू टीम तेलुगु टाइटन्स और उनके स्टार रेडर पवन सहरावत का मुकाबला बेंगलुरु बुल्स के लिए वापसी कर रहे लीग के सबसे सफल खिलाड़ी परदीप नरवाल से होगा।

पहले दिन रात के दूसरे मैच में यू मुंबा के सुनील कुमार जो की प्लेयर्स ऑक्शन में 1.015 करोड़ रुपये में खरीदे जाने के बाद पीकेएल इतिहास के सबसे महंगे भारतीय डिफेंडर बनने के बाद, नवीन कुमार की आक्रामक क्षमता से भिड़ेंगे, जो दबंग दिल्ली के.सी. के स्टार रेडर्स में से एक हैं। इस बार, पीकेएल तीन शहरों के प्रारूप में लौटेगा। 2024 के

मौजूदा संस्करण का पहला चरण 18 अक्टूबर से 9 नवंबर तक हैदराबाद के गाचीबोवली इंडोर स्टेडियम में आयोजित होगा। इसके बाद यह 10 नवंबर से 01 दिसंबर तक दूसरे चरण के लिए नोएडा इंडोर स्टेडियम में स्थानांतरित हो जाएगा। तीसरे चरण की मेजबानी 3 दिसंबर से 24 दिसंबर तक पुणे के बालेवाड़ी बैडमिंटन स्टेडियम को करना है। प्लेऑफ़ के लिए शेड्यूल और आयोजन स्थान की घोषणा बाद में की जाएगी। पीकेएल सीजन 11 के कार्यक्रम पर अपने विचार रखते हुए मशाल स्पोर्ट्स में स्पोर्ट्स लीग के प्रमुख और प्रोकबड्डी लीग के लीग कमिश्नर अनुपम गोस्वामी ने कहा, ÷प्रत्येक पीकेएल सीजन का मैच शेड्यूल लाखों कबड्डी प्रशंसकों के लिए प्रतिस्पर्धात्मक प्रासंगिकता और जुड़ाव बनाने और उसे आगे बढ़ाने का एक बहुत ही सोच-समझकर और श्रमसाध्य प्रयास है, जो अपनी-अपनी टीमों के साथ-साथ समग्र लीग के लिए उत्साहित हैं। हमें यकीन है कि पीकेएल ङ्गढ्ढ मैच शेड्यूल भी हमारे प्रशंसकों के जुनून और उम्मीदों को जगाएगा और हमारी बारह टीमों को पीकेएल ङ्गढ्ढ के लिए उनकी संबंधित रणनीतियों और योजनाओं के लिए मार्गदर्शन भी देगा।

प्रो कबड्डी लीग सीजन 11 की नीलामी 15-16 अगस्त, 2024 को मुंबई में हुई थी, जिसमें लीग के इतिहास में एक नया रिकॉर्ड बना था। इस साल आठ खिलाड़ी 01 करोड़ रुपये से अधिक में बिके। मशाल स्पोर्ट्स और डिज्नी स्टार ने पीकेएल को भारत में सबसे सफल खेल लीग में से एक बनाया है। एमेच्योर कबड्डी फेडरेशन ऑफ इंडिया (चस्नढ्ढ) के साथ अपने स्वीकृत समझौते के तहत मशाल द्वारा आयोजित और संचालित, प्रो कबड्डी लीग ने भारत के स्वदेशी खेल कबड्डी और उसके एथलीटों की छवि को राष्ट्रीय और साथ ही दुनिया भर में बदल दिया है। पीकेएल में अपने कई खिलाड़ियों की भागीदारी देखने के बाद, कई कबड्डी खेलने वाले देशों ने अपने घरेलू कबड्डी प्रोग्राम को भी मजबूत किया है। प्रो कबड्डी लीग सीजन 11 का सीधा प्रसारण स्टार स्पोर्ट्स नेटवर्क पर और डिज्नी+ हॉटस्टार पर स्ट्रीम किया जाएगा।

नीता अंबानी ने पेरिस पैरालंपिक में शानदार प्रदर्शन के लिए भारतीय पैरा एथलीटों को सराहा

एजेंसी

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) की सदस्य और रिलायंस फाउंडेशन की संस्थापक अध्यक्ष नीता अंबानी ने पेरिस पैरालंपिक में भारतीय एथलीटों के रिकॉर्ड तोड़ प्रदर्शन की सराहना की है। उन्होंने भारतीय एथलीटों को बधाई देते हुए कहा कि आपने न केवल रिकॉर्ड तोड़े हैं, बल्कि बाधाओं को भी तोड़ा है।

रिलायंस फाउंडेशन के आधिकारिक सोशल मीडिया अकाउंट एक्स पर जारी बयान में नीता अंबानी ने कहा कि पेरिस पैरालंपिक 2024 के समापन के साथ मैं भारत के असाधारण एथलीटों के लिए बहुत गर्व महसूस कर रही हूं। रिकॉर्ड 7 स्वर्ण सहित 29 पदकों की अब तक की सर्वाधिक संख्या और हमारी अब तक की सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग के साथ आपने न केवल रिकॉर्ड तोड़े हैं,

बल्कि बाधाओं को भी तोड़ा है। आपके धैर्य, प्रतिभा और उपलब्धियों के कारण ही भारत आज ऊंचाई पर खड़ा है। नीता अंबानी ने आगे बधाई देते हुए कहा कि आपने पूरे देश को जश्न में एकजुट किया है और लाखों लोगों को बड़े सपने देखने के लिए प्रेरित किया है। मैं आपकी हर यात्रा को सलाम करती हूं और आने वाले वर्षों में आपके और भी अधिक गौरव की कामना करती हूं। बहुत-बहुत बधाई। जय हिंद।

ऐतिहासिक रहा प्रदर्शन

पेरिस पैरालंपिक में भारत ने ऐतिहासिक प्रदर्शन किया है। अबकी बार भारत ने रिकॉर्ड 29 पदक हासिल किए। इसमें 7 स्वर्ण, 9 रजत और 13 कांस्य पदक हैं। पदक तालिका में भारत 18वें स्थान पर रहा। इस शानदार प्रदर्शन से पिछले सारे रिकॉर्ड्स ध्वस्त हो गए। इससे पहले टोक्यो पैरालंपिक में भारत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन था। टोक्यो पैरालंपिक 2020 में भारत ने 5 स्वर्ण, 8 रजत और 6 कांस्य पदक समेत कुल 19 पदक जीते थे। भारत ने इस बार पैरालिंपिक में भाग लेने के लिए 84 एथलीटों का अपना अब तक का सबसे बड़ा दल भेजा था।

एशियन चैंपियंस ट्रॉफी : भारतीय हॉकी टीम ने जापान को 5-1 से हराया

एजेंसी

हुलुनबुइर (चीन)। मौजूदा चैंपियन भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने यहां एशियन चैंपियंस ट्रॉफी 2024 में अपने दूसरे लीग मैच में जापान को 5-1 से हरा दिया। मैच में भारत के लिए सुखजीत सिंह (2 मिनट, 60 मिनट) ने दो गोल किया, जबकि अभिषेक (3 मिनट), संजय (17 मिनट) और उत्तम सिंह (54 मिनट) ने एक-एक गोल किया। जापान की ओर से एकमात्र गोल काजुमासा मात्सुमोतो (41 मिनट) ने किया। इससे पहले रविवार को अपने अभियान की शुरुआत करते हुए भारतीय टीम ने पहले मैच में मेजबान चीन को 3-0 से हराया था। अब भारत का अगला मुकाबला बुधवार को मलेशिया से होगा। खेले गए दूसरे मैच में भारतीय टीम ने शानदार शुरुआत की। दूसरे मिनट में ही सुखजीत सिंह के शानदार गोल से भारत ने बढ़त हासिल कर ली। इसके अगले मिनट में अभिषेक ने जापानी खिलाड़ियों को चकमा देते हुए गोल कर भारतीय टीम को 2-0 की

बढ़त दिला दी। भारत का दूसरे क्वार्टर में भी आक्रमण जारी रहा। संजय ने 17वें मिनट में एक शानदार पेनल्टी कॉर्नर को गोल में बदला। 3-0 की बढ़त के साथ भारत अच्छी स्थिति में आ गया। इस दौरान जापानी खिलाड़ी खेल में वापसी करने की कोशिश करते रहे लेकिन गोल नहीं कर पाए। हॉफ टाइम तक भारतीय टीम 3-0 से आगे रही। तीसरे क्वार्टर में जापान के खिलाड़ियों ने अच्छा प्रदर्शन किया, जिसके परिणामस्वरूप 41वें मिनट में काजुमासा मात्सुमोतो ने एक गोल किया। इससे कुछ मिनट पहले ही भारत के लिए एक शानदार मौका आया था लेकिन विवेक सागर चौथा गोल करने से चूक गए। हालांकि चौथे क्वार्टर में भारत के लिए चौथा गोल भी आ गया। उत्तम सिंह ने 54वें मिनट में एक बेहतरीन गोल किया। इससे भारत 4-1 से आगे हो गया। इसके बाद खेल के अंतिम क्षण में भारत के लिए एक और गोल आया। सुखजीत ने 60वें मिनट में एक और गोल करके मैच को 5-1 से जीत के साथ शानदार तरीके से समाप्त किया।

आलिया भट्ट

की 'जिगरा' का 31 साल पुराना कनेक्शन, महेश भट्ट की इस फिल्म से जुड़ी है कहानी!

आलिया भट्ट की अपकमिंग फिल्म 'जिगरा' का जब पोस्टर रिलीज किया गया था तो उसमें आलिया के इंटेस लुक ने हर किसी को अट्रैक्ट किया था. अब फिल्म का ट्रेलर भी रिलीज कर दिया गया है, जिससे लोगों की एक्साइटमेंट बहुत ज्यादा बढ़ गई है. जिगरा का ट्रेलर कल यानी 8 सितंबर को रिलीज किया गया है. जिसके बाद हर कोई इसकी तारीफ कर रहा है. फिल्म में आलिया को अलग अवतार में देखा जा रहा है जिसे लोगों ने खूब पसंद किया है. फिल्म की कहानी भाई-बहन के बॉन्ड को दिखाती है, फिल्म में आलिया के भाई का रोल वेदांग रैना निभा रहे हैं.

'जिगरा' एक एक्शन थ्रिलर है, जिसे वसन बाली ने डायरेक्ट किया है. फिल्म के कॉन्सेप्ट को काफी सराहना मिल रही है. हाल ही में इस फिल्म से जुड़ा एक बड़ा खुलासा हुआ है. बॉलीवुड हंगामा के एक सूत्र के हवाले से खबर आई है, वसन बाली की इस फिल्म की कहानी श्रीदेवी की फिल्म 'गुमराह' से ली गई है. हालांकि, फिल्म में काफी बदलाव भी किए गए हैं, लेकिन फिल्म का प्लॉट सेम है. साल 1993 में आई फिल्म 'गुमराह' में श्रीदेवी, संजय दत्त और राहुल रॉय ने मुख्य भूमिका निभाई थी.

एक जैसी है 'गुमराह' और 'जिगरा' की कहानी ?

'गुमराह' एक लव एंगल के साथ बनाई गई है. ये कहानी उस लड़के की है जो एक लड़की से प्यार करता है और किन्हीं वजहों से वो लड़की फॉरेन के जेल में कैद हो जाती है. आगे फिल्म में ये दिखाया गया है कि वो किस तरह से उसे जेल से निकालने की कोशिश करता है. 'गुमराह' का रीमेक बनाने के लिए फिल्म मेकर्स ने इसकी कहानी में अहम बदलाव किया, जिसमें सबसे पहला बदलाव ये है कि 'जिगरा' में एक्ट्रेस अपने भाई को बचाने की कोशिशों में लगी है और दूसरा बड़ा बदलाव ये किया गया कि ये लव एंगल नहीं बल्कि भाई-बहन की कहानी है. फिल्म के ट्रेलर में आलिया जबरदस्त एक्शन करते नजर आ रही हैं. फिल्म में आदित्य नंदा, मनोज पाहवा और राहुल रविंद्रन जैसे एक्टर्स भी काम कर रहे हैं.

धर्मा प्रोडक्शन के बैनर तले बनी थी फिल्म

धर्मा प्रोडक्शन के बैनर तले बने इस फिल्म के लिए 'गुमराह' के राइट्स लेना कोई मुश्किल का काम नहीं था, क्योंकि गुमराह भी धर्मा प्रोडक्शन के बैनर तले बनाई गई थी. 'गुमराह' को आलिया भट्ट के पिता महेश भट्ट ने डायरेक्ट किया था और अब आलिया इस के रीमेक में लीड एक्ट्रेस के तौर पर हैं. इस फिल्म को आलिया भट्ट और उनकी बहन शाहीन भट्ट का प्रोडक्शन हाउस इटरनल सनशाइन प्रोडक्शन प्रोड्यूस कर रहा है.

इससे पहले इसी प्रोडक्शन हाउस ने डार्लिंग को प्रोड्यूस किया था. आलिया भट्ट की 'जिगरा' इस साल आने वाली उनकी एकलौती फिल्म है, जो कि 11 अक्टूबर को रिलीज होगी. फिलहाल आलिया ङ्कक्रत्र स्पाई यूनिवर्स की फिल्म 'अल्फा' की शूटिंग कर रही हैं, जिसमें बॉबी देओल और शरवरी वाघ भी नजर आएंगे. 'अल्फा' के अलावा अगले साल आलिया संजय लीला भंसाली की 'लव एंड वॉर' में भी नजर आएंगी. इस फिल्म में उनके साथ रणबीर कपूर और विकी कौशल होंगे.

श्रद्धा कपूर

की 'स्त्री 2' के आगे 'पठान' ने टेके घुटने, इन 3 साउथ फिल्मों को भी चटाई धूल

श्रद्धा कपूर और राजकुमार राव की Stree 2 का आज 26वां दिन है. 15 अगस्त को फिल्म ने सिनेमाघरों में दस्तक दी थी. इतने दिन बाद भी स्त्री की आंधी रुकने का नाम नहीं ले रही है. फिल्म की कमाई में पिछले दिनों के मुकाबले बढ़ोतरी हुई है. पहले ही दिन से 'स्त्री 2' बड़े-बड़े रिकॉर्ड्स तोड़ते हुए आ रही है. यह सिलसिला लगातार जारी है. इसी बीच 25वें दिन की कमाई के आंकड़े सामने आ गए हैं. इसके मुताबिक, 'स्त्री 2' ने शाहरुख खान की 'पठान' को धूल चटा दी है. वहीं तीन बड़ी साउथ फिल्मों को पीछे छोड़ते हुए 25वें दिन सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म बन गई है.

'स्त्री 2' का कुल कलेक्शन कितना है ?

श्रद्धा कपूर और राजकुमार राव की फिल्म चौथे रविवार भी खूब धूम मचा रही है. फिल्म ने 25वें दिन 11 करोड़ रुपये का कारोबार कर लिया है. इसी के साथ फिल्म ने भारत से कुल 527.25 करोड़ की कमाई कर ली है. हालांकि चौथे रविवार की कमाई बीते दो दिनों के मुकाबले काफी ज्यादा है. 24वें दिन फिल्म ने 8.5 करोड़ का कलेक्शन किया था. वहीं 23वें दिन 4.5 करोड़ की कमाई हुई थी. हालांकि, 25 दिनों में फिल्म दुनियाभर से 751 करोड़ कमा चुकी है. ओवरसीज कलेक्शन 121.75 करोड़ पहुंच चुका है. वहीं इंडिया का ग्रॉस कलेक्शन 629.25 करोड़ रुपये है. 50 करोड़ के बजट में बनी 'स्त्री 2' कई गुना ज्यादा पैसे छाप चुकी है.

'स्त्री 2' ने 25वें दिन तोड़ा शाहरुख की 'पठान' का रिकॉर्ड

दरअसल श्रद्धा कपूर और राजकुमार राव की Stree 2 25वें दिन सबसे ज्यादा कमाई करने वाली हिंदी फिल्म बन गई है. 10.75 करोड़ की कमाई करते हुए पहले पायदान पर आ गई है. जबकि शाहरुख खान की 'पठान' ने 25वें दिन पर सिर्फ 3.25 करोड़ का कारोबार किया था. इस लिस्ट में यह फिल्म छठे नंबर पर है. हालांकि जिस मामले में 'स्त्री 2' ने 'पठान' को धूल चटाई है, वो है हिंदी नेट कलेक्शन. 25 दिनों में जहां श्रद्धा कपूर की फिल्म 527.25 करोड़ छाप चुकी है. तो वहीं 'पठान' 524.53 करोड़ ही कमा पाई थी. इसी के साथ 'जवान' को भी पीछे छोड़ चुकी है. फिल्म ने 25वें दिन 9.12 करोड़ कमाए थे.

वो प्रोड्यूसर, कमाई के मामले में जिसका शाहरुख, सलमान और आमिर खान मिलकर भी मुकाबला नहीं कर पाते!

अगर बात पूछी जाए कि बॉलीवुड हस्तियों में सबसे ज्यादा प्रॉपर्टी किसके पास है, तो हर किसी का जवाब शाहरुख खान या सलमान खान आएगा. लेकिन ऐसा है नहीं, इस फिल्मी दुनिया में एक ऐसे प्रोड्यूसर हैं जिन्होंने रईसी के मामले में हर किसी को पछाड़ दिया है. यहां तक कि तीनों खान- सलमान, शाहरुख और आमिर की पूरी संपत्ति को मिला भी दिया जाए तब भी इस फिल्म प्रोड्यूसर की नेटवर्थ से कम ही होगा. हम बात कर रहे हैं 'उरी- द सर्जिकल स्ट्राइक', 'केदारनाथ' और भी कई फिल्मों को प्रोड्यूस कर चुके रॉनी स्क्रूवाला की. रॉनी RSVP फिल्म प्रोडक्शन कंपनी के फाउंडर हैं.रॉनी का जन्म मुंबई में हुआ और वहां के स्कूल और कॉलेज में उन्होंने अपनी पढ़ाई पूरी की. स्कूल के दौर से ही रॉनी को थिएटर में दिलचस्पी थी, जिसकी वजह से उन्होंने बॉम्बे थिएटर में प्ले करना शुरू कर दिया. उन्होंने 'शेक्सपियर के ओथेलो' और 'डेथ ऑफ ए सेल्समैन' जैसे कई शानदार नाटकों में पार्टिसिपेट किया. साल 1990 में रॉनी ने 37 हजार रुपए का इन्वेस्ट करके यूटीवी नाम का अपना पहला टेलीविजन प्रोडक्शन हाउस शुरू किया. धीरे-धीरे करके उन्होंने इसे एक मीडिया ग्रुप में बदल दिया, जिसमें फिल्म प्रोडक्शन स्टूडियो यूटीवी मोशन पिक्चर्स भी शामिल था.

बनाई गई कई कमाल की फिल्म

यूटीवी प्रोडक्शन हाउस के बैनर तले कई फिल्में बनाई गई, जिसमें 'स्वदेश', 'रंग दे बसंती', 'बर्फी' और 'हैदर' का नाम शामिल है. बाद में साल 2012 में रॉनी ने इस प्रोडक्शन को वॉल्ट डिज्नी को 3.7 हजार करोड़ रुपए में बेच दिया. यूटीवी को बेचने के बाद रॉनी ने RSVP फिल्म प्रोडक्शन कंपनी को लॉन्च किया, जिसके बैनर तले 'रात अकेली है', 'सोनचिरैया', 'द स्काई इज पिंक', 'सैम बहादुर', 'तेजस' जैसी बेहतरीन फिल्में बनी. इनमें से ज्यादातर फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छी कमाई की है.

कितनी है रॉनी स्क्रूवाला की नेट वर्थ ?

हाल ही में आई हुरुन इंडिया रिच लिस्ट में रॉनी स्क्रूवाला की नेटवर्थ बताई गई, जो कि 13 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा की है. वहीं अगर इसकी तुलना तीनों खान से की जाए तो इसी लिस्ट के मुताबिक, शाहरुख खान की नेटवर्थ 7,300 करोड़ रुपए है, सलमान खान की 2,900 करोड़ रुपए और एक दूसरी रिपोर्ट के मुताबिक, आमिर खान की नेट वर्थ 1800 करोड़ रुपए से ज्यादा की है.

बेटी के जन्म से पहले वो 3 मौके, जब-जब Deepika Padukone ने बड़े पर्दे पर निभाया मां का किरदार

बॉलीवुड के फेमस कपल दीपिका पादुकोण और रणवीर सिंह के घर गणेश चतुर्थी के अगले दिन 8 सितंबर को लक्ष्मी का आगमन हुआ. इस पल का इंतजार कपल को काफी वक्त से था. दोनों की शादी साल 2018 में हुई थी. दीपिका ने इस साल के शुरुआत में ही लोगों के साथ इस खुशखबरी को शेयर किया था. कुछ दिन पहले इस कपल को सिद्धिविनायक मंदिर में दर्शन करते कैप्चर किया गया था. पेरेंट्स बनने के कुछ वक्त बाद दोनों ने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए अपना पहला रिएक्शन दिया. असल जिंदगी से हटकर अगर फिल्मों को बात करें तो दीपिका ने कई बार मां का रोल निभाया है.एक्शन, रोमांस, इमोशनल और न जाने कितनी तरह के किरदारों को दीपिका ने अपनी फिल्मों में पोट्रे किया है. उन्हें बॉलीवुड की उम्दा कलाकार के तौर पर जाना जाता है. प्रोफेशनल लाइफ की बात करें तो दीपिका ने हमेशा ही चैलेंजिंग रोल निभाए हैं, जिसके लिए उन्हें सराहना मिली है. फिल्मी दुनिया में दीपिका कई बार मां के किरदार में नजर आई हैं और लोगों ने उन्हें खूब पसंद भी किया है.

वो फिल्में जिसमें दीपिका ने निभाया मां का किरदार

'जवान'

साल 2023 में शाहरुख खान की 'जवान' आई, जो कि एक सुपरहिट फिल्म रही. इस फिल्म में दीपिका ने कैमियो किया, हालांकि उनका स्क्रीन टाइम कम था लेकिन उनके दमदार परफॉर्मेंस ने लोगों के दिलों में खास जगह बना ली. फिल्म में दीपिका ने ऐश्वर्या राठौर का रोल निभाया है, जो कि शाहरुख खान की मां का किरदार है. फिल्म में शाहरुख खान डबल रोल में नजर आए थे.

'कल्कि 2898 एडी'

इस साल रिलीज हुई दीपिका, प्रभास, अमिताभ बच्चन की स्टारर 'कल्कि 2898 एडी' ने काफी तारीफें बटोरी हैं. नाग अश्विन की डायरेक्ट की हुई एक्शन फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छी कमाई की थी. फिल्म में दीपिका को बेबी बंप के साथ देखा गया. कहा जा रहा है कि फिल्म की कहानी दीपिका के इस अजन्मे बच्चे के साथ आगे बढ़ेगी. फिल्म में दिशा पाटनी और कमल हसन ने भी मुख्य भूमिका निभाई है.

'बाजीराव मस्तानी'

साल 2015 में आई 'बाजीराव मस्तानी' में भी दीपिका ने 6 साल के बच्चे की मां का रोल निभाया है. फिल्म में दीपिका मस्तानी बाई और रणवीर सिंह पेशवा बाजीराव के किरदार में थे. इसे संजय लीला भंसाली ने डायरेक्ट किया था. बाजीराव मस्तानी में दीपिका ने स्ट्रॉन्ग मदरहुड दिखाया है, उन्होंने बच्चे को गोद में लेकर तलवारबाजी भी की है. फिल्म में प्रियंका चोपड़ा बाजीराव की पहली पत्नी काशीबाई के किरदार में दिखी.